# जरा ध्यानसे मुझे सुनिए तो?

-मुनिश्री चंन्द्रशेखरविजयजी

www.yugpradhan.com

१८५

कमल प्रकाशन ट्रस्ट

सामाजिक, राजनैतिक और धार्मिक क्षेत्रो में प्रविष्ट स्वच्छंदतामूलक अराजकता की कडी आलोचना करनेवाले, 'मुक्तिदूत' मासिक में प्रकाशित चिन्तनों का—विचारों का संग्रह.....

www.yugpradhan.com

# जरा ध्यान से मुझे सुनिए तो !

मुनिश्री चन्द्रशेखरविजयजी

१८५

कमल प्रकाशन ट्रस्ट

प्रकाशक

**कमल प्रकाशन ट्रस्ट**

जीवतलाल प्रतापशी संस्कृतिभवन,
२७७७, निशापोल,
झवेरीवाड, रिलीफरोड, अमदावाद-१
फोन : ३३५७२३
C/o ३८०१४३

**लेखक-परिचय**

सिद्धान्तमहोदधि, सच्चारित्रचूडामणि
स्व० पूज्यपाद आ० भगवन्त श्रीमद्विजय
प्रेमसूरीश्वरजी महाराजा साहब के विनेय
मुनिश्री चन्द्रशेखरविजयजी

www.yugpradhan.com

**प्रथम हिन्दी संस्करण**

नकल : १०००
विक्रम संवत २०४०
दि. १५-१२-१९८३

अनुवादक :
**श्री कान्तिभाई याज्ञिक**

**मूल्य : रु. ४**

**मुद्रक :**
पूजा प्रिन्टर्स एण्ड ट्रेडर्स
महेंदी कूवा चार रस्ता,
नारायण निवास,
शाहपुर, अहमदाबाद-१

# प्रकाशकीय

कमल प्रकाशन ट्रस्ट की ओर से, पूर्वप्रकाशित जाम्बूवाला ग्रन्थमाला की १५ वीं पुस्तिका को, संशोधित कर, स्वतंत्र पुस्तिका के रूप में हम प्रकाशित कर रहे हैं।

इस पुस्तिका के लेखकश्रीने धर्म, राजनीति, समाज, संस्कृति, विकृति आदि अनेकविध क्षेत्रों का समावेश करनेवाले विचारों को, कटु–मिष्ट भाषा में यहां पूरी निर्भयता और पूरी विशदता के साथ व्यक्त किये हैं।

'आज' नहीं तो एक 'आगामी कल' ऐसी जरूर उदीयमान होगी, जब कि बहुसंख्यक लोगों को, इन विचारों के प्रति ध्यान देना अनिवार्य होगा। उनका अंतःकरण प्रमाणित करेगा कि–'वर्षों पूर्व प्रबोधित ये बातें कितनी सही प्रमाणित हुई!'

खैर, कमल प्रकाशन अपना कर्तव्य निभा रहा है। अन्यथा समय समय बलवान ही है।

अन्त में, पाठकों से हमारी नम्र प्रार्थना है कि, आप लोग इस पुस्तिका को बड़ी तादाद में खरीदकर, शिक्षित एवं शासक समूहों में चारों ओर वितरित करें, ता कि विलम्ब होने से पूर्व ही सब सावधान हो जायें।

www.vagpradhan.com

—कमल प्रकाशन ट्रस्ट


| क्रम | विषय | पृष्ठ |
|---|---|---|
| १ | अरे, अर्धधर्मों के संतपुरुष ! | १ |
| २ | (स्वयं को दुःखी समझनेवाले) अरे आर्यजन ! | २ |
| ३ | अरे, अशान्ति में जले मानव ! | ३ |
| ४ | अरे, धर्मप्रेमी सामाजिक कार्यकर ! | ४ |
| ५ | अरे जैनबन्धु ! | ५ |
| ६ | अरे, राजनीति के रसिकजन ! | ६ |
| ७ | अरे, बुद्धिजीवी वर्ग ! | ७ |
| ८ | अरे, बहनें ! | ८ |
| ९ | अरे, समाजवादी बन्धु ! | ९ |
| १० | अरे, संस्कृति के रखवाले ! | १० |
| ११ | अरे, इसु खिस्त के अनुयायीजन ! | ११ |
| १२ | अरे, पक्षवादी लोग ! | १२ |
| १३ | अरे, आर्यदेश के साधु–संन्यासी गण ! | १३ |
| १४ | अरे, शिक्षाक्षेत्र के दातागण ! | १५ |
| १५ | अरे, स्वराज्यवादी जन ! | १६ |
| १६ | अरे, समाजवादी लोग ! | १७ |
| १७ | अरे, धर्म के अंधश्रद्धालु लोग ! | १८ |
| १८ | अरे, प्रगतिवादी लोग ! | १९ |
| १९ | अरे, धर्म में व्यर्थ व्यय करनेवाले ! | २० |
| २० | अरे, परिवार नियोजक ! | २२ |
| २१ | अरे, 'गरीबी हटाव' के समर्थक ! | २३ |
| २२ | अरे, बेकारी–समस्या के चिन्तक ! | २४ |
| २३ | अरे, महँगाई–चिन्तक लोग ! | २५ |

| क्रम | विषय | पृष्ठ |
|---|---|---|
| २४ | अरे, ज्ञातिवाद-विरोधी जन ! | २६ |
| २५ | अरे, धर्म को अफीम समझनेवाले ! | २८ |
| २६ | अरे, हरे कृष्ण की धून में अभ्युदयदर्शक ! | २९ |
| २७ | अरे, भोलेभाले भारतीयजन ! | ३० |
| २८ | अरे, ओ धर्माचार्य ! | ३१ |
| २९ | अरे, अवकाशयात्रा परस्तलोग ! | ३२ |
| ३० | अरे, रचनात्मक कार्य-समर्थक ! | ३३ |
| ३१ | अरे, रूढिशत्रु ! | ३५ |
| ३२ | अरे, सामूहिक आत्महत्याप्रेमी ! | ३६ |
| ३३ | अरे, अग्रणीजन, सावधान हों ! | ३७ |
| ३४ | अरे, धर्म में एकतावादी जन ! | ३८ |
| ३५ | अरे, प्रभु के शरणागत जन ! | ४० |
| ३६ | अरे, भले के दिखावा करनेवाले शिक्षित जन ! | ४१ |
| ३७ | अरे, घर के अभिभावक लोग ! | ४२ |
| ३८ | अरे, भावनाशाली लोग ! | ४३ |
| ३९ | अरे, चुनाव के समर्थक लोग ! | ४४ |
| ४० | अरे, राजनीति की गाडी के वाहक लोग ! | ४५ |
| ४१ | अरे, आत्मकल्याणवादी लोग ! | ४७ |
| ४२ | अरे, राजनीतिज्ञ जन ! | ४८ |
| ४३ | अरे, तीर्थस्थानों के यात्रीगण ! | ४९ |
| ४४ | अरे, देशकालज्ञ दुःखीजन ! | ५० |
| ४५ | अरे, मार्क्सवादी लोग ! | ५१ |
| ४६ | अरे, ईश के प्रेमी लोग ! | ५२ |
| ४७ | अरे, धर्मचर्चा के लिये तत्पर युवकजन ! | ५३ |
| ४८ | अरे, कर्मनाशवादी लोग ! | ५४ |
| ४९ | अरे, पापक्रिया के कारक ! | ५६ |
| ५० | अरे, प्रतिदिन मंदिरों में जानेवाले सज्जन ! | ५७ |
| ५१ | अरे, बेचैन मानव ! | ५८ |
| ५२ | अरे, वडील (बड़े) आदरणीयजन ! | ५९ |
| ५३ | अरे, मानवों ! व्यक्तित्व का संघर्ष खेलें ! | ९० |
| ५४ | अरे, विप्रजनों ! आप के 'ऊपरवालें को समझ लें ! | ६२ |
| ५५ | अरे, सुखप्रेमी-चाहक सद्गृहस्थ ! | ६३ |
| ५६ | अरे, ५८ साल से उपर की उम्रवाले सद्गृहस्थ ! | ६४ |
| ५७ | अरे, शिक्षितजन ! | ६६ |
| ५८ | अरे, संगठनप्रेमी लोग ! | ६६ |
| ५९ | अरे, दुःखों से व्यग्र बने लोग | ६८ |
| ६० | अरे, लोकशासनवादी जन ! | ६९ |
| ६१ | अरे, चुनावप्रेमी लोग ! | ७० |
| ६२ | अरे, चिन्ताग्रस्त सज्जनगण ! | ७१ |
| ६३ | अरे सर्वोदयवादीजन ! | ७३ |
| ६४ | अरे, राज्यनीति के भविष्यनेता ! | ७४ |
| ६५ | अरे, स्वधर्म प्रेमी बंधु ! | ७५ |
| ६६ | अरे, लोकशासन परस्त लोग ! | ७६ |
| ६७ | अरे, शान्ति के समर्थक लोग ! | ७८ |
| ६८ | अरे, कौमविरोधी लोग ! | ७७ |
| ६९ | अरे, नवयुग (!) के आत्यंतिक उत्साही जन ! | ७९ |
| ७० | अरे, परिवार नियोजन के समर्थक ! | ८० |
| ७१ | अरे, प्रयोग-प्रेमी जन ! | ८१ |
| ७२ | अरे, हिन्दुस्तानी लोग ! | ८३ |
| ७३ | अरे, कर्जदार धर्मी जन ! | ८४ |
| ७४ | अरे, एकतावादी लोग ! | ८५ |
| ७५ | अरे, लोकशासन-कल्याणवादी ! | ८६ |
| ७६ | अरे, धर्मीजन ! | ८८ |
| ७७ | अरे, एशियन राष्ट्रों के धुरंधरों ! | ८९ |


www.yogpradhan.com

# जरा ध्यानसे मुझे सुनिए तो !

**अरे, आर्यधर्मों के संतपुरुष !**

हमारे आर्यदेशकी संस्कृतिरक्षा कर दिखाने का कैसा अनोखा मौका आ पहुँचा है ।

चारों ओर से आक्रमण ही आक्रमण ! शत्रु कोई नजर ही न आये । सभी मित्र बनकर घरमें घूस जायँ । बाद में धोखाबाजी शुरू कर दें ।

धर्म के विकास (!) के अवसर दिखला कर, युगानुसार धर्मशास्त्रों में परिवर्तन लानेका होहल्ला मचा कर हमारे पर रहस्यमय भेदी आक्रमण शुरू कर दिया गया है; ऐसा आप क्या महसूस नहीं कर पाते !

सरकार में न्यायनीति कहाँ है ! व्यापारी में नीति कहाँ ! नारी में शील कहाँ ! युवानों मे सदाचार के दर्शन कहाँ ? जगडू शाहों और भामा शाहों के दर्शन कहाँ ? निर्भीक वीर पुरुषों के दर्शन कहाँ ? संस्कृतिप्रेमी संत कहाँ ? शीलवती नारी कहाँ ? नीतिमान व्यापारी कहाँ ?

क्या आप लोग यह महसूस नहीं करते कि ऐसी परिस्थितिमें हम ज्यादा सावधान बनें, यह अत्यंत जरूरी है ? नहीं, हताश क्यों हों ? सर्वनाशकी वे सारी बातें झूठी है । वे बाते निरी गोबेल्स ढंग के प्रचारकी हैं । तो फिर हम सब अपने अपने धर्म में स्थिर बनकर, परधर्मों के प्रति सहिष्णु बनकर, एकात्मभाव साध लें तो क्या हमारी संगठित ताकतका त्वरित प्रभाव न होगा ? नहीं, नहीं, हजारों-लाखों महर्षियोंका बल हमारे साथ है; तो फिर हम हताश क्यों हों ? पश्चिम के महाविघातक आक्रमणों के सामने हम सब एकचित्त-कटिबद्ध होने का दृढ संकल्प क्यों न करें ?

www.yugpradhan.com

## (स्वयं दुःखी समझनेवाले) अरे आर्यजन !

नहीं, आप लोग दुःखी कबसे हैं ? अपने आपको स्वयं ही दुःखी समझ, जानबुझकर दुःखी होने का अगर पसंद कर लिया हो तो, कोई बात ही नहीं रहती ! वास्तवमें आप दुःखी नहीं हैं। दुःखी उसे कहेंगे कि जो आदमी अपने दुःखों से इतना सारा त्रस्त हो गया हो कि, दुःख को हटाने के लिए न्यायी मार्ग के उपायों में डट जाय। जहाँ तहाँ दुःखों के विरुद्ध शिकायत करने के लिए पल भरकी फूरसत नहीं रहती !

आप लोग चारों ओर हरदम अपने दुःखों के ही गाने गाया करते हैं। अतः आप लोग पूरे दुःखी तो हैं ही नहीं।

सही बात तो यही है कि मनुष्य दूसरे सुखी लोगों की अपेक्षाएँ जगाकर बादमें अपने सुख-दुःखकी कल्पनाएँ करने लगता है। यही उसकी भारी गलती है। उपरिस्थित दूसरों को देखने की नीतिसे तो ताता–बिरला जैसे सेठ भी अपनेको दुःखी ही समझेंगे।

अरे, देखने ही हैं तो धनिकों, तंदुरस्तों, सत्ताधीशों, आदि के साथ रहनेवालों की ओर नजर डालो। उनका तो इस दुनियामें हमेशा के लिए लघुतम है। उसके विरुद्ध भारी बहुमतमें रहे गरीबों, रोगियों और भूख के मारे आत्महत्या करनेवाले दयापात्रों की ओर तो नजर उठाओ ! आप को भरपूर आश्वासन मिल पायेगा। आपका चाहे वैसा दुःख क्यों न हो, याद रहे, आपके दुःख से अधिकतर दुःखवाले मानव इस दुनियामें दिन काट रहे हैं; बादमें आप ही कह देंगे कि : 'इनकी अपेक्षा तो मैं बेहद सुखी और संतुष्ट हूँ।'

## अरे, अशान्ति में जले मानव !

आप को शान्तिकी जरूरत है क्या ! किसे शान्ति की अपेक्षा नहीं ! अभी अशान्ति की शिकायत तो सभी करते हैं; लेकिन आप यह जानते हैं

कि आपकी अशान्तिके सर्जक, खुद आप ही हैं। नहीं समझे ! समझ लें अब।

अपेक्षाके आधार पर, दुनियामें दो प्रकार के सत्य हैं। एक अशान्ति का जनक और दूसरा शान्ति का सर्जक !

एक गुलाब है; वहाँ काँटे भी हैं। उन्हें देखकर कोई निराशावादी कहे कि–"धिक् है कुदरत को ! गुलाब को भी काँटों से घेर रखा।" दूसरा आशावादी कहेगा–"वाह प्रकृतिदेवी ! तुमने तो काँटों में भी गुलाब उगाया।"

दोनों सत्य है; लेकिन सही सत्य वही है, जो जीवन में शान्ति दे।

अब आप अपने पर गौर करें।

www.yogpradhan.com

धनिकों की दुनिया आपके उपर है। गरीबों की दुनिया आपके साथ है। दोनों हैं, यह वास्तविक चित्र है। लेकिन यदि आपकी दृष्टि केवल उपर ही टिकी रही तो आप व्याकुल हो उठेंगे; यदि पाँव की ओर आसपास टिकेगी तो आप आनंदविभोर हो उठेंगे। इससे आप समझ जायेंगे कि शान्ति और अशान्ति की जड़ें आपकी नजरों में गड़ी हैं। शान्तिप्रदा दृष्टि का ही आदर करें। बाद में बिना किसी सहारे, स्वयं ही आप के घर में शान्ति के पुनित चरणों का आगमन होगा ही।

व्यर्थ परेशानी जानबुझकर क्यों उठाते हैं? अपने हाथों अपने पाँवों पर कुल्हाडो क्यों मारते हो ? अब सही बात का पता चलने पर, जल्द से जल्द हर बात को नये दृष्टिकोण से जाँचना शुरू कर दो।

## अरे, धर्मप्रेमी सामाजिक कार्यकर!

आप लोग सामाजिक कार्यों में मग्न रहते ही हैं। साथ ही धर्म के विषय में आपकी दिलचस्पी मैं महसूस कर रहा हूँ। खैर, आपके समान आदमी, धर्मक्षेत्र में भी पदार्पण करे, यह सराहनीय है; लेकिन मैं आपसे एक बात समझाये देना चाहता हूँ कि, धर्म के क्षेत्र का संचालन व्यवस्थित ढंग से जारी रहे, उसके लिए उसका निश्चित गठन–संविधान है। निश्चित सूझसमज है और साथ में है अत्यंत गौरवान्वित पूर्वपुरुषों की विरासत !

वर्तमान सामाजिक क्षेत्रों में ऐसा कुछ दिख नहीं पड़ता। उसकी स्थिति गिरगिट जैसी है, जो प्रतिदिन सुबह–शाम अपना रंग पलटता रहता है।

न है उसके पास कोई निश्चित नीति ! नहीं है कोई ढाँचा। वर्तमान सामाजिक क्षेत्र में निरी अराजकता फैली हुई है। कतिपय अवसरवादी सत्ता-लोभी लोगों के वहाँ वह कैद पड़ा है। युगप्रवाहों में वह खींचा जा रहा है। कोई उसे हाथ नहीं बँटा पाता। इसी तरह समाजविषयक नीतिनियमों का लगातार सर्वनाश हो रहा है।

कार्यकर बंधु ! आप भी यदि ऐसे क्षेत्रों में सेवा करते करते अगर अवसरवादी बनने की प्रकृति के शिकार बन चुके हो; झूठों के बहकावे में खींचे जा रहे हो और अपने अस्तित्व की चिन्ता में फँसे हो, निर्माल्यता–कायरता आप के मन में घर कर गयी हो, तो कृपा कर धार्मिक क्षेत्रों में कभी भी प्रवेश न करें। क्योंकि, उसके कारण तो बद्धमूल निश्चित मर्यादाओं को स्वीकृत कर कार्यरत धार्मिक क्षेत्रों में भी, आपके युगवाद, अवसरवाद, सत्ता-लोभ, खुशामतखोरी के काले कारनामों के काले पानी घूस पायेंगे और अनेकों के हितसाधक धर्मशासन की जड़ों को हिला देंगे।

नहीं, वैसा करने की कोई आवश्यकता नहीं। अभी धर्मशासन के रक्षक हम बैठे हैं। धर्मशासन की संवैधानिक चुस्ती से ही धर्म का विश्व में प्रसार

www.yugpradhan.com

होता है। युगवादी स्थितिस्थापकता से धर्म कभी भी सही ढंग से प्रसारित नहीं हो पाता। हमें इस बात पर पूरा विश्वास है। अतः आप आराम से अपना घर सम्हाल ले और गहरी नींद सोयें। हमारा उत्तरदायित्व हमें सौंपकर निवृत्त हो जायें। यहाँ आपका जरा भी काम नहीं !

## अरे जैनबन्धु !

जिस प्रकार आप लोग भौतिक जीवन गुजार रहे हैं, उसमें मुझे आपका कोई श्रेय दृष्टिगोचर नहीं होता। आपको दी गयी शिक्षाने, आपकी बुद्धि को स्वच्छंद बना दी हो और परिणाम स्वरूप मनगढंत विचार, आपके फलद्रुप(!) दिमागों में से पैदा होते हो; यह अत्यंत दुःखद स्थिति है।

धर्मविषयक विचार करनेवाले लोग और धार्मिक क्रिया करनेवाले लोग, सामान्यतः 'धर्मी' के रूप में ख्यातनाम होते हैं। ऐसे आदमी यदि अपने विचारोंको शास्त्राज्ञा के कीले के साथ जोडना पसंद न करे और स्वच्छंदता के मार्ग पर चले तो, विश्वकल्याण करने में समर्थ ऐसे जिनशासन की नाव, अर्धदग्ध विचारों की लाखों गोलियों से बिंध बिंधकर बीच में ही डूब जाय।

आपस आपस में जो स्थिर बनाये रखने में हमें थोडे अंश में भी निमित्त बनना हो तो, हम सभी स्वतंत्र विचार करना हमेशा के लिए छोड दे और शास्त्रज्ञान क्या है? यह वाक्य हर ढंग से हर एक के सामने बार बार कहना होगा। 'तुम्हारी न सही, न हमारी बात, शास्त्र जो बताये यही हम सभी को मान्य हो।' यही एक निश्चित नीति पर चलें। ऐसा होने पर ही, एक दूसरे के नित्य नये अर्धदग्ध विचारों को एक दूसरे से टकराहट लेकर, सुधार के नाम, समुचे जिनशासन को दबोचने के लिए जो आँधी ऊठ खडी हुई है, उसे शान्त कर पायेंगे। बाद में मिलझुलकर सभी साथ आराम से बैठ पायेंगे

और संगठित होकर एक ही स्वर में तादात्म्य भाव से अनेक धर्मकार्य कर पायेंगे ।

## अरे, राजनीति के रसिकजन !

' बंगलादेश आज़ाद हुआ ! पाकिस्तान की गुलामी में से बच निकला ! ।

हाँ, सभी एक ही स्वर में यही बता रहे हैं; लेकिन एक बात न भूलें कि हिन्दूस्तान के तीन टुकड़े हुए । गांधीजी की इच्छा और आँसुओं की बिना परवाह किए गोरे सत्ताधीशों ने भारत को दो टुकड़ों में बाँट दिया । एक का नाम पाकिस्तान रखा; बाद में सभी ने उसे भारत मानने से इन्कार ही कर दिया ।

www.yugpradhan.com

ढाका कहो या जैसोर, सारा बंगलादेश हिन्दुस्थान ही था । आज भी वही है । उसी हिन्दुस्तान के लिए ही १८५७ में, हिन्दू–मुसलमान दोनों एक ही माँ के दो पुत्रों की तरह कंधे से कंधा मिलाकर गोरों से मुठभेड की थी ! तात्या टोपे, नानासाहब, झाँसी की रानी, बादशाह बहादुरशाह, मौलवी अहमदशाह आदि सभीने हाथ मिलाये थे ।

कैसा कमाल कर दिया है इन गोरों ने ! अपने से टकरानेवाले इन हिन्दू–मुसलमानों को केवल सौ सालों में ही एक–दूसरे के साथ ही टकरा दिए ! खूँखार लड़ाई लड़ा दीं । एक हिन्दुस्तान के एक भाग पर ' पाकिस्तान ' लिख कर, एक हिन्दुस्तान को, दूसरे हिन्दुस्तान के साथ, पूरी ताकत से टकरा दिया । खुदने ही अपने ही हाथ को बडी उमंग के साथ झटक दिया । किसीने उसे अपने हाथों कटवा दिया ।

खैर, अब भारत के तीन टुकडे हुए । बंगलादेश स्वतंत्र (!) बना । क्या पता मुत्सद्दी कूटनीतिज्ञों की इस प्रसंग के पीछे कौन चाल छिपी होगी !

संभव है कि कोई दूसरा देश, वहाँ उपकारों के बोझ से लादकर अपना वर्चस्व जमा दे और बाद में भारत की गरदन को धीरे से दबोच ले। उसके लिए शायद बंगला देशका यह विद्रोह, युद्ध और स्वतंत्रता आवश्यक माने गये है।

अरे, तब तो धर्मध्वंसकी यह प्रक्रिया ओर भी तेज बन जायेगी। संस्कृति विनाश का रक्तपातविहीन यह आक्रमण और भी रहस्यमय बन जायेगा। जो होना हो सो हो, अब तो ऐसे आक्रमणों का प्रतिकार करनेकी ताकत या तो दैवी शक्तिमें होगी या प्रकृतिके किसी कोपमें ! मानवीय शक्ति का यहाँ कोई बस नहीं चलेगा। कभी नहीं, सभी उपदेशक और संत संयुक्त बन कर भी कुछ कर न पायेंगे।

www.yugpradhan.com

## अरे, बुद्धिजीवी वर्ग !

स्कूल, कालिज और विश्वविद्यालय की शिक्षाप्राप्त आपको बुद्धिमान कहने के बदले, अफसोस के साथ 'बुद्धिजीवी' कहने पड़ते हैं। लेकिन उसका एक कारण यह है कि, आपलोग अपनी बुद्धिके बल पर ही जीवन यापन करनेवाले लोग हैं। कानूनचोरी को आप लोग ही चोरी मानने के लिए तैयार नहीं। कानून के फँदे में न फँसनेवाले हत्यारेको आप ही निर्दोष मनाते हो ! परवाना लेकर शराब पीनेवाले को आप गुनहगार मानने से इन्कार कर देते हैं ! निष्णात (!) डाक्टरों के द्वारा गर्भपात करानेवाली कुमारिका के बारेमें आप लोगोंकी कोई बात अनुचित मालूम नहीं होती।

लग्नविच्छेद, आन्तरराष्ट्रीय लग्न, पाश्चात्य जीवनपद्धतियाँ, चलचित्र और सहशिक्षा आदि के बारे में आपका अंशमात्र विरोध नहीं। क्या ये सारी बातें आर्यसंस्कृति की भेंटें हैं ! पूरी जिमेवारी के साथ मैं कहूँगा कि कभी नहीं, हरगिज नहीं।

यह सारा पश्चिमीशिक्षा का परिणाम है। उसीने प्रजा के मानस पर शैक्षिक धावा बोल दिया है। इसी कारण परलोक भुला दिया गया है। पाप-पुण्य की बातों पर धूल चढ़ी हुई हैं। धर्माधर्म के विचार स्वप्न की तरह निरर्थक बने हैं; लेकिन यह सारा उचित माना जायेगा क्या ! हमारा सर खाली रहे; यह शायद उचित माना जाय; लेकिन सारा का सारा दिमाग किसीको सीधा ही सौंप दिया जाय, यह बेशक निकृष्ट बात होगी। इस का परिणाम कितना खतरनाक आ पाया ! मानवमात्र स्वार्थी बना, जिनके पूर्वज संस्कृतिलक्षी थे।

यदि दाणचोरी के धन से बंगले बनाने वाले को राष्ट्रको हानि पहुँचाने वाले के रूप में कारावास की सजा दी जाती हो तो, अपने ही ऐहलौकिक सुखों के निमित्त संस्कृति की जड़ों को क्या दंड दिया जाय, उसका सोच-विचार आप लोग ही कर लें।

www.yugpradhan.com

## अरे बहनें !

शील ही आपका जीवन है, आप की सम्पत्ति है। सरहदें खतरे में हों, तब राष्ट्र की सुरक्षा के लिये जान न्योछावर करनेवाला योद्धा, कभी 'बेचारा' नहीं माना जा सकता; तो शीलरक्षा के लिए जौहर करनेवाली नारी को 'बेचारी' क्यों कहेंगे ? अरे, बहनें ! आर्यदेश के आभूषणों में आप उत्तम आभूषणरुप हैं। आभूषण तो गुप्त-छिपे रहते हैं; उन्हें सुरक्षित रखने पड़ते हैं। ऐसा करनेवाले पर आक्षेप नहीं किया जाता कि तुमने आभूषणधन को छिपा रखा, गुलाम बना रखा !

बहनें ! झूठे जमाने के उन्मादप्रचुर वायुमण्डलमें आप अपने को बहा न दें ! पुरुषों की वासनाएँ धधक उठी हैं; आप या तो उनका यज्ञकुण्ड बनेंगी; लेकिन सावधान, स्वच्छंदताके, निर्लज्जताके और उच्छृंखल आनंद क्षुद्र और

क्षणभंगुर होते हैं; उसकी अपेक्षा शीलरक्षा से मिलनेवाला कोई भी सात्विक आनंद उत्तम है। वापस लौट आयें ऐसे उन्माद से ! आप के शील को अच्छी तरह सुरक्षित बनाये रखें ! उसके लिए वेशभूषा, अभ्यास–पढ़ाई, सखीवृंद आदि में आमूलाग्र परिवर्तन लादें और हमारी आर्यसंस्कृति के अनुरूप जीवनपद्धति की चुस्त अनुयायी बनें।

## अरे, समाजवादी बन्धु!

आप समाजवादी कहलाते हैं, उससे क्या ! समाजका कौन सा वाद आप करते रहते हैं ? समाज को सुखी बना देने का वाद ही आपका समाजवाद हैं न ! जमीन की उच्च मर्यादा, शहरी सम्पत्ति की सर्वोच्च मर्यादा, सहकारी संगठन, पंचायती शासन, मुक्त शिक्षाप्रदान, बच्चों को दोपहर का मुफ्त भोजन, हरिजनों और आदिवासी जनों के लिए अनेकविध सुविधाएँ और सहुलियतें, इन्हीं को आप समाजवाद कहते हैं ! खैर, समाजवाद की आप कोरी बातें ही किया करते हैं। इस से आप लोग खुशहाल बने फिरते हैं कि समाज भी सुखी हो, आदि आदि बातों में मुझे उलझना नहीं। मुझे आप से एक ही बात बतानी है कि समाज को सुखी करने के लिए आप लोग लाख प्रयत्न करते रहते हैं; लेकिन उस समाज को 'अच्छा–भला' बनाने का एक भी प्रयत्न आप कर पाते हैं क्या ?

जमीन की सर्वोच्च मर्यादा आदि कानूनों में, समाज को 'भला' बना देने की बात ही नहीं है ! इसे तो आप भी कबूल रखते हैं न ? समाज को भला बनाना यानी कम से कम वह नीतिमान्, दयावान् और सदाचारी बन पाये। आपके पास समाज को ऐसे स्तर पर पहुँचा देने की कोई बात ही नहीं है।

तो अब मैं आपसे एक प्रश्न करूँगा कि अच्छा न हो फिर भी सुखी हो ऐसा समाज, हमारे भारत के लिए आशीर्वाद रूप सिद्ध होगा या अभिशाप-मय बन पायेगा ?

जिस पास अच्छाई है ही नहीं और सुख, धन, संपत्ति, भोगसुख आदि की बौछार होने लगी है, वैसा आदमी, वैसा परिवार, वैसा समाज, मानव मिटकर भगवान ही बन न जाय ? मानव के रूप में स्थिर भी रह न पाये। शयतान बनकर भी चैन से न रहे, शयतान बने तो भी कोई आश्चर्य न होगा।

देख लें, वर्तमान के ऐसे समाजवादियों द्वारा कल्पित समाज की अवदशा! सुखियों को शरारतें देखें। सत्ताधीशों के घमंड को देखें। रिश्वत, दाणचोरी, षड्यंत्र, मारकाट, भ्रष्टाचार, आक्षेपबाजी, हड़तालें, धरने, धमकियाँ और नक्षलवाद की खूनखराबीयों, ये सारी बातें तथाकथित अच्छे नहीं ऐसे सुखी बनानेवाले समाजवाद की ही भेंटें है न ? अफसोस, ऐसे समाजवाद से क्या फायदा !

www.yogpradhan.com

## अरे, संस्कृति के रखवाले !

एक बात आप लोग अच्छी तरह समझ लें कि आर्यावर्त की संस्कृति का एवं आर्यावर्त की गौरवान्वित प्रजा का बलिदान लेकर राष्ट्र (भूमि) की रक्षा करने का कार्यक्रम चारों ओर प्रत्यक्ष दृष्टिगोचर हो रहा है। परिवार नियोजन, कानूनी गर्भपात, लग्नविच्छेद, चलचित्र आदि के प्रति विरोध को कोई भी संस्कृतिचाहक सज्जन संमानित करेगा।

यह खतरनाक स्थिति है। आर्यप्रजा ही अपनी दीर्घदृष्टि–बुद्धि को गँवाकर, ऐसे खतरों से भरे कार्यक्रमों को अमल में ला चुकी है।

परायों को आवाहन देना सुलभ है। आत्मीयों को चेलेन्ज करने से यादवास्थली का विनाश पैदा होने का संभव है। कहा जाता है कि श्रीकृष्ण परायों का मुकाबिला तो डटकर कर पाये थे, लेकिन अपने आत्मीयजनों को सम्हाल नहीं पाये थे।

इससे आप अंदाजा लगाये कि, संस्कृति की रक्षा का काम कितनी मुश्किलियों से भरापूरा होता है।

लेकिन हताश होने से क्या फायदा ? किसी के सर दोषारोपण करने से काम कैसे निपट जायेगा।

डगमगते आत्मविश्वास की यदि पुनःस्थापना करें तो मैं मानता हूँ कि हमारा रखवालापन अवश्य उत्तम सिद्धि प्राप्त कर दिखायेगा।

www.yugpradhan.com

घर में ही पैदा हुई विरोधी अभिप्रायों की टकराहट सचमुच चिन्तनीय है; लेकिन उससे भी अधिक चिन्ताजनक बात है, हमारा निर्मल आत्मविश्वास !

हम सभी सावधान हों ! हमें किसी को बुरे बताने नहीं हैं। हमें तो पूरी श्रद्धा के साथ, रक्षाकार्य पार उतारना है। उसके लिए जो भी करना हो, कर पायें। पागलों की टोली के बीच पागल बन नाचना पड़े और रक्षाकार्य सिद्ध होता दिख पड़े तो सयानापन का दिखावा छोड देंगे। उठो, जागो, सारी सूझबूझ कार्यान्वित करें और पूरे आत्मविश्वास के अमोघ शस्त्र का सफल उपयोग करें।

## अरे, इसुख्रिस्त के अनुयायीजन !

आप सब यह क्या करने पर तुले हैं। आपके भगवान इसुख्रिस्तने, क्या ऐसे खतरनाक धर्मान्धता के उपाय द्वारा, परधर्मियों का धर्मान्तर कराने का आदेश दिया था ? परधर्मी सभी शत्रु हैं ? क्या परधर्मी मानव नहीं ? तो क्या मानव मात्र के प्रति प्रेम जताने का उपदेश इसुने नहीं दिया ? 'कोई एक

गाल पर तमाचा जड़ दे तो, दूसरा गाल धर देना !' ऐसे विश्वप्रसिद्ध उपदेश को क्या आप लोग ही इतना जल्द भूल गये !!

हमारे हिन्दुस्तान की ही बात बताऊँ। प्रतिवर्ष लाखों की तादाद में उनकी गरीबी–मजबूरी आदि का फायदा उठाकर उन्हें खिस्ती बना रहे हैं। 'सेक्युलर स्टेट' का ज्यादा ज्यादा फायदा आप लोग उठा रहे हैं। नागालेन्ड, झारखंड आदि प्रदेश आपके ही जीते–जागते कारस्तान नहीं हैं ?

समग्र विश्व में कहाँ कहाँ आपके काले कारनामे नहीं पहुँचे ! वियतनाम कोरिया, इजिप्त, इजरायल, हिन्दुस्तान, पाकिस्तान और अब बंगलादेश !

नहीं, नहीं, ऐसी धर्मान्धता तो आप लोगों को ही मुबारक हो। बाद में विश्वशान्ति की कोरी बातें करने का कोई अधिकार आप लोगों का नहीं रहता।

www.yugpradhan.com

आप लोग, यह बात समझेंगे तो आपकी ओर मानसंमान से नजर उठानेवाले करोड़ों अनुयायियों के दिमाग में यह बात जमा सकेंगे। उनके पास शस्त्रसंन्यास कराकर इसु प्रबोधित मानवता की राह चला पायेंगे। परिणाम में सारी मानवता आपकी अंशतः भी कृतज्ञ बन पायेगी।

## अरे, पक्षवादी लोग !

भारत के किसी भी राजकीय पक्ष को लक्ष्यकर मुझे यह बात बतानी है। चाहे वह कोंग्रेस हो, जनसंघ हो या साम्यवाद हो।

आप, सभी की हालत देख मुझे यह स्पष्ट मालूम हो रहा है कि, राष्ट्र (प्रजा) की सेवा के नाम स्थापित ये पक्ष, राष्ट्र का द्रोहकार्य ही करने में व्यस्त हैं। पक्षमात्र राष्ट्रद्रोह ही करे, ऐसी एक अनिवार्य लेकिन करूण परिस्थिति पैदा हुई है।

आप ही बतायें कि आपके पक्ष का एक सदस्य, दाणचोरी जैसे नापाक धंधों द्वारा राष्ट्रद्रोह करे, तो भी आप लोग तो उसे बनाने की कोशिश ही करेंगे न ? और विपक्ष का राष्ट्रप्रेमी सदस्य भी आपकी नजरों में नालायक ही समझा जायेगा ! कितना खतरनाक ! राष्ट्रवाद की कैसी दुःखद दारुण हत्या ! राष्ट्रद्रोह को कैसा अनूठा पोषण ! और राष्ट्रभक्त की किस हद अवहेलना ! केवल पक्षप्रचारित मामकाः–तावकाः के एक मात्र भेद के कारण ! अरे, अब तो धर्मशासन भी ऐसी ही खतरनाक स्थिति का शिकार बन पाया है । यहाँ भी जो विभिन्न प्रकार के पक्षों का सर्जन हुआ है, जो फिरके सजाये जा रहे हैं; उन्हीं के कारण, पक्ष की ही पूजा–प्रतिष्ठा हो रही है और धर्म का खुलेआम द्रोह हो रहा है । मामकाः–तावकाः की कूटनीतिने धर्मशास्त्र का समूलोच्छेद का ही कार्य किया है ।

www.yugpradhan.com

राष्ट्रभक्त पक्षभक्त तो बने; लेकिन राष्ट्र (प्रजा) कहीं का न रहा !

शासनप्रेमी पक्षप्रेमी बने ! शासन का किसी के दिलमें स्थान न रहा !

फिर भी अफसोस इस बात का है कि वे लोग राष्ट्र या धर्मशासन की दुहाई देते हुए जरा भी शर्मिन्दा नहीं होते !

## अरे, आर्यदेश के साधु–संन्यासीगण !

पूरी नम्रता के साथ मुझे उन साधु–संतों से कुछ निवेदन करना है; जिन्हें विदेशों में प्रचार के लिए जाने की तीव्र उत्कंठा है । जिसके कारण, विदेशों में वे अपने अपने मिशन चलाने लगे हैं ।

क्या आर्यदेश की पचपन करोड़ की प्रजा, धर्मतत्त्व सम्हालने की योग्यता गँवा चुकी है; ऐसा सोच समझकर विदेशों में दौड जाने का आपने तय किया है ? आप इतना अवश्य समझ लें कि इस देश की प्रजा में, आज भी पुण्यवंती भारतीय संस्कृति के प्राण अनुप्राणित–स्पंदित हो रहे हैं । जब

कि, विदेशों में तो अब अनाचारों की बौछारें और बाढें उछल पड़ी हैं। हाँ, इतना अवश्य है कि हमारी प्रजा के पास से अपेक्षित धनप्राप्ति न हो; जब कि विदेशों में धनसंपत्ति का बोलबाला नजर आये; परन्तु आर्यदेश की महा-संस्कृति के रक्षक जैसे आपके जीवन में धन को महत्त्व दिया जाय यह संभव ही नहीं।

यहाँ हमें बीमारों को तंदुरुस्त बनाने हैं; जब कि वहाँ मुर्दों को जिलाने की निष्फल साधना करनी होगी! मुर्दे कभी जिंदा हो पाये हैं?

उपरांत एक गंभीर बात को, मैं पूरी नम्रता के साथ, आपके ध्यान पर लाना चाहता हूँ कि, बड़ी सहजता से गोरी प्रजा आपकी अनुयायी बन जाती हैं; उससे आप कभी भी संस्कृति के अभ्युदय की भ्रामक कल्पना न कर बैठें। मेरी दृष्टि से तो आप जैसों के सहारे लाखों गोरे भारत में चले आयेंगे; गेरुए रंग के कपड़े पहनेंगे, यज्ञोपवीत धारण करेंगे, सर पर शिखा भी रखेंगे और 'हरेराम हरेकृष्ण' की अनूठी धूनें भी मचायेंगे; लेकिन ये सभी बाद में पूरी धोखाबाजी ही करेंगे। आपकी वैदिक संस्कृति के प्राणभूत तत्त्वों में सुधारों की बातें छेड़कर, उस संस्कृति की जड़ों को मूल से ही हिला देंगे।

पचपन करोड़ की बलवती प्रजा के सर्वनाश का यही एकमात्र उपाय है, संस्कृति का सर्वनाश! इसी लिए ये लोग भारी तादाद में आपके अनु-यायी रातोंरात होने लगे हैं। संस्कृति का जल सूख जाने पर, बाद में प्रजारूप-बलवान-करोंडों की संख्या में होने पर भी मछलियाँ कब तक जिंदा रह पायेंगी?!

अरे साधु-संतजनो! आप इस देश की प्रजा के कल्याण के निमित्त भी, उस मोहिनी की भ्रमणा से बचे रहें; नहीं तो क्रमशः (१) प्राचीन प्राणवान तत्त्वों का खात्मा, (२) नये सुधारक विचारों का उपद्रव (३) बलवती संन्यासी परंपरा का विनाश (४) नयी स्टोपप्रेस आवृत्ति जैसी आधुनिक संन्यासी परपरा का उद्गम (५) और उसके जरिये संस्कृति का नाश

(६) आखिर प्रजानाश ही होकर रह जायेगा। बाद में राष्ट्र की समुची धरती उन लोगों के हाथों पडेगी, बिना तकलीफ और बिना संघर्ष के।

क्या आपके ही हाथों ऐसा अनुचित कार्य होगा ? बिलकुल असंभव है।

## अरे, शिक्षाक्षेत्र के दातागण !

शिक्षासंस्थाओं के दानीजनोंका तो आजकल भारी बोलबाला हो गया है। सुबह होती है और अखबारों में बडे बडे काले अक्षरों में शीर्षक पढ़ने मिलते हैं। " ....की ओर से शाला को ( कालिज को ) प्राप्त पाँच लाख रूपयों का (या पच्चीस लाख रूपयों तक का ) दान ! "

अब तो धार्मिक संस्थाओं की संपत्ति भी इस शिक्षाक्षेत्र के प्रति तेजी के साथ बहने लगी है। निःसंदेह, अनधिकार चेष्टा करने का मुझे कोई हक नहीं; फिर भी मुझे इन दाताओं से इतना ही कहना है कि, पाश्चात्य ढंग की इस शिक्षा से भावि प्रजा को उदरपूर्ति की और संस्कारों की विरासत मिल जायेगी, ऐसा सोचकर यदि आप दानकार्य कर रहे हैं तो आप पूरे भ्रम में फँसे हुए हैं !

वास्तव में इस शिक्षा में, अण्डे–माँस–मछलियों की पौष्टिकता के पाठों द्वारा माँसाहार और यौनशिक्षा को उत्तेजन देनेवाला हलाहल विष आकण्ठ भरा पड़ा है। इस विषपान से नयी पीढी की अवदशा कैसी हुई है, यह तो उसके जातीय दुराचार, निर्लज्जता, मर्यादाभंग और हडतालें, गैरशिस्त आदि आवेशों द्वारा सभी समझ गये हैं। मैं तो खुलेआम कहूँगा कि, इस शिक्षा का विषपान करनेवाले निर्दोष युवक–युवतीयाँ ही शायद भारतीय प्रजा और संस्कृति के सर्वनाश के साधन बन बैठेंगे।

अरे दाताजन ! भविष्य में दान करने से पहले गौर से सोचें। आपका

बस चले तो इस शिक्षा को संपूर्णतया संस्कृतिपरक बनाना। यदि ऐसी कोई भूमिका जमती न हो तो भगवान का स्मरण कर घर बैठे रहें।

याद रखें कि हमारी हत्या के लिए तैयार की जानेवाली छुरी की धार हमारे ही हाथों तेज बनवाई जा रही है।

## अरे, स्वराज्यवादीजन !

हिन्दुस्तान को स्वराज्य प्राप्त हुआ है, ऐसे भ्रम में न रहें। विश्व के सर्वश्रेष्ठ कूटनीतिज्ञ गोरे अधिकारियों ने, विश्व की काली, लाल और पीले वर्ण की प्रजा को नेस्तनाबूद कर देने के अतिदारूण और निर्दय कार्यक्रम का कई वर्षों पूर्व आयोजन कर रखा है। जहाँ बमवर्षा के द्वारा उन प्रजाओं का खात्मा हो सके, वहाँ सीधी बमवर्षा से काम लेते हैं। जहाँ आपसी फूट पैदाकर टकरा देने से काम चल सकता हो वहाँ दोनों पक्षों को शस्त्रों के विपुल भंडारो की भेंट देकर, आपस में लडा–झगडाकर खत्म कर देने का आयोजन है। जहाँ उस देश की संस्कृति के विनाश द्वारा, संस्कृतिभ्रष्ट हुई प्रजा का सर्वनाश हो सकता हो वहाँ संस्कृति–विनाशक खतरनाक व्यूहों को भारी युक्तिप्रयुक्तियों के साथ कार्यान्वित किये जाते हैं।

भारत की अति सत्त्वशाली एवं गौरवशाली प्रजा को खत्म करने के सभी उपाय आजमाये गये हैं। १७५७ के प्लासी के युद्ध से और १८५७ के स्वातंत्र्यसंग्राम के द्वारा उन गोरोंने जिंदादिल प्रजा की कमर तोड़ दी है। १८४७ से १८४७ के समय दरमियान पाश्चात्यप्रणाली की शिक्षा देकर सत्त्व का विनाश करनेवाली, पश्चिम के समर्थक बनानेवाली युनिवर्सिटीयों की प्रतिष्ठा कर, भारत के बहुसंख्यक लोगों को संस्कृति के घृणा करनेवाले और विदेशों के चाहक बनाकर, अव्यक्त रूप से धर्मान्तरित कर दिये हैं। ऐसे हिन्दू प्रजाजनों को तो, वे लोग बिना इसुखिस्त के खिस्ती कहते हैं।

अब यही अपने माने जाने जानेवाले लोगों को संस्कृति–विनाश का कार्य सौंपने के लिए ही, गोरे लोग १९४७ में भारत छोडकर चले गये। उसके अनन्तर ही संस्कृतिविनाश की रफ्तार तेज हो चली है। अब देश आजाद होता जा रहा है; लेकिन प्रजा बरबाद होती जा रही है। संस्कृति बरबाद हो रही है। आबाद होती आधुनिक अमरिका जैसी भारत की धरती, एक रोज उन्हीं गोरों के हाथ आसानी से जा पहुँचेगी।

अब बतायें, कि आपने स्वराज्य प्राप्त किया है या मौत के फँदे में जा फँसे हैं।

## अरे, समाजवादी लोग !

www.yogpradhan.com

आप लोग जहाँ–तहाँ समाजसुधार की ही बातें किया करते हैं; तब मुझे भी आपसे दो–चार बातें कहनी हैं। मुझे आपसे यह पूछना है कि, समाजसुधार की बातें करनेवालों के लिए, आर्यसंस्कृति की उत्तराधिकारी प्रजा के बीज के विषय में गहराई सोचने की आवश्यकता है या नहीं। यह बीज सड़ा जा रहा है। जल रहा है; उसकी कोई चिन्ता है क्या ? समाज-सुधारकों ने ही आन्तरज्ञातीय, आन्तरखंडीय लग्नों का समर्थन तो बड़े जोरशोर से किया है; लेकिन ऐसे लग्न करनेवालों के लिए एक हजार से लेकर पाँच हजार तक के इनाम भी घोषित किये गये हैं। अब ओ सुधार-वादीजनो, यह आप लोग सुधारने के नाम बरबादी का ही तो काम कर रहे हैं न ?'

उन घोडों और खच्चरों की औलादों का भी सुधार किया जाता है। गिर के शेरों की देखभाल की जाती है। वढियार की गायों की औलाद को तगडी बनाने की भरसक कोशिशें की जा रही हैं। रेसकोर्स के घोडे खरीदने-वाले, उसकी सातवीं पीढी की नानी के औलादके बारे में पूछताछ करते हैं और बाद में जाकर घोडा खरीदते हैं।

और आप लोगों ने मानव की औलाद के बारे में सोचना तक बंद कर दिया। उपर से वह बीज सड़–गलकर जल जाय, ऐसे नुसखे आजमा रहे हो ? इसे समाजसुधार कहेंगे ? याद रहें कि यह समाज की गन्दगी है जो आखिर में तमाशा बनकर प्रजा के मुँह को कलंकित करके ही रहेगी।

## अरे, धर्म के अंधश्रद्धालु लोग !

नये जमाने की शिक्षा पानेवाले आप लोगों को, धर्माचरण करनेवालों के प्रति इतनी घोर नफरत क्यों होती है कि धर्माचरण करनेवाले श्रद्धालुजनों की आस्था–श्रद्धा को, बात ही बात में 'अंधश्रद्धा' के नाम से अपमानित करते हो। आप जैसे चार आदमी इकट्ठे हुए नहीं कि आपका व्याख्यान शुरू और अंधश्रद्धा का जिक्र हुआ ही समझो।

www.vuppraphan.com

लेकिन शिक्षितजनों के लिए यह जरा भी शोभास्पद नहीं ! धर्माचरण न करना यह अलग बात है; लेकिन धर्माचार करनेवाले भक्तजनों के उपर अंधश्रद्धालु का दोषारोपण करना, यह हीन कक्षा का कार्य है ! आप जैसों को यह कैसे पसंद हो पाया है यही एक दुःखद आश्चर्य है !

विज्ञान का भूतकाल यह सुनाये कि उसके द्वारा संशोधित अनेक सत्य, हर पचास-सौ साल विज्ञान के नये आविष्कारों को आँखे मुँदकर पूरे अहो-भाव के साथे, स्वीकार नहीं कर पाते, उस समय आप पर कोई आक्षेप करे कि, ये पढेलिखे लोग अंधश्रद्धालु हैं। तो आपको क्या महसूस होगा ?

उपरान्त, इस दुनिया में श्रद्धा ही अंध है, ऐसा आप लोगों ने मान लिया है ? क्या अश्रद्धा भी अंध नहीं हो सकती ! वीतराग सर्वज्ञोंने प्रकाशित किये धर्मतत्त्वों के प्रति भाविक जनोंकी जो श्रद्धा–आस्था है, वह आपको अंधी नजर आती है ? ऐसा भी संभव है कि आपको उस धर्मतत्त्वके प्रति जो अश्रद्धा है, वही पूरी अंधापन लिए हो, यह शक्य है। आप तो ज्यादा

शिक्षित हैं, अतः सुज्ञेषु किं बहुना ? सूत्र में ही समझ लें। करना न करना; आपके हाथों की बात है; लेकिन उटपुटांग आक्षेप करने से पहले, उस पर गौर करे।

## अरे, प्रगतिवादी लोग !

मैं आपसे पूछता हूँ कि आपलोग प्रगति और आजादी की बातें किया करते हैं तो किन बातों की प्रगति हुई ? किन की आबादी हुई है !

जगद्गुशाह तो खोजने पर भी कहीं नजर नहीं आते ? दया में तो पीछा-हट की है।

सीताजी के तो दर्शन भी समाज मे दुर्लभ हैं। शील क्या पता कहाँ जा कर बस गया है ?

www.yugpradhan.com

शत्रुके दिलमें भी स्थान पानेवाले रामचंद्रजी की तो स्वप्नमें भी कल्पना असंभव है। भाई, भाई के गले घोटते नजर आते हैं।

अहिंसा के व्रतधारी सत्ताधीश कुमारपाल कहीं नजर नहीं आते ! अफसोस, बदले में चारों ओर कतलखानों का बोलबाला हो रहा है। तब तब विकास किसका और कैसा ?

ठीक है, याद आया। स्वार्थान्धता, क्रूरता, दुराचार, भ्रष्टाचार, रिश्वत-खोरी, धाकधमकी, डाँटडपट, हडतालें, धरने, आदि में भारी प्रगति हो चुकी है। कल्पनातीत बढ़ावा हो पाया है।

अफसोस ! पुरानी सारी चीजें फिकी मालूम हुई, तब आप लोगोंने जहाँ-तहाँ नये मोडल तैयार किये। उन्होंने पुराने मोडलों को बरबाद कर दिये।

गौशालाओं ने अपंग पशुशालाओं को खत्म की। व्रत–जपविहीन गेरुए कपडों ने संन्यासी–संस्थाको तहस–नहस कर दी।

स्कूलों ने धार्मिक शिक्षा पर पानी फेर दिया ! चलचित्रों ने शीलको बरबाद कर दिया। गौरवप्रदान करनेवाली संस्कृति को ही मूलसे उखाड़ फैंकी !

कहाँ जा फँसे हैं ! पाश्चात्यप्रणाली की शिक्षाप्राप्त आपके दिमागों ने यह कैसी विडंबना पैदा कर दी है ? पूर्व की ओर मुँह रखे खडे आपको किसी ने यकायक पश्चिमाभिमुख कर दिये। उसके बाद ही आपने दौड शुरू कर दी है। उस दोडमें प्रगति को आप प्रगति मान रहे हैं; तो ऐसी प्रगति आपको मुबारक हो, धन्यवाद !

## अरे, धर्म में व्यर्थ व्यय करने वाले ?

www.yugpradhan.com

मंदिर, मूर्तिनिर्माण, महोत्सव, उपधान या उजमणा आदि के पुण्य-प्रसंगों में होनेवाले धनव्यय में जिन्हें व्यर्थता दीख पड़ती है और ऐसे समय में जो गरीबों का बचाव करने या हामी बनकर खड़े हो जाते हैं; उनसे मुझे पूछना है कि आप लोगों को पान, बीड़ी, सिगारेट आदि के पीछे होनेवाला उपव्यय क्यों नजर नहीं आता ? पफ—पाउडर और लिप्स्टीक आदि के पीछे किए जानेवाले करोडों रूपयों में आपको व्यय की व्यर्थता क्यों नजर नहीं आती ! जिन्होंने भारतीय संस्कृति को तहस-नहस कर डाली हैं; ऐसे चल-चित्र, जीमखाने, नाइटक्लब, केबरेक्लब, केबरे डान्स और अशोक, ताज आदि फाइवस्टार होटलों में किए जानेवाले करोडों रुपयों के अपव्यय में कहीं व्यर्थता दृष्टिगोचर नहीं आती; क्या वहाँ अभ्युदय के ही चमत्कार नजर आते हैं; 'अप्सरा' थियेटर करोड़ों के व्यय द्वारा तैयार किया गया। 'क्लीयो-पेट्रा' नामक चलचित्र बीस करोड रूपयों के खर्च किये जाने पर तैयार हुआ है। 'मुगले आजम' ने भी करोडों का खर्च करा दिया है। इन सभी में कहीं आप को अपव्यय दीख पड़ता है !

जिस अवकाशयात्राको समूहमें मिलकर मुक्त कंठ से आप लोगों ने सराहा उसके खर्चके आँकडों पर कभी नजर डाली है ? उसमें कितने भूखों की क्षुधा-तृप्ति हुई ! फिर भी, उसके विषयमें अपव्यय का कभी जिक्र किया ?

नील आर्मस्ट्रोंग को टेलिविजन पर दिखाने के लिए ४९ राष्ट्रों को पचपन अरब डोलरों का खर्च हुआ।

तथाकथित चन्द्रलोककी धरती उपर १६० मिनट वह चल पाया; जिसमें १८० अरब रूपयों का खर्च किया गया ! उसने जो वेशभूषा धारण की थी, उसमें चौबीस लाख, छियासठ हजार रुपयों का खर्च किया गया था । और 'अपोलो–११' नामक यान तैयार करने में दो अरब और बासठ करोड रुपयोंका खर्च किया गया । यान को अवकाश में फैंकने का कार्य करने-वाला 'सेटर्न–५' १८ करोड डोलरों से बनाया गया ।

इस धरती के करोड़ों लोग भूखे मरते हों, तो उसकी उपेक्षा कर आकाश पर प्रभुत्व प्राप्त करने निकले वैज्ञानिकों को 'बेवकूफ' कहनेकी भी, आपकी तत्परता तक नहीं है ? और समग्र धरती के सर्व जीवों पर दया, अनुकंपा दिखाने का अनराधार उपदेश देनेवाले परमात्माकी याद देनेवाले मंदिरों और मूर्तियों में अपव्यय दिखाना है, क्यों भाई ?

अभी हालमें ही, गाँधीनगर में शासक काँग्रेसका अधिवेशन हुआ । कहा जाता है कि प्रतिदिन एक समय के भोजन करनेका उपदेश (!) देकर रंग–मंच परसे नीचे उतरे काँग्रेस प्रमुख आदिने उनके साथियों के साथ 'सात कोर्स' का भव्य भोजन किया । वह भी कम हो वसे रात को कहीं आयोजित किये गये समारंभ में 'बारह कोर्स' का भोजन किया इसमें आपको कहीं व्यर्थ अरे व्यर्थ व्ययवादी खर्च दिखाई नहीं देता ?

www.yugadhan.com

## अरे, परिवार नियोजक !

भारतीय हिन्दुओंकी आबादी को कम कर देने के पीछे आपका यही इरादा है न कि, 'यदि आबादी कम न की गई तो आबादी की वृद्धिका शैतान सारी प्रजा को खत्म कर देगा; क्योंकि उतनी विराट संख्यक आबादी को अन्न पहुँचाना ही मुश्किल है।

यह तर्क अत्यंत भ्रामक है। आप लोग भी यह बात न जानते हो; यह संभव नहीं। लेकिन लोकसेवा करनेकी महत्त्वाकांक्षा के सूत्रों के साथ सत्ता-लोभी आप लोगों ने समस्त प्रजाके साथ धोखा करनेका कुकर्म किया है; ऐसा मेरा मानना है।

www.yugpradhan.com

विदेशी मुद्रा की कमाई की ओट में आपने जानबूझकर इस देश की कई चीजों की निर्यात अन्य देशों में कर रहे हो और जनसंख्या की कटौती का विषपान जबर्दस्ती से करा रहे हो।

उपरान्त, में पूछता हूँ कि, क्या देश जनसंख्या की वृद्धि से बरबाद हो रहा है या जनसंख्या की कमी से ?

छोटे से छोटे क्लर्क से लेकर सत्ता के सर्वोच्च स्थान पर पदारूढ लोक-सेवकों के दिल और दिमाग धर्मभ्रष्ट हुए हैं; जिससे रिश्वतखोरी आदि तमाम राष्ट्रद्रोही अत्याचारों ने उनके दिलोंदिमागों को अपने वश में कर लिए हैं।

यदि आप अपनी दिलचोरी कर, जनसंख्या की कटौती का ही लक्ष्य रखेंगे और जनसंख्या की गुणवत्ता में सुधार की चिन्ता या परवाह ही न करेंगे तो भ्रष्टाचारी बनी केवल दो करोड़ की जनसंख्या भी, भारत के लिए खतरनाक सिद्ध होगी और संस्कारसंपन्न ऐसी दो अरब की जनसंख्या भी भारत के लिए बरबादी का कोई कारण बन न पायेगी। अब भी समझें, मौका हाथ में है और इस प्रजाद्रोह की कार्रवाई को तिलांजलि दे दें यही सही कार्य होगा।

## अरे, गरीबी-हटाव के समर्थक !

भारतीय प्रजा के रक्षक के रूप में रातों ही रात में यकायक प्रतिभा पैदा कर देने के लिए, इस सुशील प्रजा की भद्रता के साथ खतरनाक धोखाबाजी करनेवाले लोगों ने, 'गरीबी हटाव' के आकर्षक सूत्रोच्चार कर गद्दी पर कब्जा जमा दिया। कई साल बित गये, गरीबी हटने के बजाय दिनोंदिन बढ़ रही है। अरे, गरीब लोग हटे जा रहे हैं (मृत्युके द्वारा ही)।

भारत की प्रजा पर कोई भारी आपत्ति आ पायी हो तो, उसका कारण गरीबी नहीं; परन्तु सत्ता या संपत्ति के बलपर मदांध बने अमीरों की खराबियाँ ही कारणभूत हैं। उनके चित्त में व्याप्त वासनाएँ, उन के दिलोंमें पैदा हुई धनप्रतिष्ठाएँ, उनके खून की बूँद में व्याप्त क्रूर स्वार्थान्धताएँ उपरान्त पश्चिम के लोगों को, स्वयं ही सौंपे गये अपने दिमाग आदि ने ही उनके जीवन में खराबियों के ढेर खडे कर दिये हैं।

इसी कारण चारों ओर रिश्वत और भ्रष्टाचार फैल पडे हैं (बाद में गरीबों के हाथों में रोटियाँ तो पहुँच ही कैसे पायें।)

इसी कारण घर-घर में जातीय वासनाओं की होलियाँ जल पड़ी है (बाद में अगर धन भी कम महसूस हो तो, क्या आश्चर्य ?)

इसी कारण भारतीय जन का पश्चिमीकरण हो चुका है (बाद में आर्य संस्कृति के गौरवों की मंगल कथाएँ तो स्वप्न में भी दृष्टिगोचर कैसे हो पायें ?)

यदि भ्रष्टाचार, अत्याचार और पश्चिमपरस्ती की बुराइयाँ हट न पायेंगी तो वह गरीबी के सूत्रोच्चार के बहाने, गरीबों को जो थोडी-बहुत राहत दी जायेगी वह भी, 'खराबी हटाव' की अपेक्षा के कारण, गरीबी को बढ़ाने में ही सहायक सिद्ध होगी !

भारत के ओ बुद्धिमान आर्यजन ! अब बी मौका है, सावधान हो और मूल को पहचान कर, उसे दूर करने के प्रयत्नों में डट जायँ।

www.yogpradhan.com

## अरे बेकारी–समस्या के चिन्तक !

भारतीय प्रजाके जीवन को खतरनाक ढंगसे दबोचने वाला कोई कालमुखी अजगर समझा जाय तो वह 'बेकारी' ही माना जाय।

तथाकथित स्वतंत्रता प्राप्त हुई, उस समय अनपढ बेकारों को कार्यान्वित करने के लिए कई लाख रूपये अमानत में रखे गये थे। जब कि अब प्रतिवर्ष शिक्षित बेकारों के लिए करोडों रूपये भी कम महसूस होते हैं। वर्ष में पाँच लाख बेकारों को सरकार कामों में जुटा दे, वहाँ दूसरे नये पचास लाख बेकार नौकरी की लाइन में खड़े हो जाते हैं।

इस भयानक विषचक्र में यह सारी प्रजा फँसी हुइ है। बहुत तेजी से बेकारी का यह अजगर, लाखों के लिए मौत का संदेशा ला रहा है।

www.yugpradhan.com

सही बात यह है कि इस समस्या का सही निदान ही खोजा नहीं गया।

अंग्रेजों के शासन के समय में क्लर्क की नौकरी के लिए मनुष्य को खोजना पड़ता था ! और आज क्या हालत है ?

क्यों यह उलटी गंगा बहने लगी ?

हमारे यहाँ व्यापारी का लड़का बिना बी. काम. हुए ही पिताकी दूकान पर बड़े आराम से बैठकर दूकान चलाने लग जाता। मोची का लड़का पैतृक व्यवसाय में ही मग्न रहता। बढई का लड़का बढईगीरी ही करने लगता है। सभी अपने अपने पैतृक व्यवसायों में डटे रहते। बीज में से ही संस्कार और व्यावसायिक विरासत प्राप्त हो जाती। और बडों के अनुभव द्वारा ही वह ज्ञान प्राप्त होता। अतः अनपढ को भी बेकार नहीं रहना पड़ता था।

अब उसी बीज को बिगाड़ दिया। वंशपरंपरा को तोड़ दी। अतः पैतृक व्यवसाय छोडकर जिन्होंने नया धंधा प्राप्त किया या नौकरी प्राप्त की उनका उद्धार हो गया; लेकिन जिन्हें कुछ प्राप्त न हुआ; वे दोनों ओर से लटक गये।

बेकार बने । ऐसे करोड़ों बेकारों में से कतिपयों को कार्यान्वित करने के लिये, बड़े बड़े शहरों में ज्यों ही कोई एकाध फैक्टरी या कारखाना स्थापित किया जाता है तो लाख–दो लाखों को काम मिल जाता है; त्यों ही दूसरे पचास लाख आदमी अपना पैतृक व्यवसाय छोडकर उन कारखानों में प्रवेश पाने के प्रयत्नों में लटक जाते हैं और बेकार बन बैठते हैं । इस प्रकार प्रत्येक उद्योग-साहसिकने कतिपयों को रोजगारी दी और कइयों को बेकारी की भेंट दी । इस प्रकार भयानक विषचक्र प्रवर्तमान ही रहता है ।

संक्षेप में हम कह सकते है कि, जितनी शिक्षितों की संख्या है, उतनी ही बेकारों की है । क्योंकि, इसी शिक्षाने ही वंशपरंपरागत व्यवसाय छुडाने का अत्यंत अपराधजनक अधमाधम कार्य किया है ।

www.yugpradhan.com

## अरे महँगाई–चिन्तक लोग !

दिन दुगुने–रात चौगुने बढ़ते हुए रोजमर्राकी चीजों के भावों का आंक को कोई रोक पाता नहीं । सामान्य जनता तो अब रोटे के साथ मीर्च भी खाने के लिए समर्थ नहीं रही । मानों चीजवस्तुओं के भावों ने एकदूसरे को पार कर जाने की स्पर्धा शुरू की हो ?

तथाकथित राजनीतिज्ञ, तथाकथित अर्थशास्त्री भी इसके बारे में कोई हल ढूँढ नहीं पाये । लेकिन कभी कभी सोचता हूँ कि चीज–वस्तुओं का निर्यात कर, उसके द्वारा विदेशी मुद्राकी प्राप्ति की भयानक तत्परता के प्रति सामान्य जन विद्रोह खड़ा क्यों नहीं कर पाते ?

यदि अन्न के अभाव के कारण लाखों आदमी भूखे–प्यासे मरते हों, तो क्यों हजारों टन अनाज के निर्यात द्वारा, विदेशी मुद्राप्राप्ति को तत्परता छोड दी नहीं जाती ?

सभी जानते हैं कि प्राप्त विदेशी मुद्रा द्वारा टी. वी. सैट्स, ट्रान्सीस्टर, रेडियो, विदेशी घडियाँ, इलेक्ट्रोनिक्स केल्क्युलेटर्स आदि प्राप्त किये जाते हैं या तो कत्लखाने जैसे उद्योगों के लिए यंत्रसामग्री प्राप्त की जाती है। लेकिन प्रश्न तो यह खड़ा रहता है कि भूखा आदमी, आपके टी. वी. सेटको मुँह में भर चबाने लगेगा ? क्या कतलखाने की मूक प्राणियों की क्रूर हिंसा के करुण निःश्वास, प्रजाको सुख–चैन की साँस लेने देंगे। तो फिर किसके लिये अन्नादिका निर्यात किया जाय ? किसके निमित्त विदेशी मुद्राप्राप्ति की यह खतरैल धून जारी रखी जाती है ?

लेकिन अफसोस, क्रूरता और मलिनता के सर्वोच्च शिखर पर पहुँची यूरपी प्रजाके दिलों की धोखाबाजी को हमारी प्रजा परख नहीं पायी। भीषण महँगाई का सर्जन करने के लिये ही निर्यात और विदेशी मुद्रा के दो फंदे उन लोगों ने तैयार किये हैं। भारत में से अन्न, केले, आम, मूंगफली आदि तमाम खाद्य तत्त्वों को लाखों टनों के प्रमाण में खरीद कर दरिये में फेंक देने तक तैयार हैं, क्योंकि कृत्रिम महँगाई के चक्रों को तेजी से चालू करने के लिये और उसके जरिये भारतीय प्रजाका सर्वनाश करने के लिये वे उतारू हो चुके हैं।

www.yogpradhan.com

## अरे ज्ञातिवाद–विरोधी जन !

भारतीय प्रजा का जीवन एक–दूसरे के अकेले भेद में भी न था; वैसे केवल अभेद में भी न था। उसका जीवन भेद में रह कर भी अभेद की आराधना का था।

एक पिता के चार लड़के हैं। बडे होने पर, पिता स्वयं चारों को बड़े प्यार से योग्य व्यवसायों में जोडकर, ज्यादा आमदानी करने लगे, तब वहाँ जैसे उनका पारिवारिक जीवन, भेद में अभेद की साधना करता है, वैसा समस्त भारतीय प्रजा का जीवनस्तर था। अतः एव भिन्न भिन्न अनेक ज्ञातियाँ

थीं। उसका मुख्य कारण, एक दूसरे के बीज में एक दूसरे का प्रवेश निषिद्ध था और अरसपरसके व्यवसायों में अप्रवेश था। इस प्रकार वर्णसांकर्य और वृत्तिसांकर्य न होने के कारण, ज्ञातियोंके अनेक भेद–उपभेदों में भी, एकता की भावना से यह प्रजा बड़े चैन से जीवनयापन करती थी।

आज ज्ञातिवाद पर तो, पूरी ताकत लगाकर शेर की तरह, सत्ताधीश, धनिक और बुद्धिजीवी टूट पडे हैं। ज्ञातिप्रथा के उच्चतम हितों को ध्यान में न लेने से, धिक्कारवृत्ति की विषैली भावना पैदा हो चुकी है। अस्तु,

लेकिन मैं इन लोगों से यह पूछना चाहता हूँ कि ज्ञातिप्रथा को तिरस्कृत करनेवाले आप लोगोंने, राजनीति का खतरनाक सत्तावाद क्यों पैदा किया है? उसे क्या समझेंगे? साम्यवादी, जनसंघवादी, कांग्रेसवादी, सभी एक दूसरे को किस हद अछूत मानने लगे हैं? आपने धनिकता का खतरनाक नशावाद पैदा किया है? उसके बारे में क्या कहेंगे! भ्रष्टाचारों से सड़ा भोगवाद पैदा किया है, उसे क्या बताये? आपमें से किन के दिलों में सही राष्ट्रवाद, सही प्रजावाद, सही संस्कृतिवाद जीवित रह पाया है? मुझे जरा दिखलाये तो सही!

क्या आप सत्ताधीशों ने, सत्ताहीनों को निकृष्ट अछूत नहीं मानें?

क्या आप धनिकों ने, घर के आँगन में आये गरीबों के पीछे कुत्ते नहीं दौडायें? गालियों की बौछार नहीं लगायी?

क्या आप रिश्वतखोरों ने, नीति–प्रामाणिकता से काम करनेवाले लोगों को चुनचुनकर, आपके वर्तुलों में से बाहर उठा नहीं फैंके?

धन्यवाद है उस प्रजा को, जो सत्ता, धन, न्याय से हीन होने पर भी, आपके विरूद्ध बिना सर उठाये चुप्पी साध बैठी रही है और प्राचीन परंपराओं को आज भी सुरक्षित बनाये बैठी है। यदि यही प्रजा आप के विरुद्ध विद्रोह पैदा कर दे तो, आप लोगों की कैसी करुण और दारुण स्थिति हो, उसकी कल्पना करते ही, मेरे रोंगटे खड़े हो जाते हैं!

www.yogpradhan.com

## अरे, धर्म को अफीम समझनेवाले !

जो लोग तप–त्याग नहीं कर सकते, उनसे शीलरक्षा कभी नहीं हो सकती, दान कभी कर नहीं पाते । पदार्थ जिन्हें सिद्ध न हो, ऐसे लोगों को तप, त्याग, शील आदि के पाठ पढ़ानेवाला सक्रिय धर्म पसंद न आये, यह बिलकुल स्वाभाविक है । इतना ही केवल होता तो भी पर्याप्त था; लेकिन उन लोगों को ऐसा धर्माचरण करनेवाले धार्मिकजनों के प्रति भी घृणाभाव होता है । अतः एव प्रतिदिन देवपूजा, गुरुवंदना, तप–त्याग आदि धर्मों का चुस्ती से पालन करनेवाले लोगों को, वे 'अफीमची', 'नशेबाज' आदि अधम विशेषणों से संबोधित करते हैं ! यह कैसा अजीब जमाना आ पाया है कि अपनी कल्पना से अलग सुंदर जीवन यापन करनेवाले धर्मीजनों के लिये, 'अफीमची' 'नशेबाज–नशाखोर' आदि आक्षेपात्मक शब्दों से व्यंग किया जाय – मजाक उडाया जाय ! कैसा अफसोसजनक है इनका वाणी–स्वातंत्र्य ।

www.yugpradhan.com

लेकिन इन धर्मद्वेषी लोगों से मुझे इतना अवश्य पूछना है कि, आप लोगों को भोग–वासना का जो व्यसन बन पाया है; अच्छे और संतोषी सज्जनों को उचककर फेंक देने के जो दुर्व्यसन लगे हैं; भाषणों में बिना समझे ही आप लोगों को समाजवाद का जिक्र करते रहने की जो आदत बन पडी है बात–बात में पश्चिम के विकास, प्रकाश, उन्नति के ही गुणगान (खुशामतखोरी) की लत पडी है, और भारतीय परंपरा एवं उसे धिक्कारने की वृत्ति का जो अविनाभाव संबंध खड़ा कर दिया है, उन सारी बातों के लिये हम यदि 'नशेबाज' का तखल्लुस आप लोगों को सप्रेम समर्पित करें तो आप बुरा तो न मानेंगे ?

आप लोग भोगवाद के चुस्त व्यसनी नहीं ?

क्या आप हमारे इस प्रति–आक्रमण को सह सकेंगे ?

पुण्यवंतो ! यह केवल आपको सावधान करने का विचारमात्र है । गाली-गलौज की भाषा का हमें अभ्यास नहीं । लेकिन बिना माँगी सीख दिये बिना हम रह नहीं पाते कि बिना जाने–बूझे, धर्मीजनों का मजाक उडाना छोड दें, उसी में आपका भला है ।

## अरे, हरे कृष्ण की धून में अभ्युदयदर्शक !

सर पर चोटी, गले में माला, हाथों में मंजीरे, शरीर पर गेरुए वस्त्र धारण कर, भारत के बड़े बड़े शहरों में राजमार्गों पर विचरण करनेवाले 'हरे कृष्ण हरे राम' की धून मचानेवाले यूरपी लोगों को देखते ही, कई लोगों को वैदिक धर्मों का अभ्युदय दीख पड़ता है । लेकिन ऐसे लोगों से मुझे कहना है कि यह आपका भ्रम है । यदि उस भ्रम को सत्वर दूर न किया तो, वही भ्रम आपके वैदिक परंपरा के धर्मों को ही उखाड फैंकेगा ।

www.vinpradhan.com

मेरा तो यह स्पष्ट मानना है कि, विश्वभर में एक ही ईसाई धर्म को कायम करने के लिये–धूर्तविद्या में निष्णात गोरी प्रजा के धर्मान्ध लोगों ने, भारतीय धर्मों में इस प्रकार प्रवेश कर, भीतर से उन धर्मों को तहस–नहस कर देने का व्यूह तैयार किया है । हरे कृष्ण मंडलियाँ, इसी व्यूह का एक छिपा अंग है ।

प्राचीन परंपरा के गेरुए वस्त्रधारी भारतीय साधुसंतों की अपेक्षा, बाह्य रूप में ज्यादा स्वच्छ सुवांग बनकर ( बनठनकर ) कई गोरे लोग गेरुए धारण करे और पच्चीस वर्षों के बाद, वैदिक संस्थाओं पर प्रभुत्व कर लें । बाद में आन्तरराष्ट्रीय सर्वधर्म परिषदों में, वैदिक धर्मों के प्रतिनिधि के रूपमें वे ही वहाँ उपस्थित हों और आरंभ में वैदिक धर्म के चुस्त अनुयायी के रूप में दिखावा भी करें; अवैदिक धर्मों का खण्डन भी करें; लेकिन आखिर में बहुमत

की ताकत के सामने जान–बुझकर, झुक कर लघुमत होने से विरोध करना बेकार है, ऐसी बातें करेंगे ।

अन्त में ऐसी धर्मपरिषदों में ऐसा प्रस्ताव रखा जाय कि–'दुनिया को इतने सारे धर्मों की क्या आवश्यकता है ? एक ही धर्म की प्रतिष्ठा करें, जिससे सुखशान्ति से सभी जीवनयापन करें और धर्माधर्मों के व्यर्थ झगड़े मिट जायँ ।"

सभी उसका समर्थन करे । सभी अपने ही धर्म को स्वीकृत कराने के प्रयत्न करे । आखिर मतदान किया जाय और भारी बहुमत के जोर पर ईसाई धर्म विश्वधर्म के रूप में पुरस्कृत–प्रतिष्ठित हो जाय ।

वैदिक धर्मों में प्रविष्ट गोरे गेरुएधारी लघुमत में रहकर, लोकशासन की प्रणाली अनुसार उस प्रस्ताव का स्वीकार कर लेंगे और इस प्रकार शेष अन्य धर्म नामावशेष रह जायेंगे ।

www.yogpradhan.com

सावधान, भारतीय धर्मों के अध्यक्षगण ! एकसूत्रता पैदा करें । संवाद साधकर, मत–मतान्तरों को भूल कर, इस धर्मध्वंसी झंझावात के विरूद्ध एक बनें, मतैक्य पैदा करें ।

## अरे, भोलेभाले भारतीयजन !

बादशाह बाबर के जमाने से इस देश की हालत गिर चुकी है । अपने ही धर्म और वर्ण को जगत में जिन्दा रखने की घातक महत्त्वाकांक्षा–सेवी गोरोंने इस देश की धरती पर पाँव रखा । हिन्दुस्तान के चक्रवर्ती राजा, मेवार के राना सांग के साथ बाबर को टकरा दिया, तोपों की सहायता की और बादमें लगातार लड़ाते–भिडाते ही रहें । मैत्री के ओट में भी टकराने ही लगे । तोपों की सलामी देकर भी राजाओं को खत्म करते चलें । आक्सफर्ड,

कैम्ब्रीज आदि में राजकुमारों को पढ़ाने के आयोजन का दिखावा कर राजवंश का भी समूलोच्छेद करते रहे ।

आखिर में राजा नाम नष्ट हुआ । वर्षासन भी खत्म हो गये, बंद किये गये ।

जगत सेठ और भिन्न भिन्न महाजनों के अग्रगण्य सेठों के सुआयोजित ढाँचे के आधार पर चलनेवाली हिन्दुस्तान की अर्थव्यवस्था को भी लोगोंने तहस–नहस कर दी । आक्षेपों की बौछार कर सेठशाही को उखाड दी । सेठों की छटमार की । कौमवाद के नाम लड़ा–कटवा दिये । अन्त में व्यापार तहसनहस हो गया । व्यापारी लोग भूखों मरने लगे । अरे मेरे भोलेभाले भारतीय बंधु ! अब भी आप भ्रम में पड़े रहे हैं ! खैर, राजाओं और व्यापारियों को खत्म करने में आप लोग मददगार हुए थे, लेकिन अब याद रखें कि 'सहकारी कृषि' के नाम किसानों का भी अब विदा–समारंभ निकट है । कृषि विषयक विदेशी निष्णात, अपने विशालकाय ट्रैक्टरों की सहायता से ५०–६० मीलों के एक–एक खेत में कृषिकार्य में जुट जायेंगे । इस प्रकार जिस दिन कृषिप्रधान भारत की प्रजा के हाथों से कृषिकार्य छिन लिया जायेगा, उस दिन यह सारी प्रजा मृतप्रायः बन कर रह जायेगी !

www.yugpradhan.com

## अरे ओ धर्माचार्य !

गरीबी, महँगाई और बेकारी के दारूण दुःखों की चक्की में भारतीय प्रजा करूण रूप से पीसी जा रही है । परिवार नियोजन, चलचित्र, लग्नविच्छेद, गर्भपात और आंतरजातीय लग्न आदि पारावार पापों का अजगर उस प्रजा को ग्रस रहा है । ऐसे समय प्रजा के समक्ष सही बातें पेश करने के लिये आप उपाश्रयों में से बाहर नहीं आ सकते ? जिन जिन दिनों में मुसीबतों के

बादल, इस प्रजा पर मँडराये हैं, उन उन दिनों में हमारे पूर्वजों ने कुरबान होकर, इस प्रजा की पूरी रक्षा की है।

आज आप लोग इस प्रकार चुप्पी साधे क्यों बैठे रहे हैं? तथाकथित स्वराज्य प्राप्त हुआ, उसी समय स्वराज्य के बहाने रहा प्रजानाशक व्यूहको समझा देने की आवश्यकता थी। आप लोगोंने उसकी उपेक्षा की; परिणाम स्वरूप मोक्षप्रधान चार पुरुषार्थमय संस्कृति का हमारा पवित्र–संगठन नेस्त-नाबूद हो गया और उस पुरुषार्थ का जरा भी जिक्र नहीं करनेवाले पाश्चात्य ढंग का संविधान, भारतीय प्रजा के गले, फंदे की तरह फँसा दिया।

उस बात को आज सताईस साल हो चुके। संतशाही चल बसी। संस्कृति नामशेष रह गयी। प्रेम, परार्थ और करुणा के सोते सूख गये। त्याग, तप, और तितिक्षा के संदेश भुला दिये।

www.yogpradhan.com

संस्कृति के जल से दूर फैंकी गयी, जल से स्वतंत्र की गयी यह भारतीय प्रजारूपी मछली कब तक जी पायेगी।

धर्माचार्य, अविलंब आप दुनिया के बीच आएँ। अपनी, जीवन की, सुख और शान्ति की बिना परवाह किये, आप इस प्रजा के राहबार–पथदर्शक बनें; नहीं तो कलंक का काला टीका लगा ही है।

## अरे, अवकाशयात्रापरस्त लोग !

एक बड़े जोरशोर से अखबारों में जिक्र किया जाता था कि, '७२ के साल में अमरिका का प्रथम मानव, चंद्रलोक पर अपना स्थायी निवास करेगा। सैकड़ों 'सरदारजी'ओंने चंद्रभूमि पर आँके गये प्लोट (सचमुच वे प्लोट भी एक प्लोट (षड्यंत्र) ही था।) भी खरीद लिये।

और अब हालत क्या है ? '७२ की साल में ही अपोलो की चंद्रयात्रा बंद कर दी गयी है और केवल 'स्कायलेब' को ही अवकाश में छोडने का कार्यक्रम बाकी रखा ।

यूरपी लोगों की विराट सिद्धियों (!) रूपी साँप के सामने विश्वभर का प्रजारूपी मेढ़क बेचारा कैसा सहमा-सा रह गया है कि अपनी मौत सामने मुँह फाडे खडी है; फिर भी उसे कुछ सूझ ही नहीं रहा ।

कितना भारी ब्रेइन-वोशिंग चल रहा होगा ? कितना अजीब वशीकरण किया जाता होगा कि जिससे अत्यंत शिक्षित माने जानेवाले लोग भी, अपने शत्रुको, शत्रु के रूपमें देखने से इन्कार कर दें, इतना ही नहीं, उसे कोई शत्रु मनाये तो कहनेवाले से मुठभेड़ करने पर उतारू हो जाय ।

www.yugpradhan.com

वास्तव में उस चन्द्रयात्रा की ओट में, उन लोगोंने अवकाश में चारों ओर जासूसी-उपग्रह चालू कर दिये हों, ऐसा महसूस होता है । लोग, चन्द्रयात्रा के भ्रम में पड़े रहे और उपग्रह गतिशील बनाये रखने का कामकाज पूरी युक्ति-प्रयुक्ति से चलता रहे । राष्ट्र की भूमि के कोने-कोने की जानकारी, वे उपग्रह प्राप्त करते रहें । फिर तो जब चाहे तब समस्त एशिया खंड का सर्वनाश, टैनिस के खेल खेलते ब्रेजनेव-निक्सन ( जानी दोस्त ) कर दें !

## अरे, रचनात्मकार्य-समर्थक !

मोक्ष, सद्गति, समाधि, शान्ति और सौजन्यकी प्राप्ति के उद्देश को पार करने की बातों का हररोज हम लोग पारायण करते हैं; और उत्तम रचनात्मक कार्यकर होने का-कहलाने का अधिकार रखते हैं; फिर भी, हमारी कतिपय बातों को 'खंडनात्मक' बताकर, उनकी टीका करनेका, बुद्धिजीवियों में एक-फैशन सा चल पडा है; यह सचमुच बडी दुःखद स्थिति है ।

हम लोग निरोध, नसबंदी, लग्नविच्छेद आदि पापाचारों का खंडन करें, उससे बुद्धिजीवी लोग, नाक भौं सिकुडते है और लाक्षणिक अभिनयसे दो–चार आदमियों से कहेंगे कि–"महाराजश्रीका अभिगम खंडनात्मक है !"

धन्यवाद उन्हें ! क्या वे यह चाहते हैं कि मैं अग्निज्वाला से पापाचारों को उत्तेजन देने जैसा (आग में पैट्रोल छिडकने जैसा) रचनात्मक काम करूँ ?

सावधान ! निरोधादि पापों का खंडन करना, यह भी वास्तव में तो हमारा रचनात्मक कार्य ही है; क्योंकि यह तो खंडन का खंडन है। खंडन के खंडन को हम पूरे रूप में मंडनात्मक समझते हैं।

देखें – शीलरक्षा का रचनात्मक कार्य, महासंतों ने जगत के सामने कर दिखाया; उसका खंडनका अर्थ हुआ निरोधादि साधनों का मुक्त उपयोग ही।

अब शील को खत्म करनेवाले निरोध का हम विरोध करें तो उसका मतलब खंडन का खंडन मंडन ही हुआ। उपरान्त हमें यह कभी पूछे ही नहीं कि आप कुछ रचनात्मक कार्य कर दिखायें ? केवल निरोध का खंडन ही किया करते हैं ? वास्तव में शीलरक्षाका रचनात्मक कार्य तो, महासंत दर्शा ही गये हैं।

हमें अब 'नया क्या' रचनात्मक काम कर दिखाना रहा है ?"

संस्कृति के प्राणवान तत्त्वों का खंडन करनेवाले तत्त्व रचनात्मक और उनका खंडन कर, प्राणवान रचनात्मक तत्त्वोंकी पुनःप्रतिष्ठा के लिये होहल्ला मचाकर 'सावधान !' पुकारनेवाले हम लोग खंडनात्मक मानव ? मानव, तुम्हारी अजीब बुद्धिको हमारे धन्यवाद हैं !"

www.vijaydaan.com

## अरे, रूढिशत्रु !

यदि इस प्रजामें कोई, मनुष्य, कोई साधु–संत, कोई संन्यासी, रूढिगत परंपराओ का चुस्ती से पालन करे तो उसके ऊपर मुसीबतों के बारह मेघ एक साथ टूट पडते हैं। चारों ओर से व्यंगवचनों की मार शुरू हो जाती है। स्कूल–कालिजों की शिक्षा का एक दुष्परिणाम यह आया है कि, उस शिक्षित वर्ग कि वासनाओंने, जीवन की निश्चित मर्यादाओं का पूरा उल्लंघन कर दिया है।

एक भी मर्यादा–अरे वस्त्रपरिधान की मर्यादा भी, मानों उसे सैंकडों कीड़े एक साथ चटक रहे हों, ऐसी अकुलाहट पैदा करती है। इसी लिये मर्यादाओं को ही अपना मूलाधार समझानेवाली पारंपरिक रूढिओं के प्रति उनके मन में भारी नफरत है !

जिस प्रजाकी रूढिओं में शील, न्याय, नीति, लज्जा, त्याग और समर्पण आदि थे, उसी प्रजाके उत्तराधिकारी उन हितसाधक रूढिओं के विरुद्ध विद्रोह करने पर उतारु हो चुके हैं। हों, यदि उन रूढियों में माँ–बहनों की बेइज्जती की संभव हो, गरीबों की लूट होती हो, नीतिमानों के प्रति नफरत पैदा होती हो, उदार जनोंकी भरपेट निंदा होती हो, सदाचारियों की कटु आलोचना होती हो, तो वे रूढियाँ अवश्य तिरस्कारपात्र बन पातीं !

अफसोस, सुन्दर और समुचित रूढ़ियोंका विनाश कर, अपने अनाचार, भ्रष्टाचार, अन्याय रिश्वतखोरी, बदमासी, प्रजाद्रोहिता आदि भयंकर पापों के 'सुधारवाद' की ओट में, महफिलें उडायी जाती हो तो मर्द लोग ! पीछेहठ न करें, प्रभावित न हो, व्याकुल न हो; लेकिन पूरे जोस के साथ उस तथा-कथित सुधारवाद के विरुद्ध अवश्य विद्रोह खड़ा कर दें और पवित्र रूढ़ियाँ के प्रखर समर्थक बनकर जिंदा रहें !

www.yugpradhan.com

## अरे, सामूहिक आत्महत्याप्रेमी !

बुद्धि का लेशमात्र उपयोग न करना, शरीर का ऊपरी भाग दूसरों के हाथों किराये पर दे देना, उत्तरदायित्वपूर्ण जीवन से पलायनवाद करना, यह हिन्दुस्तान के आदमी का जीवन है क्या ?

इस देश के आदमी के दिल और दिमाग दोनों सलामत हों। किसी के बहकावे में बहक जाय ऐसा भोलाभाला इस देश का आदमी हो सकता है भला !

क्या हुआ है इस आर्यजन को ?

उसने भला कब से गतानुगतिक जीवन पसंद किया है ? उसने कब से प्रत्येक बातको सूक्ष्म और दीर्घदृष्टि से सोचना बंद कर लिया है ?

www.yogadhan.com

युग प्रवाह में वह क्यों खींचा जा रहा है ? भेडियाधसान में वह क्यों फँस गया है ?

यह तो पामर जीवों का जीवन है। बेचारी चींटी, घीसे लगकर मरी, एक मरी, दूसरी मरी, तीसरी भी मर जायेगी। कुछ भी सोचने ठहरेगी नहीं।

बेचारा भेडिया ! एक के पीछे दूसरा भी कुँए में गिरता है ! वह जरा भी रुकेगा नहीं।

मानव का भी जिम्मेवारियों में से छटकना समूचे मानव–समुदाय का पतन ला देता है।

युगवाद की मुलायम चदर ओढकर आराम से सो जानेवाले मानवों ने सारी जिम्मेवारी किसी के सर पर धर दी है।

अब वह कहता है :– गर्भपात, लग्नविच्छेद, व्यभिचार, अनीति या रिश्वतखोरी आदि हम करते ही रहेंगे। जो सभी का होगा, वही हमारा भी होगा। यदि सभी मरेंगे तो हम भी मरेंगे।

अफसोस, अन्तिम १५० साल की पाश्चात्य शिक्षाने आर्यजन को किस हद तक खुदकुशी करने के लिए उतारू बना दिया है ।

नहीं दीख पडती कहीं क्रान्ति की ज्वलित ज्वाला; जो चंद दिनों में आग—आग बन जाय ।

न थी कहीं प्रोज्ज्वल चेतना, जिससे व्यक्तित्व प्रफुल्ल हो उठे ।

सामूहिक आत्महत्या ही मानों सभी शिक्षितों का प्रिय स्वप्न बन पाया है !

## अरे, अग्रणी जन, होशियार बनें !

www.yugpradhan.com

उस्ताद गवैया, उस्ताद क्रिकेटर, उस्ताद नृत्यकार और उस्ताद राजनीतिज्ञ ।

उस्ताद किन क्षेत्रों में दीख नहीं पड़ते । उनके जैसों को तो स्वात्म-कल्याण में ही जीवन गुजार देना चाहिए ।

जो परार्थ की छोटी बड़ी प्रवृत्तियों करते है; उन्हें तो सर्वाधिक निष्णात बनना चाहिए, ऐसा मेरा दृढ मन्तव्य है ।

देशकाल के प्रवाहों में इतना तेजी से परिवर्तन आ पाया है कि यदि प्रतिपल उनका गौर करते न रहे तो अग्रणी जनों के हाथों भारी नुकसान होने की संभवितता पैदा हो जाय ।

जैसा बोल क्रिकेट का वैसा ही बैट्समैन का स्ट्रोक ! पीच पर बोल के गिरते ही, मिनट के सौमें भाग में बैट्समैन को तुरंत निर्णय कर लेना पड़ता है कि बोल को किस दिशा में, किस ढँग से फटकारा जाय । ऐसे तत्काल निर्णय करने में जो काबिल हो, वही क्रिकेट खिलाडी विश्वभर में नाम कमा लेता है ।

प्रत्येक बोल को एक ही ढंग से पीटा जाय तो बैट्समेन दो आँक के रन भी कर न पायें।

विशेषकर, धर्माग्रणियों को तो उस्ताद हो जाने की समय की माँग है। घोंघे की तरह जडतामय नीति, प्रत्येक आक्रमण के समय आजमाने पर, भारी मुसीबत के दिन देखने मिलेंगे।

किस द्रव्य, क्षेत्र, काल और भावमें क्या करना उचित होगा, क्या अनुचित होगा ? उनके त्वरित निर्णय धर्म के अग्रेसरों को पूरी चालाकी के साथ लेने चाहिए। यदि वे उस मौके को चुक गये या युक्ति–प्रयुक्ति से काम नहीं लेंगे तो, उनकी गलतियों को, भावि प्रजा कभी क्षम्य न करेगी।

ऐसी सुंदर उस्तादी उन धर्म के अग्रणियों में ही आ पायेगी; जो सीमा के रक्षा करनेवाले सैनिकों की तरह, सदा पलटते प्रवाहों की ओर चौकन्नी नजर लगाये रहेंगे। जो फायरब्रिगेड के कर्मचारियों की तरह प्रतिपल चौकन्ने रहते हैं। आपसी समस्याओं को गौण स्थान देने की हिम्मत जिनके दिलों में भरी पूरी होगी।

अरे अग्रणी जन ! आपके प्रति समग्र आर्यप्रजा की नजर, बडी आश लगाये टिकी हुई है। आप किस व्यूह को आजमायेंगे ? कौन–सा मार्गदर्शन देंगे ? यह समझने के लिये सभी उत्सुक है। प्रजा का जीवनाधार आपके हाथों है, उस बात को आप कभी न भूलें।

## अरे, धर्म में एकतावादी जन !

हर समय सभी धर्मों का ऐक्य सिद्ध करने की आप जो बातें करते हैं; वह आजकल का शोरगूल नहीं है। भूतकाल में भी बादशाह अकबर और राजा भोजने भी ऐसी निष्फल कोशिशें की थी।

लेकिन जिसका मूलाधार ही गलत हो, उसमें कभी सफलता प्राप्त नहीं होती। ऐसे प्रयत्न जीवन के अमूल्य समय और बुद्धि–शक्ति की बरबादी के सिवा और कुछ हासिल नहीं कर पाते।

सही बात यह है कि आर्यावर्त की प्रजा की रुचियों में वैविध्य है। किसी की रुचि तप–तपस्या में, किसी की त्याग में, किसी की शील में, किसी की मानवता में तो किसी की वीतरागिता में लगी रहती है। जब रुचिवैविध्य है तो तब उन सभी के लिये एक ही नियम हो, यह कभी संभव नहीं।

घर में सात आदमी हों, तो खाना, पीना, ओढना, घुमना, फिरना आदि बातों में विविधता दीख पड़ती ही है। क्या सभी को रोटी पसंद होती है? किसी को रोटा पसंद नहीं होता? क्या कभी भी एक नियम लागू कर काम निकाला जा सकता है?

तो फिर धर्म के बारे में ऐसा दुराग्रह क्यों? हाँ, सभी धर्मों के सर्व-सामान्य नियमों का समन्वय कर, उसे एक धर्म के रूपमें स्वीकृत किया जाय; लेकिन ऐसा करने पर प्रत्येक धर्म की अपनी निजी जो विशेषताएँ हैं; उनका त्याग ही करना पड़े। और ऐसा होने पर तो प्रत्येक धर्म को मौलि-कता ही नष्ट होकर रह पायेगी।

उपरान्त आजकल तो बहुमत शासन का एक विचित्र युग का प्रचलन है। बहुमत के आधार पर तो एकमात्र ईसाई धर्म का ही लोगों को स्वीकार करना पड़े। केवल स्थूल और स्वार्थी कही जानेवाली मानवता को ही अपनानेवाले धर्म का स्वीकार करने में, विशिष्ट स्वरूप के मोक्षलक्षी आर्यधर्मों के अनुयायी लोग, जरूर हिचकिचायेंगे।

वास्तव में आर्यधर्मों की विविधता में ही एकता निहित है। भिन्नता में ही अभिन्नता स्थित है। विषमता में ही समता विद्यमान है। अतः ऐसी एकता के लिए सरेआम ढोल पीटने की जरूरत ही नहीं। ऐसी विनाशक व्यूहबाजी में कोई न फँसे।

www.yugpradhan.com

## अरे, प्रभु के शरणागत जन !

भगवान के मंदिर में मंजीरे–करताल बजाने से या प्रभु के नाम की केवल धून लगाने से या प्रभु का आँगी शृंगार करने मात्र से प्रभु के शरणागत बने रहने का दावा नहीं किया जा सकता। ऐसा करनेवाले को प्रपंची ही कहा जाय।

प्रभु की सही शरणागति किसे कहेंगे ? उपरोक्त क्रियाएँ करने में सही शरणागति का स्वरूप दीख न भी पड़े ऐसा पूरा संभव है।

सही शरणागति, बिना भय के, कभी संभव नहीं।

दोस्तों के साथ बच्चा धूलमें खेलता हो तब रसोई पकाती माँ उसे बुलाती है; तो भी खेलकूद में मशगूल बच्चा उसकी माँ के पास नहीं जाता; लेकिन यदि उसी समय कोई अघोर पंथी साधु उसके निकट आता हुआ दिखाई दे तो भय से एकदम व्याकुल बना बच्चा तुरंत ही भागकर उसकी माँ-से लिपट जायेगा। लिपटे हुए बच्चे के दिल में माँ....माँ....के अलावा कोई शब्द प्रादुर्भूत ही नहीं होता।

बस, अघोरी संन्यासी के भय से पैदा हुई तादात्म्य स्वरूप माँ की शरणागति, वही सही शरणागति मानी जायेगी।

ईश्वर हमारी माँ है। उसके बच्चे जैसे सही शरणागत बन जायें; तभी हमारा मोक्ष संभव होगा। ऐसे शरणागत होने के लिये, हमें संसार के सुखों एवं भोगसामग्री से भयभीत बने रहना होगा ही। दुःख दुर्गति के हलाहल विष से भरीपूरी भोगसामग्री की तेज़ छुरियाँ से कौन भयभीत न होगा ? यदि सुख से हम डर जायें तो भगवान से शरणागत बन जानेमें हमें जरा भी भय महसूस न होगा तो उलट में उसका संग रोचक और आकर्षक मालुम हो तो, अच्छी तरह समझ लें कि, गला फाड़कर भजन करने मात्र से हमारी

मोक्षप्राप्ति कभी संभव नहीं। ऐसी भक्ति करने से हम भक्त नहीं कहलायेंगे; बल्कि ठग ही कहलायेंगे।

## अरे, भले के दिखावा करनेवाले शिक्षित जन !

आपलोगों की वर्तमान समय की दूषित और बेहाल दुर्दशा को देख, मैं निश्चित इतना तो कह सकूँगा कि, वर्तमान शिक्षित जनोंकी अपेक्षा बिलकुल अनपढ़ गँवार किसान–पुत्र बेहतर होगा, अच्छा माना जायेगा।

आपके जीवन के प्रत्येक पहलु को जरा गौर से देखें। वाणी, व्यवहार, आचार, विचार, प्रचार आदि जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में जो दम तोड़कर प्रयत्न करते हैं, वे केवल अच्छा–भला के दिखावे के लिये ही किये जाते हैं न ? मेरा यह स्पष्ट मन्तव्य है। सचमुच 'अच्छा' बनने का यह साफदिल प्रयास हो, ऐसा कोई चिह्न नज़र नहीं आता।

जब चलचित्र, स्त्री–मित्र और प्रणय–गाथाओंकी लगातार पढ़ाई से संपूर्ण जीवन तरोताजा हो, तब उसकी विनाशक विकारी विक्रियाएँ अवश्य होकर ही रहेंगी। इन विकारों के आक्रमण बारबार होते रहें; तब मनकी शक्ति शिथिल हो जाती है। साथ ही शरीर भी धातुक्षीणता का शिकार बनकर बेहद बरबाद हो जाता है। ऐसे तन–मन से कमजोर आदमियों के सोसायटी में अग्रणी बने रहनेका भारी शौक होता है। अतः पफ–पाउडर नपेतुले शब्दों का उच्चार करना हँसझुक कर स्त्रियोंसे बातें करना, विश्वप्रवाहों से संबद्ध दिलस्पर्शी चर्चाओं और परिसंवादों के मायावी, भामक, दिखावों के चक्कर में फँसे रहना पड़ता है।

धर्मी जगत के पाखंडियों की अपेक्षा अधर्मी दुनिया के ये तथाकथित शिक्षित महापाखंडी होते हैं। उनकी उस्तादी की जालमें बेचारे कई जीवात्मा रूपी पंखी फँसे रहते हैं और बरबाद हुआ करते हैं।

www.yugpradhan.com

मैं मित्रभावसे आपसे निवेदन करता हूँ कि, 'भले दिखाने' के पीछे आपकी शक्तियों को बरबाद न करें। आप भले होने के लिये अपनी शक्तियोंओं का पूरा सदुपयोग करें।

## अरे, घर के अभिभावक लोग !

अभिभावकत्व–बडप्पन ऐसा भारीपन लिये रहता है कि, उसे निभाना मुश्किल होता है। जिसमें ऐसा बडप्पन आया, उसमें थोडा–बहुत घमंड पैदा होने का पूरा संभव रहता हैं।

अभिभावक मानों घर के तमाम सभ्यों को कुचड़ डालने का जन्मसिद्ध लायसेंस प्राप्त किये हुए आपखुद–सरमुखत्यार ही हों। "चाहे तब, चाहे उसे, चाहे ऐसे दारुण–कठोर वज्रवचनों से कुण्ठित कर देने का हमें पूरा अधिकार प्राप्त है।" ऐसी कई अभिभावकों की भ्रामक मान्यता हैं।

यह बडी दुःखद बात है। नयी पीढ़ी की संतानों में जो धर्मधिक्कारभाव गलत रास्तों की उपयोगवृत्ति आदि बुराइयाँ नजर आती हैं; उनके मूल में अन्य चाहें परिबल होंगे; लेकिन समय–कसमय कुचल डालने की वात्सल्यहीन और धिक्कारपूर्ण अभिभावकों की वृत्ति और प्रवृत्ति भी एक मुख्य और जोरदार कारण है।

मैं स्वीकृत करता हूँ कि, आश्रित, पालितों, संतानों, स्त्रियों और वृद्ध माँ–बापों में छोटे–बड़े कई दोष होंगे ही; लेकिन उन दोषोंको निर्मूल करनेके लिये धिक्कारपूर्ण आचरण करना, यह बिलकुल नामुमकिन है।

कोई भी आपखुद खुँखार आदमी–चंगेजखान से लेकर जुल्फीकार भुत्तो तक का- अंत में सफलता पा नहीं सका। दमन–अत्याचारों द्वारा कुचल डालने पर संभव है किसी की जान ली जा सकती हैं; लेकिन उसके अवगुण को कभी खत्म किया नहीं जा सकता।

www.yugpradhan.com

यदि घर के बडे बुढे अधिकारका घमंड न करे; तो आज भी कइयों के जीवन के मुरझाते गुलाब पुनः विकसित हो ऊठें।

लेकिन अभिभावक लोग इतना समझ पायेंगे ? सभी प्रसंगों में अपनी निर्दोषता सिद्ध कर दिखाने की कुवृत्ति का त्याग कर पायेंगे ?

## अरे, भावनाशाली लोग !

धर्मक्षेत्र में आगे बढ़े पुण्यशाली आत्माओं से मुझे कहना हैं कि, जैसे आप ईश्वर के प्रति भाव व्यक्त करते हैं अथवा सुंदर पदार्थ की क्षणभंगुरता या नारी के देहकी अशुचित्ता, कुटुंबीजनों की अशरणता आदि के प्रति भावना रखते है। उसी प्रकार भावनाकी दूसरी भी पद्धति है, उसे भी आप अपनायें। शायद, यह प्रकार आपको अधिक विरक्ति, ज्यादा जागृति, अधिक भक्तिभावनामें पूरा सामर्थ्य देनेवाला बन पाये।

www.yogpradhan.com

यहाँ कतिपय प्रकार समझाता हूँ।

आप ऐसी भावना करें कि, आपके गले में कैन्सर हुआ है। उसकी गाँठ फूट पायी है। भारी वेदना हो रही है। खूनखराबी बह रही है। मौत तेजी से निकट आ रही है।

डाक्टरने गले पर बड़ी पट्टी लगा दी है। आवाज क्षीण और खोखली हो गयी है। आपके सामने ५–१५ स्वजन दुःखार्त्त हो इर्दगिर्द बैठे हैं।

इस समय आप आप के भूतकाल को याद करें।

मौत की प्रतीक्षा करते रहें और भूतकाल के पापों का भी स्मरण करते रहें।

सचमुच, आप की आँखों में से शायद आँसु की धारा बहने लगेगी। आपके जीवन के प्रति धिक्कारवृत्ति सहज रूप में फूट पडेगी।

इस प्रकार कैन्सर की ऐसी विभावना, किसी नये ही विशुद्ध जीवन की क्षितिज दिखा देगी।

इसी प्रकार आप ताड के वृक्षके जीव बने हो, ऐसी कल्पना कर, मानव-जीवन किस प्रकार बरबाद कर दिया; जिसका परिणाम आया ताडरूप जीवन गुजारने में, ऐसे कई विचार करते रहें।

उसी प्रकार दुर्गंधपूर्ण गटर के गंदे पानी में बलखाते, चींचींकार करते हुए भुंडों के रूप में अपनी कल्पना करें। भुंडनी और आठ–दस बच्चों के साथ आप घूम रहे हैं। ऐसी विभावना करें और सचमुच आप रो पडेंगे। आप बोल उठेंगे–"अरे, हाय किस प्रकार मैंने अपना मानवजीवन बरबाद कर दिया हैं। इसीलिये ऐसी दारुण दुर्दशा हो पायी है।"

ऐसी तरह तरह की विभावनायें प्रतिदिन किया करें। मेरा अवश्य मानना है कि, "इसी पद्धति को आजमाने से किसी न किसी समय "जीवन परिवर्तन" हो जाय।

भावना असत् लेकिन जागृति सत्। अतः भावना भी सत् ही कही जायेगी।

www.yugpradhan.com

## अरे, चुनाव के समर्थक लोग !

मद्रास एवं बम्बई की वरिष्ठ अदालतों द्वारा ऐसे फैसले दिये जा चुके हैं कि "धार्मिक संस्थाओं में ट्रस्टीओं को कायम करें। वहाँ चुनावपद्धति का आश्रय न लिया जाय; क्योंकि उसके कारण बदमास लोग कूड–कपट कर, चुनाव में विजयी बनकर ऐसी संस्थाओं में घुस जाते है, जिसके कारण संस्थायें अपना निश्चित कार्य कर नहीं पातीं।"

ऐसे मन्तव्यों पर मुझे थोड़ी स्पष्टता करनी है, कि, 'यदि ऐसा ही मानना है तो फिर लोकशासन तंत्र में दिल्ही से लेकर ग्रामपंचायतों और

सहकारी संगठनों और विद्यार्थी समुदायों तक चुनावपद्धति का ही आग्रह और आयोजन क्यों रखा गया है। चुनाव के कारण उन संस्थाओं में भी कितने टंटेफिसाद उठ खडे हुए हैं। हत्यायें हुई हैं, दुश्मनी बढी है, इन दूषणों से कौन अनजान है ?

तो फिर, उन विभागों में से भी चुनावतंत्र क्यों हटाया न जाय ? धार्मिक ट्रस्टों को जैसे अच्छे कार्य करने होते हैं; तो फिर राजनीतिक और शैक्षिक संस्थानों के पास बुरे कार्यों की आप अपेक्षा कैसे रख सकते हैं ? बदमासों और गुण्डों को निर्वाचित हो जाने में पूरी सहायता देनेवाले चुनाव-तन्त्र को, आप वहाँ से हटा लेने में उद्युक्त क्यों नहीं होते ?

भीतरी बात राम जाने — समझे। लेकिन इतना निश्चित मालूम होता है कि, यदि ऐसा कुछ करना चाहें तो, बहुमत लोगों को, जिस प्रकार लाखों की कमाई कर लेने का, दुश्मनों को खत्म कर देने का या किसी समुची कौम के लोगों के जीवन को, जीवितावस्था में ही तहसनहस कर देने का जो मौका मिला है, वह खत्म हो जाय और उन 'बड़े साहबों' को घर बैठना पड़े। कुर्सी पर बैठ कर झम्हाइयों लेते हुए शेष—जीवन गुजारने की नौबत आ जाय।

अन्यथा चुनाव के अनिष्ट को राजनीति में से क्यों हटाया नहीं जाता ?

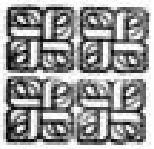

## अरे, राजनीति की गाडी के वाहक लोग !

भाईसाहब ! मेरे प्रश्न का जरा इतना जवाब अवश्य दें कि, आस्फाल्ट रोड़ पर तेज रफ्तार से आगे बढ़ती हुई आपकी मोटर, बेहद आगे निकल जाने पर आपको पता चले कि, आप रास्ता भूल गये हैं, गलत रास्ते पर बढ़ चले हैं; तो उस समय आप अपनी कार को वापस लौटा दे या नहीं ?

या फिर, आप शिक्षित (!) होने की वजह से प्रगति के चुस्त आग्रही होने के कारण, कार को वापस लौटाने की बात को ही काट देंगे क्या ? शायद नहीं ! !

तो पुण्यवंतो ! आप निश्चित समझ लें कि राजनीति की आपकी गाड़ी गलत राह पर निकल पडी है । यन्त्रवाद, राष्ट्रीयकरण, विदेशी मुद्राप्राप्ति का पागलपन, प्रत्येक वस्तु का निर्यात करने की धून, पाश्चात्य शिक्षा के प्रति अधिक झुकाव, बिनसांप्रदायिकता के सिद्धान्त का स्वीकार, मूलभूत सांस्कृतिक संगठन का त्याग आदि कई स्वीकृत किये गये तत्त्वों ने, इस देश की भूमि को आधुनिक बनाने के साथ साथ, देश की प्रजा को संपूर्णतया बरबाद कर देने का कार्य किया है ।

www.yugpradhan.com

गर्भपात, व्यभिचार, मांसाहार, रिश्वतखोरी आदि के अतिशय व्यापक प्रसार के मूल में स्थित रोगों के सूचक बुखार जैसा बनकर, यदि आपको सही बातों का ख्याल न करा पाये तो अब ईश्वरस्मरण के सिवा और कोई चारा नहीं ।

अब भी प्रार्थना करूँगा की आप वापस लौटें । यह पीछे कदम नहीं माना जायेगा; यह कायरता भी सिद्ध न होगी । जिन पद्धतियों की आज-माइश करने पर, प्रजा और संस्कृति मृतप्रायः अवस्था में आ पटके, तो उन पद्धतियों का अविलंब त्याग करना ही उचित माना जाय ।

बड़े बड़े धुरन्धर भी गलती कर बैठते हैं तो आपकी क्या हैसियत ? क्या बिसात ? उसके कारण आप कोई महान अपराधी नहीं बन जायेंगे । लेकिन गलती हुई है यह समझने पर भी विचारों के प्रति झूठी ममता के कारण बंधे रहे गलत खयालों का त्याग न करें तो, आपकी प्रगति भी खतरे से खाली नहीं, ऐसा कहने के सिवा हमारे पास कोई चारा नहीं ।

## अरे, आत्मकल्याणवादी लोग !

हाँ, आपके जीवन की खिडकी में से वृद्धावस्था झाँक रही हो और आप अपने आत्मकल्याण की बात सोचते हो तो, मैं शायद आपसे संमत हो सकूँ ।

लेकिन यदि आपमें बुढापन झलक न पाता हो फिर भी, यदि आप आत्म–उद्धार की ही बातें किया करते फिरें ( परायों के कल्याण की शक्ति होने पर भी ) तो यह उचित माना जायेगा नहीं ।

जिस युग में बूढों को भी युद्ध के मंच पर फरजियात रूप में जमाने पड़े उस हद के युगवाद के खतरनाक हमले लगातार जारी हों, वैसे समय में समुचे संघ का उत्तरदायित्व जिनके सर पर रखा गया हो; जो अन्यों के कल्याणसाधना की शक्ति और सूझबूझवाले हैं, वे आदमी यदि, परहित प्रवृत्ति के बोझिल कार्यभार के कारण निष्क्रिय–निर्वीर्य बन आत्मकल्याण की बातों का ही जिक्र करें और उसकी ओट में आलसीपन को बढावा देते रहें, उन्हें कैसे क्षम्य समझे जायँ ?

शुद्ध हृदय से परहित की जो प्रवृत्ति की जाय, उसमें जो एकाकारता सहज रूप से प्राप्त हो, वैसी एकाकारता, आत्मकल्याण के साधनों – ध्यान, जप, नियम आदि से प्राप्त होना संभव है ? जिन जप आदि कार्यों में प्रणिधान हो न पाये, वैसे जपादि कार्य किस हद सफल हो पायेंगे ? उपरान्त परहित शक्ति को छिपाये–बचाये रखने का दोष भी कहाँ तक क्षम्य समझा जायेगा ?

क्या वह जीवात्मा कषायमुक्ति, वासनामुक्ति और कर्ममुक्ति की अपेक्षा रखता है ? क्या वह ऋणमुक्ति की महत्ता को समझ नहीं पाता ? वासनामुक्ति और ऋणमुक्ति बिलकुल विचारहीन अकरुणार्त्त जीवात्मा को प्राप्त हो सकती है ?

www.yugpradhan.com

देखिए, आपकी नजरों के सामने ही आर्यप्रजा की सांस्कृतिक जीवन पद्धतिको – मर्यादाओं को, युगवाद की गगनचुम्बी अग्निज्वालाओंने, कितने भयानक रूपसे दबोच लिया है ! अफसोस, आँखों के सामने ही समग्र प्रजाका सर्वनाश हो, मोक्षलक्षी संस्कृति भस्मीभूत हो जाय; फिर भी शक्ति के होते हुए, उसकी रक्षा के प्रति आँख मूँदनेवालों को क्या मुक्ति मिल पायेगी ? मुझे तो यह असंभव जान पड़ता है। शक्तिसम्पन्न आत्मकल्याणवादी जनों ! पुनः सोचें। गीताकथित उस वाक्य का सदा स्मरण करें कि–" नहि कल्याण कृत् कश्चिद् दुर्गतिं तात गच्छति !"

## अरे राजनीतिज्ञ जनों !

www.yugpradhan.com

शासन चलाना, बच्चों की खिलवाड नहीं। शासकों को आर्यावर्त की प्रजा की कल्याणसाधना करनेवाली राजनीतिक तरकीबों को जान लेनी होंगी।

आप राजनीतिज्ञों को तो ये तरकीबें जानना आवश्यक नहीं है; क्योंकि आपके सचिव आप से जो बतायें, वही आप को करना होता है। आपके सचिव प्रायः देशी अंग्रेज हैं। देश के हित ( प्रजाके नहीं ) के रखवाले हैं। विदेशों में से ही वे बुद्धि की आयात करते हैं। ऐसे लोगों के चक्करमें आप फँसे हुए हैं। आप के हाथों प्रजा कहाँ ? अतएव प्रजा भूखों मर रही है। बच्चे पास नहीं रह पाये और पाँव के नीचे आधार के लिये धरती भी नहीं बची।

आप लोगों ने और आपके राजनीतिक पूर्वजोंने धर्मक्षेत्रोंमें हस्तक्षेप कर, धर्मतत्त्वको दूषित किया है। सामाजिक व्यवस्थाओं को तहस–नहस कर दी हैं। गहरी सूझ और समझके अभाव में, विदेशी अंग्रेजोंने आपकी खुशामद कर आपके 'बडे, साहबों' में बैठा दिये। अब आप लोग संस्कृतिके उत्तमोत्तम

गोखों का मजाक उडा रहें हैं। उनके पीछे स्थित मर्यादाओं को उखाड़ फैंकी हैं और मर्यादापालन करते हुए सुखी गृहस्थजीवन में आग लगा दी है।

आप लोग उन धर्मस्थानों के सिरमौर तत्त्व हैं। यह आपको विदित ही होगा।

खैर अब भी समय बचा है। आप सावधान हों। राजनीति की सांस्कृतिक नींव को समझे। आप स्वयं शासन करने योग्य राजपुरुष बने और सचिवों की पाबन्दीसे छुटकारा पायें। विदेशोंमें से बुद्धि की टनोबंद आयातकी रहस्य मय चुँगालसे जल्द छुटकारा पायें, संस्कृतिप्रेमियों की ऐसी नम्र भावना है।

## अरे तीर्थस्थानों के यात्रीगण !

www.yugpradhan.com

राष्ट्रीय नेता गांधीजी जैसों को भी अपने 'हिन्दू–स्वराज' नामक पुस्तक में बताना पड़ा है कि– " भारतीय प्रजा की रक्षा, उसकी तीर्थभूमि के पवित्र-तम अणु–परमाणु के संघटन से ही हो पायी है। " भावुकों के भावविभोर मनमें से उमडते भाव तो भूमि में आध्यात्मिक वातावरण पैदा करते हैं, मानों वह तीर्थभूमि " आध्यात्मिक पेन्टागोन " बन जाय।

लेकिन अफसोस ! आप तो, राज्य के शासनकर्ताओं को अपने राज्य की प्रजा की तंदुरस्ती एवं मनोरंजन के लिए, पर्वतीय स्थलों की खूब आवश्यकता महसूस हो रही है। उन लोगों का ध्यान, तीर्थस्थानों की ओर गया है। विविध विशाल सुविधाएँ देकर उन्होंने हजारों लाखों की तादाद मे लोगों को तीर्थस्थान के प्रवासी बनाने में भारी सफलता पा ली है। अब उन तीर्थस्थलों में प्राप्त सुविधाओं की इतनी भारी भरमार हो गयी है कि अब वे ही तीर्थस्थान भ्रष्टाचार और अनाचार के अड्डे बन गये हैं। धर्मशालाओं की रूमों के किवाड बंद होते ही, प्रेमी–पात्रों के लिए धरती पर ही स्वर्ग उतर आता है।

ऐसे कई कारणों से तीर्थों ने अपनी तारक शक्ति गँवा दी है, ऐसा महसूस होता है। भूतकाल में ऐसे तीर्थों के क्षेत्रविस्तारों में दाखिल होते ही जो आध्यात्मिक संवेदना रोम रोम में फूट पडती थी, उसका आज लेशमात्र अनुभव नही होता।

चित्तप्रसन्नता तो, तीर्थस्थानों की अपनी विशिष्ट स्वागतशैली थी, जो आज रूखी–सूखी भी नजर नहीं आती !

## अरे, देशकालज्ञ दुःखीजन !

www.yogpradhan.com

सचमुच, इस देश की प्रजा में सुख, शान्ति, समृद्धि और आबादी को ३५० साल तक, साक्षात् स्वरूप में शासन चलाकर बेहद ढंग से बेहाल–कंगाल बना दी हैं। लाखों वर्षों से निर्विघ्न चली आती सांस्कृतिक व्यवस्थाओं और मर्यादाओं के सूत्रधार जैसे महासत्यों का उन्होंने खात्मा बुला दिया है, यह जानकर किस भारतीय आर्यजन को सदमा न पहुँचेगा ? जिस प्रकार हमारी स्थापित व्यवस्थाओं की तोडफोड कर दी है, उसे देख ऐसा महसूस होता है कि उन व्यवस्थाओं की पुनःप्रतिष्ठा का कार्य, हम जैसे मानवीय परिबलों से प्रायः अशक्य है। अब करें भी तो क्या ? तेज रफ्तार से बढ़ते, भारतीय प्रजा और संस्कृति के विनाशक रोकेट को कौन रोकथाम कर पायेगा ?

मुझे तो अब एक ही बात नजर आती है कि हम अब शरणागति लेकर पराशक्ति के साथ अनुसंधान करें। उसके चरणों में हम नष्टभ्रष्ट की गयी संस्कृति के पुनर्जीवन के लिये प्रार्थना करें। यदि हम ईश शक्ति के साथ आत्मीय संबंध स्थापित करेंगे, घंटो तक उसके साथ तादात्म्य सिद्ध कर बैठेंगे तो निश्चित रूप से प्रचंड पुण्यबल, हमारी भूमि पर उतार पायेंगे।

जो कुछ बरबादी हुई है, उसमें एक कारण है, आर्यप्रजा के पुण्यबल की कमी।

यदि पराशक्ति के साथ प्रगाढ आत्मीय–तादात्म्य भाव से, इस पुण्य-शक्ति को धरती पर अवतारित कर पायेंगे तो शायद हमारा दुःख चुर हो सकेगा और पुनः उन संतों और सज्जनों की धरती के आर्यावर्तके दर्शन करने का सद्भाग्य प्राप्त कर सकेंगे। आइए, हाल में सभी प्रपंचों और पुरुषार्थों का संपूर्णतया परित्याग कर, उस पराशक्ति के साथ अनुसंधान करने में लग जायें।

## अरे, मार्क्सवादी लोग !

www.yugpradhan.com

जब तक आपके आराध्यदेव (!) कार्ल मार्क्स इस धरती पर जन्म धारण किये हुए न थे और जब तक 'चेइन–स्मोकर' मार्क्स, धूआँ लगातार उगलते हुए 'केपिटल' लिख पाया न था, तब तक इस दुनिया के महान संतोंने मानवजाति की शुद्धि के लिए दो बातें बतायी थी कि "दुनिया में दो प्रकार के आदमी हैं, अच्छे और बुरे। मानवजाति में जब कभी भी, अशान्ति या व्यग्रता पैदा हो, तब उसका मुख्य कारण मानव की बुराइयाँ ही होती हैं। अतः बुराइयों के विरुद्ध मानवजाति को चाहिए कि वह सदा संघर्ष किया करें।

मार्क्सवादी लोग ! इस प्रकार आपके मार्क्स ने मानवजाति के दिमाग में, 'बुराइयाँ खराब चीज है' उस सत्य को हटाकर 'दुःख खराब है' उस महाअसत्य का प्रवेश करा दिया है।

इसी लिए मानवजाति प्रतिदिन बरबाद होती जा रही है। दुःख को हटाने के सभी प्रयत्न निष्फल हो रहे हैं और हर प्रकार की बुराइयों ने देश की आबादी को, प्रजा के सुख को, संस्कृति के गौरवों को और धर्म के सिद्धान्तों का सत्यानाश कर दिया है।

एक आदमी की गरीबी हटे और उसकी अमीरी में बढ़ावा हो जाय, इतने मात्रसे राष्ट्र या प्रजा का कल्याण हो जाय, यह कदापि संभवित नहीं है। यदि उसमें सत्ता और संपत्तिविषयक अनीति, अन्याय।चरण, हरामखोरी, धोखाबाजी आदि खराबियों का धूम बोलबाला हो। सचमुच, मार्क्स ने किये वर्गीकरणों और प्रगट किये अभिप्रायों और मन्तव्योंने विश्व को कितना नुकसान पहुँचाया है, उतना शायद चार सौ चंगीसखान इकट्ठे होकर भी न पहुँचा पाते।

## अरे, ईश के प्रेमी लोग !

दुनिया सारी जब इश्क में पागल बनी झूम रही है, तब आप सब ईश के प्रेमी बने हैं, यह मेरे लिये तो बड़ा आनंद का विषय है।

इसी कारण आपलोगों से एक बात बताये देना चाहता हूँ। धर्मशास्त्रों ने बताया है कि जिन मनुष्यों में भगवान के प्रति सहज प्रीति पैदा होगी, ऐसे मनुष्यों को भले ही शायद संसार (पत्नी, बच्चे, धन आदि) के प्रति भी पूरी ममता बनी रहे, तो भी उसके दिलमें धर्म के प्रति ज्यादा पक्षपात बना रहेगा ही।

जिसके अन्तःकरण में प्रभु का वास होगा, उस आत्माको, मोक्षप्राप्ति के लिये, अनंत चक्रमय संसारपरिभ्रमण में केवल एक ही परिभ्रमण का चक्र पूरा करना शेष रहता है, ऐसे जीवात्मा पूरी एकाग्रता से धर्मध्यान और मोक्ष-साधक धर्मक्रियाएँ करने में लग जायें तो, उन्हें मोक्ष प्राप्त होने में जरा भी विलंब न हो।

जैसे ज्योतिषी, अमुक राशिवालों के लिये 'फलाँ धंधा ज्यादा लाभदायक होगा,' ऐसा सूचित किये देते हैं, वैसा मैं भी आप लोगों से यह बताना चाहता

हूँ कि, संसार आपके लिये जितना लाभदायक नहीं, उससे ज्यादा धर्म लाभदायक है।

आप धनकी करेंसी नोटें इकट्ठी कर जितनी ज्यादा कमाई करेंगे, उससे अधिक कमाई धर्म की मालाएँ गिनने से होगी, वैसा लाभदायक अवसर, इस समय आपके जीवन में आ पाया है।

मेरी आपसे हार्दिक प्रार्थना है कि, आप ईश के प्रेमी लोग, संसार के प्रति ज्यादा लगाव न बढाये रखें, संसार उतना कल्याणकारी नहीं है। आपका जीवात्मा ही ऐसा बन पाया है कि उसे धर्म और तद्विषयक बातें, धार्मिक क्रियाएँ, धार्मिक सज्जनों आदिका संसर्ग ही ज्यादा अनुकूल बना रहेगा।

www.yugpradhan.com

आपके किसी ज्योतिषी–मित्र जैसे मेरी यह बिना माँगी सलाह है। हानि उठाने के बाद सावधान हो और आज से ही 'शुभस्य शीघ्रं' मानकर ईश के मार्गपर कदम बढायें। मेरी प्रत्येक से शुभेच्छा है।

## अरे, धर्मचर्चा के लिये तत्पर युवकजन !

आप लोग, फुरसत के समय में, हमारे पास आकर, आत्मा, परमात्मा, परलोक, पूर्वजन्म, कर्मफल, ईश्वर आदि के बारे में सविस्तर चर्चा करने चाहते है। यह बात मुझ जैसे को सबसे पहले सचमुच जोरदार खटकती–अखरती है। इस प्रकार चर्चा करने के लिये मैं हरगिज तैयार भी नहीं हूँ।

उपर निर्दिष्ट जिन तत्त्वों के विषय में गत हजारों वर्षों में उत्पन्न हजारों संतों और साधकों ने चिंतन–मनन किया है। कैवल्य प्राप्त कर उसका साक्षात्कार किया है और वे तत्त्व केवल सत्यरूप में नहीं, अपितु महासंतों द्वारा प्रबोधित महासत्य स्वरूप में आर्यावर्त की प्रजा में व्यापक बने हैं – प्रचलित

हुए हैं। उन तत्त्वों को आप चर्चा के स्तर लाना चाहें तब हम जैसों के हृदयों में भारी खलबली पैदा होती है।

कहाँ आप लोग ? आपकी जीवनचर्या कहाँ ? आपकी साधनाएँ कैसी ? आपके कैसे अजीब आदर्श। कितनी भरमार है आपकी क्षतियाँ की। क्षमा करें युवकजन, सही अर्थ में उन महासंतों की छाया में खडे रहने की पात्रता भी आप लोगों में नहीं रही; फिर भी उनके समकक्ष बनने की जो धृष्टता आप करने चले हैं, वह अत्यंत अधम और हास्यास्पद है।

आर्यप्रजा को ईश्वर, आत्मा, कर्म और पुनर्जन्म आदि पदार्थ–तत्त्व तो 'डेटा' स्वरूप में (स्वीकृत रूप में) ही प्राप्त हो चुके हैं; उन्हें प्रमाणित करने का प्रश्न ही नहीं रहा। हमें सोचना तो यह है कि अब पुनर्जन्म कहाँ लें ? अच्छे अवतार के लिये जो कारण हैं, उनको इच्छाबल द्वारा वर्तमान शेष जीवन में किस प्रकार अमल करें !

अरे, अभी जमीन पर पाँव भी स्थिर नहीं कर पायें, जिनके रोमरोम में विकार उमड रहे है, जिन के प्रत्येक उच्चारों में से अपशब्दों की बौछार होती रहती है, गंदे चलचित्रों के गलीच–विकारी गीतों के बिना गान किये, जिनके पाँवों में काम करने का जोश ही पैदा नहीं होता, ऐसे अरे नशीले युवकों, आप ईश्वर की सोच रहे हैं ? 'पृथ्वी के परिभ्रमण' के बारे में, सरे बाजार चर्चा करने उद्युक्त हुए हैं ! सावधान सर्वप्रथम अपना घर ठीक कर लें। तुम्हारी घरेलू समस्याओं के चक्कर में ही फँसे हुए हो। उनको पहले हल करें। अभी आकाश को लांघ कर पार करने का दुःसाहस न उठाये।

## अरे, कर्मनाशवादी लोग !

'कर्मों का नाश किये बिना, मोक्षप्राप्ति संभव नहीं' ऐसी संत-जनों से जानकारी प्राप्त कर, आप लोग धर्मांजिन, कर्म का नाश करने के

लिये कटिबद्ध हुए हों, ऐसा महसूस करता हूँ। अपेक्षारूपमें, सचमुच आप धन्यवाद के पात्र हैं !

लेकिन सावधान ! मुझे पहले यह जान लेना है कि आप किन कर्मों के विनाश के लिए तत्पर बने हैं ? पुण्यकर्मों का नाश करने की कोशिश, इस समय तो आप नहीं करेंगे, यह मैं समझ सकता हूँ; लेकिन पापकर्मों के भी दो प्रकार हैं। कुछ दुःख उत्पन्न करने वाले हैं और कुछ काम, क्रोध, आदि वासनाएँ भडकानेवाले हैं। इन दोनों में से किसका नाश करने के लिए आप तुले हुए हैं ?

एक दृष्टान्त देकर इसे और स्पष्ट करूँ ! एक पापकर्म ऐसा है कि जिसका उदय होते ही आँखो में मीर्च का कण गिरे और वेदना से तबाह हो उठे।

www.yugpradhan.com

दूसरा पापकर्म ऐसा है कि उसमें मीर्चका कण तो नहीं गिरेगा; लेकिन आँखों में विकार अवश्य उत्पन्न होगा।

अब इन दोनों पापकर्मों में से किसे आप खतरनाक समझते हैं ? किसे नाश करने योग्य समझते हैं ?

यदि आपकी दृष्टि में दुःख ही त्रासजनक मालूम होता हो और वासना की उत्पत्ति को गौण समझते हों तो मुझे आप को सावधान करने हैं और सूचित करना है कि, वासनाओं के आंतरिक त्रास के आगे, बाहरी कैन्सर आदि दुःखों का त्रास तो तुच्छ—नगण्य—सा है। उपरान्त, बाहरी दुःखों का त्रास, मृत्यु के साथ ही खत्म हो जाता है; जब कि वासनाओं की पीडाएँ तो जन्म—जन्मान्तर तक असह्य वेदनाजनक बन जाती हैं।

यदि आप दुःखदायक पापकर्मों के विनाश के लिये धर्मानुष्ठान करते हो तो, वह उचित नहीं। आप चित्त में वासना उत्पन्न करनेवाले पापकर्मों के

विनाश के लिये ही धर्माचरण करें। इन जड़ों के उखड़ जाने पर बाह्य दुःखों डाली–पात आप ही आप सूखकर रह जायेंगे।

## अरे, पापक्रिया के कारक !

अनिवार्य रूप से, जीवन में आप शायद कतिपय पाप करनेके लिये मजबूर होते होंगे, ऐसी मेरी मान्यता है। गृहस्थ – वर्तमान युग के जहरी वायुकणों से ग्रस्त – एक पलभर के लिये पापमुक्त कैसे बना–बचा रहे। लेकिन आप यदि इस प्रकार पापमय जीवन गुजारते रहेंगे तो मोक्षप्राप्ति पर जैसे तालाबंदी लग गयी है, उसी प्रकार सद्गति की प्राप्ति पर भी तालाबंदी लग जायेगी। बचने का एकमात्र उपाय है जो भी करना पड़े उसे पूरी हार्दिक वेदना और कंपते दिल से करें।

www.yogpradhan.com

जो भी पापमय कर्म करना पड़े, उसके लिए दिल से भारी पश्चात्ताप करें। शरीर से जैसा पापकर्म हो उसी तीव्रता से हृदय धड़कने–काँपने लगे। यदि ऐसी स्थिति जीवन में प्राप्त कर पाए तो, पाप करने पर भी, पापों की शक्ति निर्मूल हो जाय।

भारत के एक संग्रहालय में किसी राजवी की एक तश्तरी रखी पड़ी है। उसी तश्तरी में राजा हमेशा भोजन किया करता। यदि भोजन में किसी के द्वारा विषप्रयोग किया गया हो तो उसी समय तश्तरी में तड़तड़ाहट शुरू हो जाती; जिससे राजा सावधान हो जाता। हमारा जीवन भी पाप का विषमय भोजन करता हो भले, जैसा भवितव्य ! लेकिन आप अपने हृदय को उस संग्रहालय की तश्तरी–सा बना लें। जैसे ही पापकर्म हो, वैसे ही हृदय में तड़पन पैदा हो जाय। पाप के निमित्त भारी पश्चात्ताप करने लगे। यदि इतनी सिद्धि पा लेंगे तो शायद बहुत जल्द भव–पार उतर जायेंगे।

## अरे, प्रतिदिन मंदिरों में जानेवाले सज्जनों !

मुझे आपसे इतना ही पूछना है कि आप मन्दिर में किनके दर्शन करते हैं ? मंदिर में आप क्या देख पाते हैं ।

मंदिर में भगवान है ? प्रतिमा है ? या पत्थर का केवल टूकडामात्र है ?

भगवान में यदि सचमुच भगवान के दर्शन कर पाये तो हम धर्मी कहलाने योग्य हैं ।

यदि प्रतिमा के दर्शन होते हों तो हम आस्तिक कहलाने योग्य हैं ।

लेकिन यदि पत्थर के टूकडे के ही दर्शन कर पायें तो हम नीरे आस्तिक ही हैं ।

अब बतायें तो सही कि–'सचमुच, भगवान की मूर्ति में आप भगवान को प्रत्यक्ष कर पाते हैं क्या ?'

जो भगवान को देख पाए, वह क्या महसूस करता है, यह बताऊँ । वह बोल उठेगा कि,

"हे भगवन् ! आप भगवान हैं, मैं हैवान !"

भगवान हमारे लिये एक अरीसा है । अरीसे के सामने खड़े होकर, सिर्फ अरीसे को देखना नहीं है; लेकिन अरीसे में हमारे मुँह पर कितने दाग हैं ? कैसे हैं ? आदि देखना है ।

अरीसे समान भगवान के समक्ष खड़े हो, तब तुरंत उसमें हमारी आत्मा प्रतिबिंबित होती है और उसके पर लगे पापों के काले कलंक दीखने लगे । इनको देखकर ही भावुक आत्मा बोल उठे– ।

'हे भगवन् ! आप भगवान हैं और मैं हैवान !' ऐसी संवेदना आपने कभी महसूस की है ?

मंदिर में जाने के बाद भी यदि भगवान दीख न पडे, तो ऐसे जीवात्मा को अभागी ही कहेंगे ।

www.yogpradhan.com

मुर्दे को देख मृत्यु की याद ताजा करें। भगवान को देख भगवान का स्मरण करें।

यदि इतनी–सी संवेदना का अनुभव न कर पायें तो मात्र मंदिर में जाते रहने से मोक्षप्राप्ति कभी भी शक्य नहीं है।

पुनः याद रखें। अरीसे को देखना नहीं है। उसमें मुँह देखना है। दाग नज़र–अंदाज़ करने हैं। उन्हें देख केवल बैठे रहना नहीं है। उन्हें दूर करके ही दम लेना होगा।

## अरे, बेचैन मानव !

www.jagpradhan.com

मैं समझ सकता हूँ कि, आपका पुण्यबल ही ऐसा है कि, आप सदा अभावग्रस्त बने रहो।'

ऐसी हालत में याद त्रस्त हो उठे हो तो कोई आश्चर्य नहीं।

लेकिन इस प्रकार व्यग्र बने रहने से क्या फायदा ? आप को अपना जीवन तो सम्हालना ही होगा। आपके अलावा, आपके जीवन का सही हमदर्द और कोई नहीं।

चाहे वैसे, चाहे वैसी दुर्दशा में फँसे हो तो भी अपने आपको उसमें अनुकूल बना दो। 'एडजस्ट' बन जाओ। अपने आपका समायोजन कर लो। हमारी इच्छानुसार परिस्थिति को अनुकूल बना देना, मुश्किल बात है। उसकी अपेक्षा, प्राप्त संयोगों का स्वागत कर लेना ही उत्तम मार्ग है। आपका निर्लज्ज–उद्धत लड़का आप की आज्ञा का उल्लंघन करता है; जिससे आप बेचैन हो उठते हैं। लेकिन उसकी निर्लज्जता को भी अनिवार्य परिस्थिति के रूप में स्वीकृत कर, अपने जीवन को समायोजित बना लेना है।

स्कुटर–दुर्घटना में अपने पाँव को कटवा देनेवाला आदमी, जीवनभर

रोने रोता नहीं बैठता । ऐसा एक पाँववाला आदमी भी, अपनी अनिवार्य–स्थिति को समझकर अपनी दिनचर्या–जीवनचर्या का आयोजन कर लेता है ।

तो आप भी अपनी कर्कशा पत्नी या क्रोधी पिता के साथ, अपने जीवन का समायोजन क्यों न करें ।

अंधों, बहरों, गूँगों की दुनिया को नज़र–अंदाज़ करें । गरीबों की झोंपडपट्टी में एकाध चक्कर काट आयें, जसलोक अस्पताल के दर्दियों से भेंट कर आयें, तो आप कई पुण्यविहीन जीवात्माओं को देख पायेंगे । जो अपने बेहाल जीवन को पुनः खुशहाल जीवन में परिवर्तन करने में सफल बन पाये हैं ।

जीवन में समायोजन करना यह शान्त जीवन जीनेका रामबाण औषध है, अमोघ मंत्र है ।

www.yugpradhan.com

## अरे, वडील (बड़े) आदरणीय जन !

शायद आपको न जँचे, ऐसी कटु बात मुझे आपसे कहनी है ।

मैं मानता हूँ कि, आपने अपने आश्रितों के प्रति आपके जो कर्तव्य हैं, उन्हें जानबुझकर ठुकरा दिये हैं । पुत्र या पुत्री क्या करते हैं ? कैसे जी रहे हैं ?

उनके जीवन के सर्वतोमुखी विकास के लिए क्या करना आवश्यक है ? कौन सी बातों पर ध्यान देना जरूरी है ? कहाँ थोडी कठोरता से नियंत्रण लादना आवश्यक है ? आदि बातों का सोचविचार करना ही छोड दिया है । यूरप के माता पिताकी तरह उनका अनुकरण–फैशन करना हमारे देश के आदरणीय अभिभावकों के लिये उचित ही नहीं है । इसके कारण तो हमारी विशिष्ट सांस्कृतिक परंपराओं का सर्वनाश ही हो जाय ।

अभिभावक वर्ग में मैं माता–पिता, शिक्षकगण और धर्मगुरुओं का समावेश करता हूँ । वे लोग अपने कर्तव्यों से विमुख बनने के लिए जमाने की ओट–सहारा लेंगे । आश्रितों–पाल्यों की उच्छंखलता के बहाने पेश करेंगे, तो

वह उचित माना नहीं जायेगा। तीन हजार साल पुराने बेबोलान नगर में से प्राप्त मिट्टी के बर्तनों पर लिखा मिला है कि–'तबाह इन लडकों से !"

सुकरात (ई. पू. ४५० साल) हेसी आडे (ई. पू. ७२० साल) इजिप्ती धर्मगुरु (ई. पू. २००० साल) ने भी ऐसे ही वाक्यों का प्रयोग कर तत्कालीन नयी पीढ़ी के प्रति अपना आक्रोश प्रगट किया है। इन बातों पर से इतना अवश्य स्पष्ट होता है कि, नयी पीढ़ी अगली पीढी की अपेक्षा बदतर है, ऐसा मान कर चलना गलत है।

अब जितनी मात्रा में भी उन में बिगाड–बुराई पैदा हुई है, उसमें अभिभावकों का योगदान कितने प्रमाण में होगा। यदि उन्होंने पहले से ही उस पीढी में संस्कारसिंचन किया होता, झूठे लाड़ लड़ाये न होते, पूरी सूझबूझ का उपयोग कर के उन्हें सन्मार्ग पर चला दिए होत तो बहुत–सा नुकसान हो न पाता।

www.yugpradhan.com

खैर, आजकल तो आप लोगोंने उनके प्रति घोर उपेक्षाभाव से ही काम लिया है। शायद आगामी शतक के इतिहास में, शतक के सर्वोच्च अपराधी के रूप में वर्तमान अभिभावकवर्ग को ही माना जायेगा। साथ ही नयी पीढी को उसके भाग्य के सहारे छोडकर उसे भटकती करने के उपलक्ष्य में, अभिभावकों की कटु शब्दों में आलोचना भी की जायेगी।

## अरे, मानवों, व्यक्तित्व का संघर्ष खेलें !

सुबह होती है और सभी लोग अपने दफ्तरोंमें जाने की तैयारी में लग जाते हैं।

शाम होती है; हारे–थके सभी अपने घरकी ओर वापस लौट आते हैं और रात होने पर सो जाते हैं।

पुनः सुबह, पुनः दफ्तर, फिर शाम...वही रात। बस बिना नवीनता के एक ही ढाँचे में जीवन यापन होता है।

जीवन को टिकाये रखनेमें ही संघर्ष करते रहना। पैसे, अनाज, भोजन और शयन, जीवन कोष में इतने ही इनेगिने शब्द हैं।

मानवने अपना अस्तित्व बनाये रखने के लिए जंग शुरू किया है।

अपने व्यक्तित्व के विकास के लिए किसी के पास जरा भी अवकाश नहीं है। ऐसा अवकाश निकालने की कल्पना भी होती होगी, इसकी भी शंका है।

वह जंग ! जो रातदिन अपने अस्तित्व के लिये उपरनीचे होकर टक्कर लेती है।

www.yugpradhan.com

वह मधुमक्खी, वर्षाऋतु के झंझावात के कारण अपने स्थान से नीचे पटक आती है, उठने की शक्ति गँवा देती है और चकराती रहती है, केवल अपना अस्तित्व बनाये रखने के लिए ही। आखिर वह भी हमेशा के लिए शान्त बन जाती है।

वह गिलहरी और बिल्ली, चौबीसों घंटे शिकार–भक्ष्य की खोज में अपने अस्तित्वका संघर्ष किये ही रहती हैं !

खैर, इन क्षुद्र जंतुओं में तो व्यक्तित्व के विकास की बातों का संभव ही कहाँ; लेकिन आर्य मानव की समुची जाति पर वह मुसीबत कब से आ पड़ी होगी; जिससे उसने भी, अस्तित्व के वर्तुल में ही कैद होकर रहने में ही अपने जीवन की सुरक्षा समझ ली।

इस देश के मानव ने अपने व्यक्तित्व का विकास कर, भौतिक जगत में सफलता के शिखर पार किये; मोक्षपद हाँसिल किया, जिस देश की स्त्रियों ने अपनी शीलरक्षा के निमित्त जौहर कर व्यक्तित्व का प्रभाव दिखला दिया। इस देश के व्यापारी वर्ग ने मुसीबतों के दिनों में राष्ट्र के चरणों में धन की

ढेरियाँ जमा दीं और अपने भव्यातिभव्य व्यक्तित्व को झगमगा दिखाया। इस देश के युवानों और युवतियोंने सर्व संगत्याग मार्ग पर अग्रसर होकर स्व–परकल्याण के दीप गाँव गाँव जलाये, उस देश का प्रतापी मानव! अफसोस है कि अपने व्यक्तित्व के लिए तड़पना नहीं, और केवल अपना अस्तित्व बनाये रखने के लिए ही जीना पसंद कर, सिगेरट के दम मारते हुए कहता है कि 'दो बच्चे पर्याप्त है!' कैसी है यह कंगालियत!

## अरे, विप्रजनों, आपके 'उपरवाले' को समझ लें!

बात बात पर धर्मचुस्त ब्राह्मण रटा करता है कि "जैसी उपरवाले की मरजी। उपरवाला जो करना चाहे वह करेगा।" इस मान्यता को आज भारी धक्का देना है। आजकल तो हमारा 'उपरवाला' कोई दूसरा ही बैठा हो, ऐसा महसूस नहीं होता?

जिसकी मेहरबानी में हमारा मौजमजा बना रहें और जिसकी नाराजी से हमारा खून सूख जाय, उसे ही अपना उपरवाला समझेंगे? जिसकी शरण लेकर हमने जीवन निभायें, वही हमारा उपरवाला है?

अफसोस, अर्थ के इस सन्दर्भ को ध्यान में लिया जाय तो हमारा उपरवाला, यूरपी गोरा ही स्पष्ट होता है।

शिक्षा का विषपान उसीने कराया। १८५७ का विद्रोह पैदा कराकर वीरपुरुषों को उसीने तोप के मुँह लगवा कर उनके शरीरों को तार–तार करवा दिये।

देशी अंग्रेजों की पैदाइश उसीने की और उन्हें 'स्वराज' भी उसीने थौपाया। हम दिखावे मात्र के, नाममात्र के हिन्दुस्थानी; लेकिन रहन–सहन

खाना-पीना आदि सब कुछ पश्चिमी ढंग का उसीने कर दिया। अतएव 'स्वराज' यानी 'गोरों का अपना राज' ऐसा अर्थ समझना होगा।

देखिये विप्रजन ! हमीने अपने हाथों हमारी संस्कृति का, मर्यादाओं का आस्तिकता का सर्वनाश कर दिया। उपरान्त, हमीने अपने हाथों यूरपी गोरों की जीवनपद्धति का, हमारे जीवन में बोलबाला बढ़ा दिया है !

आज भी हमारे मंत्री, मुख्यमंत्री प्रधान मंत्री, आदि लोग भी अपनी खुशामतखोरी में गौरव महसूस नहीं करते ! यही इस बात का प्रमाण है कि, हमारा उपरवाला यह यूरपी गोरा ही है। हमने उसकी भक्ति करने में होड़ लगायी है। हमने उसकी विरासत लेकर उसके सही भक्त-अनुयायी बनने का मान पाया है।

www.yugpradhan.com

जिसे संस्कृति के मूलभूत तत्त्वों के साथ लेशमात्र संबंध नहीं है, उसे 'उपरवाला' के रूप में ईश्वर को संबोधित करने का लेशमात्र अधिकार नहीं है। चाहे फिर वह यज्ञोपवीत धारण करता फिरे या ललाट पर केसर का तिलक लगाये घूमता रहे।

## अरे, सुखप्रेमी-चाहक सद्गृहस्थ !

पाश्चात्य प्रभाव के चक्कर में जो फँसे, पाश्चात्य विकारों की तेज बाढ़ में जो बहे, वे सभी अर्थ और काम की सुखासक्ति में आकंठ डूब चुके हैं। गृहस्थ लोग तो पहले भी थे।

अर्थ-काम का व्यवहार वे भी चलाते-निभाते थे। लेकिन वह व्यवहार इतना मर्यादापूर्ण बना रहता था कि उनके गृहस्थजीवन को भी गृहस्थ-आश्रम समझा जाता था। इसीलिये लोग भोगी होने पर भी योगी जैसे माने जाते थे।

वर्तमानयुग का गृहस्थ तो भोगी कहलाने लायक भी नहीं रहा। वह पूरा भोगलंपट बन पाया है। अर्थ के लिया अंधा और कामका पूरा कीड़ा।

ऐसी परिस्थिति घरघर में व्यापक है। अपने व्यक्तिगत सुखवासना की तीव्र आकांक्षा को संतोष देने में इन लोगोंने राष्ट्र को भारी आघात पहुँचाया है। प्रजा के जीवन में अपने पापाचारों का प्रसार कर, प्रजा के उच्च स्तर को नीचे ला पटका है। शील, न्याय, करुणा आदि संस्कृति–परंपराओं का सत्यानाश कर दिया है। और धर्म के साथ तो (दंभी–ढोंगी धर्मीजन बनकर) खतरनाक धोखाबाजी ही की है।

मैं यह जरूर कहूँगा कि, गृहस्थजीवन के व्यक्तिगत सुख की अपेक्षा, राष्ट्र, प्रजा, संस्कृति और धर्म क्रमशः उत्तरोत्तर महत्तर हैं।

मैं यह भी कहूँगा कि, व्यक्तिगत वासनाओं की पूर्ति उस ढँग से तो की न जाय, जिससे राष्ट्र, प्रजा, संस्कृति और धर्म के भव्य और लोकोत्तर गौरवों की गगनचुम्बी इमारत के कंकड भी हिलने लगे।

www.yogpradhan.com

मुझे कहने दें कि, व्यक्तिगत सुखप्राप्ति करते समय जो लोग राष्ट्र आदि को हानि पहुँचाते हैं, उन्हें मानव कहे नहीं जा सकते। उसके साथ राक्षस शब्द जोड कर ही उनका सही परिचय कराया जा सकता है।

व्यक्ति आज है, कल नहीं। उसके द्वारा विहित सांस्कृतिक विनाश व्यापक है, दीर्घकालीन है, इस बात को हरएक भारतीय याद रखे।

## अरे, ५८ साल से उपर की उम्रवाले सद्गृहस्थ !

आप मानें या न मानें, परलोक का अस्तित्व है, है और है। भयसे आँखें मूँद देनेवाले चूहे के सामने खड़ा हुआ बिलाव दीख न पड़े, अतः बिलाव है ही नहीं, ऐसा हम कभी कह नहीं सकते।

अब परलोक निश्चित रूप से है। जितनी मृत्यु निश्चित है, उतना ही मृत्यु के बाद पुनर्जन्म भी निश्चित है; तो मृत्यु से पूर्व के छोटे से जीवन की चिन्ता की अपेक्षा मृत्यु के बाद के अनेक जीवनों की चिन्ता करना बेहतर नहीं है क्या ?

बहुत खेले, बहुत कुछ उछलकूद की, बहुत–सा देखा और बहुत कुछ सहा भी। अब क्षमा करें। आप ५८ साल गुजार चुके हैं। ऐसे लोगों को सरकार भी नौकरी में से निवृत्त कर देती है। पैन्शन दे देती है। तो अब आपलोग अपने मरणोत्तर जीवन की फिक्र में लग जायें। यह भी आपके सुखदुःख से संबंधित बात है। कहाँ जन्म प्राप्त करना ? यह कोई मामूली बात है ? अरे पुत्र–पुत्रीयों के शादी के प्रश्न, धंधे में उधार–वसूली की समस्यायें और शारीरिक व्याधियों के प्रश्न भी, आपकी मृत्यु के साथ ही खत्म हो जानेवाले हैं। उनकी ज्यादा फिक्र में क्यों हैं ? उसकी अपेक्षा तो, मृत्यु के बाद पैदा होनेवाली समस्या 'मृत्यु के बाद जन्म कहाँ प्राप्त करना ?' अति गंभीर है।

तो आप सावधान हों। अब मोहनिद्रा का त्याग करें। परिवार और संसार के मायाबंधन छोड दें। सही अर्थ में 'रणछोड' बन जायें। संसार के संघर्षों को छोड दें। आत्मा की शुद्धि में, ईश्वर की भक्ति में, जीवमात्र की मैत्री में संस्कृति की जरा भी झाँकी हो पाती है ?

अफसोस, वैयक्तिक सुखों, प्रलोभनों और स्वार्थों के खातिर, हमारे प्राणाधार–सी संस्कृति से ही हम विमुख हो चुकें हैं।

ऐसे हिन्दूओं को कोई खिस्ती बनाये, तो होहल्ला मचाने से फायदा ही क्या ? विधिपूर्वक खिस्ती बनने से पहले ही सभी शिक्षित लोग खिस्ती बन ही चुके हैं !

## अरे, संगठनप्रेमी लोग !

आप लोग, जहाँ तहाँ भाषणों में संगठित होने की जोरदार अपीलें करते हैं। मैं जानता हूँ कि आपकी यह आवाज अभ्यासशून्य है। संगठन चीज क्या है ? किसका ? किसके लिए ? ऐसा कोई भी प्रश्न बिना सोचे आँख मुँद कर संगठन के मुलायम सिक्के को जगत के प्रवाहों में बहाया है। सस्ती कीर्ति प्राप्त करनेका यह उत्तम साधन आपको प्राप्त हो गया है। उसका मतलब यह नहीं कि मैं संगठन का विरोधी हूँ; लेकिन एक बात है, सिद्धांतहीन संगठन का तो मैं जरा भी समर्थक नहीं हूँ। अपने निजी विशिष्ट लाक्षणिक तत्त्वों का परित्याग कर जिन संगठनों का आयोजन किया जाय, उनका समर्थक कोई भी संस्कृतिप्रेमी धर्मीजन तो हो ही नहीं सकता।

www.yogpradhan.com

प्रत्येक धर्म के अनुयायियों के लिए अपने स्वतंत्र भिन्न भिन्न क्रिया काण्ड लाक्षणिक भिन्न भिन्न संस्कार बने रहेते हैं। उनका बिना परित्याग किये संगठन करना संभव नहीं। अतः उन तमाम धर्मपरंपराओंका परित्याग कर 'ईश्वर-प्रार्थना' जैसी एकाध बात पर संगठित होने के समर्थन का अर्थ यही है कि, प्रत्येक जन अपने गौरवों को अपने हाथों खंडित करे। आपका शेष जीवन लगा दें। आज ही, अभी ही, आपके जीवन को परिवर्तित कर दें।

देखिये, असमंजस में न रहे। बहुत सा विलंब हो गया है। प्रतिपल अपने आपसे पूछते रहे—'मृत्यु के उपरान्त क्या और कहाँ ?

## अरे, शिक्षित जन !

आप यह तो अच्छी तरह जानते हैं कि वर्तमान शिक्षा (स्कूल—कालिज की) की नींव लार्ड मैकोले नामक अंग्रेजने सवा—सौ साल पहले बंगालमें रखी थी। आज वह शिक्षा समग्र भारत में, उसके प्रत्येक गाँव में फल चुकी

है। लार्ड मैकोलेने अपने स्वजन पर लिखे प्रत्र में उस समय निवेदित किया था कि—"यदि मेरी शिक्षापद्धति व्यापक बन पायेगी तो थोडे ही वर्षों में हिन्दुस्थानी लोगों को ईश्वरश्रद्धा से विमुख कर देने में भारी सफलता प्राप्त करूंगा।"

ये उसके वाक्य अक्षरशः सफल हो पाये हैं।

एक अंग्रेजने सचमुच यह सही बात की है कि: "भारत का कोई भी पढ़ा-लिखा आदमी वास्तव में ईसाई ही है; चाहे भले उसका आराध्य देव इसु न भी हो, और महावीर, राम, कृष्ण या शंकर भी रहे।"

इसी बात को दूसरे एक अंग्रेजने प्रकारान्तर से पेश की है कि—"कोई भी शिक्षित आदमी प्रत्यक्ष या परंपरया हमारी चर्च संस्था का ही सभ्य है।"

अरे भारतीय शिक्षित जन, आपको इन बातों में जरा भी सत्यांश महसूस नहीं होता ?

www.yugpradhan.com

क्या आपके घरों में पप्पा—मम्मी आदि शब्दों ने प्रवेश नहीं किया ?

क्या भोजन के लिए बैठक छोडकर टैबल—कुर्सी भोजनखंड में आ नहीं पहुँचे हैं ?

क्या आपके कपड़े, भोजन, शादी की पार्टियाँ, विदेशगमन, मित्रमंडली, पठन आदि तमाम प्रसंगो में आपको, यह दिखाई नहीं देता ?

भिन्न भिन्न वस्त्र पहनने वालों के संगठन करने में, यदि सभी के कपड़े उतार देने की बात हो तो वैसा संगठन किसी को भी मान्य न हो।

जो धर्मप्रेमी लोग अपनी मौलिक परंपराओं को छोडते नहीं और ऐसे उपहासपात्र संगठनों में साथ देते नहीं, उन्हें 'रूढिचुस्त' झगडाखोर के विशेषण दिये जाते हैं। उनकी तीव्र आलोचना भी की जाती है। लेकिन मैं उनके साथी मित्र के रूप में आपसे बताऊँगा कि ऐसी बदनामी से आप जरा भी व्यग्र न हो। आप जिन धर्मपरंपराओं का चुस्ती से पालन कर रहे हैं, उन्हीं ने आपको 'सहनाववतु, सह नौ भुनक्तु' को विश्वमैत्री के पाठ सिखाये है, फिर

चिन्ता किस बात की ? वे तथाकथित संगठनवादी तो कोरी बातों द्वारा लोगों का माल हडप कर लेनेवाले उस्ताद हैं ।

## अरे, दुःखों से व्यग्र बने लोग !

सुख सभी को जँचता है और क्यों न जँचे ! आखिर वह भी आत्मा की अपने स्वभाव की सहज वस्तु है । जो अपनी हो, उसके प्रति सहज ममत्व बना रहता है ।

लेकिन दुःख आत्मा का स्वभाव नहीं है । वह परायी चीज है । अत एव दुःख किसीको पसंद नहीं । पराया सब बोझिल बन जाता है ।

फिर भी, एक बात अवश्य है कि धूपछाँव की तरह कर्मों के उदयानुसार सुखदुःख की आवन–जावन बनी ही रहेगी । हम सुखको जबर्दस्ती से पाना चाहे तो, वह प्राप्त नहीं होता और दुःखको जबरन हटाना चाहे तो वह दूर भी नहीं होता ।

यदि यह एक वास्तविकता हो तो, दुःखको दूर करने के व्यर्थ प्रयत्न दुखी आदमी तत्काल छोड़ दें । दुःखों से व्यग्र आदमी – या एक संसारी गृहस्थ, दुःख दूर करने के भरसक प्रयत्न करे, यह सहज बात है । उसके प्रति हमदर्दी भी व्यक्त कर सकते हैं; लेकिन उससे भी यह अपेक्षा जरूर रखी जा सकती है कि, दुःखको हटाने के लिये वह अनिच्छनीय–अनुचित उपाय न आजमायें । उसकी सज्जनता को कलंक लगे, ऐसी कोशिश न की जाय ।

दुःख जब आ पहुँचे तब जैसे परमपिता परमात्माका ध्यान किया जाता है, वैसे 'भवितव्य' का भी खयाल करना चाहिए । 'यह दुःख मेरे जीवन में अवश्यंभावी था ही; अतः वह आ पहुँचा है । यदि मेरा भवितव्य ऐसा न होता तो यह असह्य दुःख कभी आ न पाता । अब जब यह निर्माण निश्चित

था ही; तो भले ही वह हो पाया। उसमें अफसोस करने से या आघात महसूस करने से क्या फायदा !?'

ऐसा भवितव्यताविषयक ध्यान, दुःख के समय बेहद आश्वासन देता है। चित्त के ऐसे समाधान या समतुला का नाम ही 'समाधि' है।

## अरे, लोकशासनवादी जन !

लोकशासन में तो मेरी भी पूरी निष्ठा है। राजा रामको राजाशाही में भी लोकशासन का पूरा बोलबाला था; लेकिन वह लोकशासन राजाशाही के अधीन था। राजाशाही संतशाही के प्रति प्रतिबद्ध थी और संतशाही धर्म महासत्ता से पूर्णतया संलग्न थी।

इस प्रकार धर्म महासत्ता का सर्वोपरि प्रभाव, निम्न गति कर, सर्वत्र प्रसरित हो जाता था।

आइए, हम वर्तमान तथाकथित लोकशासन के बारे में सोचविचार करें।

यहाँ 'सेक्युलर–स्टेट' नामक छुरी से धर्म महासत्ता एवं संतशाही दोनों को खत्म किये जा रहीं हैं। और निम्नसूचित अविकसित तत्त्वों में से संपत्ति आदि के जोर पर चुने गये कतिपय लोगों की यह मर्यादित 'लोकसत्ता' कही जाती है।

यहाँ प्रजाजन मतदान करते हैं और काम करना होता है पक्ष के सर्व-सत्ताधीशों की नीति अनुसार, जिन्हों ने निर्वाचित किये हैं, उन प्रजाजनों की इच्छा का कोई स्थान नहीं रहता। पाँच–पंद्रह राजाओं की बदमासी के कारण सारी राजाशाही को ही खत्म कर दी गयी। अपरिपक्व और अनपढ़ लोगों के मतदान पर ही यहाँ सत्ता के सिंहासन दीर्घकाल पर्यन्त टीके रहते हैं या पलभर में उलटपुलट किये जाते हैं।

इस प्रकार निम्नस्तर के अबुद्ध—अनपढ़ लोगों का मिजाज जब बिगड़ बैठता है तब प्रजा के कल्याण की जरा भी परवाह बिना किये, हडताल, धरना, तूफान आदिका आयोजन हो जाता है और करोडों—अरबों रूपयों की संपत्ति को रात ही रात में बरबाद कर दी जाती है।

जहाँ गांधीजी और नाथुराम गोडसे की अंगुली का मतमूल्य समान ही माना जाय, सयाना और पागल दोनों का चुनाव में समान स्थान हो, ऐसे लोकशासन से इस देश की प्रजाका कल्याण कैसे हो पायेगा ? मेरे मनकी यह बड़ी समस्या है। अफसोस, घर में किसी के द्वारा चुप्पी से रखे गये अणुबम के प्रति कैसी है हमारी दारुण ममता !

www.yugpradhan.com

## अरे, चुनावप्रेमी लोग !

इस चुनाव प्रथाने हिन्दुस्थान की प्रजाकी किस हद बरबादी कर दी है, उसका वर्णन तो खुद बृहस्पति ही कर पाये।

दुःख इस बात का है कि वर्तमान शिक्षित ( अंग्रेजों के छिपे रुस्तम—अमीचंद ) आज भी उस चुनाव—तंत्र को 'प्रजाके सुख—शान्ति के मूलाधार' के रूपमें पेश कर उसके गुणगान किया करते हैं।

खैर, कतिपय प्रणालियाँ मूल से नष्ट—भ्रष्ट करने योग्य होती है, लेकिन शिक्षित लोगों के इस लोकशासन में जब उसके विनाश के लिए जरूरी बौद्धिक भूमिका तैयार हो न पाये, तब तक सही बात भी हास्यास्पद बनकर रह जाती है।

अत एव यहाँ दूसरा विकल्प धरता हूँ।

चुनावप्रथा भले बनी रहे; लेकिन कई बदमास लोग विजयी बन जाते हैं उस स्थिति को दूर करने के लिये लायक और नालायक की निश्चित व्याख्या तय कर देनी चाहिए।

मेरी दृष्टि में चुनाव में खड़े रहने की योग्यता गाँव के उसी आदमी की मानी जाय, जिसके घर सारा गाँव जा पाता हो, और हाथ जोड प्रार्थना करता हो कि, "आप जैसे भले आदमी यदि इस राजनीति से दूर बने रहेंगे तो बदमासों के हाथों लोकशासन बरबाद हो जायेगा, प्रजा परेशान हो उठेगी। अतः आप लोग बाहर आये और चुनाव में खड़े रहकर संचालन के सूत्र सम्हाल लें।"

प्रजा की आग्रहपूर्ण इस प्रार्थना से, नम्रता से बार बार इन्कार कर देने वाला आदमी चुनाव के योग्य समझा जाय।

लेकिन जो आदमी लोगों के घर–घर भटकता फिरे और हाथ जोड़कर लोगों से चापलूसी करता फिरे कि–"आपका अमूल्य मत मुझे दे कर उपकृत करें।" ऐसे मत के भिखारी और पैसों के लोभी को अयोग्य समझा जाय।

यदि इस प्रकार लोकशासन की कुर्सियों पर ऐसे पात्र और निष्ठावान आदमी बैठ पाये तो शायद मृतःप्राय बनी प्रजा में पुनः चैतन्य का संचार हो पाये।

## अरे, चिन्ताग्रस्त सज्जनगण !

मैं जानता हूँ : आप के मुख ही बता देते हैं कि, आप लोग बड़ी भारी चिन्ता के बोझ से लदे हुए हैं।

देश की भूमि आपको आबाद होती हुई जान पड़ती है; क्यों कि अनेक चंडीगढ़ और गांधीनगर तैयार हो उठे हैं और कई औद्योगिक नगरों ने अपना अस्तित्व बना लिया है।

साथ ही साथ प्रजा की सुख–शान्ति का सर्वनाश भी आप की नजरों के सामने हो रहा है।

देश प्रगति कर रहा है।

प्रजा बरबाद होती जा रही है। दोनों का समन्वय क्यों नहीं हो पाता; क्यों ? इसी कारण आप चिन्ताग्रस्त हो पाये हैं।

तो सुनिये, शायद आप की चिन्ता को दूर करनेवाला राहबर मैं भी हो पाऊँ।

आप महसूस करते होंगे कि हमारी प्रजा की सारी खाना-खराबी अंग्रेजों ने, रूसी लोगों ने या अमरिकों ने की है। शायद क्रोध में आकर आप कह उठे कि मास्को और न्यूयार्क पर दो-चार बम गिरा देने चाहिए।

लेकिन सावधान, आप आवेश में बह न जायँ।

सही बात यह है कि भारतीय प्रजा की आबादी की खानाखराबी करने वाले मास्को या न्यूयार्क नहीं; लेकिन आपकी भूमि पर खड़े विश्व विद्यालय, कालिज आदि तमाम शिक्षासंस्थाएँ हैं। उस शिक्षा के ढाँचे ने ही, प्रत्येक शिक्षित भारतीय के 'भीतरी आदमी' को खत्म कर उसे शयतान-सा बना रखा है।

उसे खिस्ती बना दिया है। साथ ही, देशद्रोही, प्रजाद्रोही, धर्मद्रोही और स्वद्रोही तक बना दिया है।

प्रत्येक शिक्षित भारतीय 'अमीचंद' है, ऐसा मैं विधान करूँ तो वह झूठा नहीं होगा।

जिस शिक्षा के ढाँचे में, स्वधर्म के गौरव के पाठ सिखाना पाप समझा जाय, वह क्षुधापूर्ति की शिक्षा, वासना के कीड़ों, धन के लालचियों और स्वार्थान्धों को ही तैयार करें तो उस में आश्चर्य क्या ?

जिस खेत में बीज बोये न जायँ, उस खेत में घास और फूस आप ही आप पैदा हो ही जाते हैं !

www.yuvadhan.com

## अरे, सर्वोदयवादी जन !

दुनिया में, सर्वोदयवादी के रूप में आपकी ख्याति है। मैं मानता हूँ कि जैसे पूँजीवाद, समाजवाद और आखिर में साम्यवादने इस देश की प्रजा का उत्तरोत्तर निकंदन निकालने में पूरी सफलता प्राप्त की है। अब शायद उसी कार्यवाही में पूर्ति करने के लिये आपका सर्वोदयवाद आ धमका तो नहीं है ? और आप लोगों से भी वह काम पूरा न हो पाये तो उसे पूरा करने के लिए तथाकथित विश्वशान्तिवाद तो क्यू में खड़ा ही है।

आप लोग सर्वपक्षों के विसर्जन की जो बातें करते हैं; उन में यज्ञोपवीत को भी पक्ष का प्रतीक मान कर उसे भी दूर करने का आग्रह किया है, यह अत्यंत शोचनीय है। खैर, आपको जो पसंद आये आप करें; क्योंकि आपको आन्तरराष्ट्रीय परिबलों की भारी सहायता प्राप्त है; लेकिन एक बात निश्चित रूप से समझ लें कि हमारी प्रजाके पक्ष, वर्तमान पक्ष जैसे घातक न थे। वास्तवमें विकेन्द्रीकरण द्वारा, सर्व जीवों के लिये सुख और शान्ति के सर्जक बने थे। यज्ञोपवीत भी उन धर्मानुयायीओं के जीवन में अध्यात्म का संचार करनेवाला मुख्याधार था।

ब्राह्मण समुचो ब्राह्मण कौम को सम्हाल सके। जैन सभी जैन समुदायों की व्यवस्था कर पाये। बुनकर बुनकरों को, पटेल पटेलों को सम्हाल ले। फिर न कोई भूखा–प्यासा रह पाये और न कोई दुःखी। उपरांत अन्योन्य प्रेम से बंधे रहे। ऐसी धर्म की नींव पर आधारित 'भेद में अभेदरूप' ऐसी एक उत्तमोत्तम व्यवस्था गढी गयी थी। लेकिन प्रजा की यह कमनसीबी है वह अपनी बात व्यवस्थित ढंग से पेश नहीं कर पाती। फिर भी, आप से हमारी प्रार्थना है कि नये करतूत शुरु करने से पहले, हमारी प्राचीन परंपराओं के रहस्य को अच्छी तरह समझ लें।

## अरे राज्यनीति के भविष्यवेत्ता !

आप अच्छी तरह समझ लें कि आप थोडे समय के लिये थोडे आदमियों को मूर्ख मना सकेंगे या कई आदमियों को थोडे समय के लिये बेवकूफ बना पाओगे। अरे, ज्यादा लोगों को ज्यादा समय तक, उल्लू भी बना पायेंगे; परन्तु सभी लोगों को हर हमेशा बुद्धु बनाये नहीं जा सकते !

हरदम नये आंकडे देकर, आपलोग भूखों मरती-तडपती प्रजा को धोखा देते रहे है। सारी दुनिया में महँगाई फैली है ऐसी घोषणाएँ कर भारत की प्रजा को झूठे आश्वासन दिये गये हैं। विकास के वेग में महँगाई और बेकारी अनिवार्य हैं। ऐसा कहकर आपलोगों ने प्रजा का क्रूर निष्ठुर मजाक उडाया है। सावधान, ऐसा कहने वाले यदि गोरे अंग्रेज होते तो, शायद किसी रोष में आये हुए ने गोली दाग दी होती; लेकिन आप हैं श्यामवर्णी हमारे देशवासी ! कोई करे भी तो क्या करे !

लेकिन सावधान ! आपकी अज्ञानता और मूर्खताने भारतीय प्रजा की कमर पर इतना भारी बोझ लाद दिया कि अब उसकी सहनशक्ति तूट चुकी है। कब क्या नौबत आये, पता नहीं।

आपके लोग ही बताते है कि—"गरीबी की रेखा से नीचे २२ करोड भारतीय लोग जीवन यापन कर रहे है। कुल मिलाकर ३८ करोड लोग सही अर्थ में गरीब हैं।

आप के साथी ही बता रहे है कि—'इ.स. २००० के साल में आधी संख्या के भारतीय लोग मृतःप्राय बने होंगे। दूध, घी, गेहूँ, चीनी आदि का संपूर्णतया अभाव होगा।"

अफसोस ! फिर भी अरे राजनीति के भविष्यवेत्ता ! आपके देशबंधुओं से आप धोखाबाजी करते रहेंगे। आंकडों की मायाजाल में उन कबूतरों को

फँसाते रहेंगे ! सचमुच तुम जैसों–सी क्रूरता दूसरों में शायदही दीख पड़े ऐसा मैं दावे के साथ कह सकता हूँ।

## अरे, स्व–धर्मप्रेमी बंधु !

आप अच्छी तरह समझ लें कि, जिस धर्म की आप उपासना कर रहे हैं उसके उपर चीन, पाकिस्तान, विदेशी अंग्रेज या पश्चिमी पद्धति के अनुकरणवाद आदि की ओर से जितना खतरा नहीं, उससे ज्यादा आपके घर की ओर से ही है। आपके ही घरों में स्थित धर्मस्थानों में प्रमुख, मंत्री या ट्रस्टी आदि स्थानों पर आरूढ़ हुए, पश्चिमी रंगों से रंगे हुए हैं। मैं उन्हें अंग्रेज ही कहता हूँ। ये लोग सुधारकी बातों के जरिये, आपके धर्म के तमाम सिद्धान्तों में खाना-खराबी पैदा करने का काम ही कर रहे हैं। एकता के नाम पर संघर्ष पैदा कर रहे हैं।

जो लोग सत्ता और संपत्ति के नशे में ही जी सकते हों, धर्म के मूल-भूत आचारों का जिनके जीवनमें से लोप हो चुका हो; ऐसे लोगों को धर्म के सिद्धान्तोंमें सुधार–परिवर्तन लाने की बातें करने का लेशमात्र अधिकार नहीं है। लेकिन दुःख की बात यह है कि, ऐसे लोगों की थोडी बहुत कीर्ति प्राप्त करा देनेवाली धनादि प्रवृत्तियों से धर्मप्रेमी जन प्रभावित हो जाते हैं। उनकी सत्ता के आगे वे शरणागत बन पाते हैं और जानबूझकर उन्हें समाज आदि क्षेत्रों में अग्रसर बनाने की गलतियाँ करते हैं। इसमें सिवा खुशामतखोरी के, और कुछ नहीं।

यह खुशमातखोरी ही आपका सबसे बड़ा शत्रु है। यदि आप उन देशी अंग्रेजों को उनके सांसारिक क्षेत्रोंमें ही पड़े रहने दें और धर्मक्षेत्रों में बिलकुल प्रवेश ही करने न दें तो मुझे लगता है कि क्रान्ति और सुधार के नाम वे लोग धार्मिक क्षेत्रों में जो खानाखराबी–अराजकता पैदा करना चाहते हैं; उसके पर रोकथाम लग जाय।

## अरे, लोकशासनपरस्त लोग !

इस लोकशासन ने भारतीय प्रजाजन के बचेखुचे सुख–शान्ति को बरबाद कर दिये फिर भी, नेस्तनाबूद हुई लोकसत्ता के गुणगान करने से बाज नहीं आते। आप को इस लोकशासन की अनेक समस्याएँ शोचनीय लगीं; परन्तु यह लोकशासन स्वयं एक भयानक समस्या है; यह कभी आपने महसूस नहीं किया; यही मेरी समझ में नहीं आता। आप लोग बताते हैं कि–'लोकशासन के ढाँचे में आमूलाग्र परिवर्तन ला दे। लोकशासन की नींव की रक्षा करें। लोकशासन ही हमारे कल्याण का एक मात्र स्वप्न है। लेकिन मैं आपसे पूछता हूँ कि, यह लोकशासन का ढाँचा स्वयं ही भयानक और खतरनाक है, ऐसा क्यों मालूम नहीं होता ?

www.yugpradhan.com

लोकशासन में लोगों का अधिकार कितना ? मतदान करने मात्र का ? उसके बाद जो भी काम किये जायँ, उन में उनके अभिप्रायों का कोई महत्त्व रहता है ? या निकसनों, ब्रेजनेवों और किसींजरों से कदम–कदम पर सलाह–मशविरा किया जाय? लोग मात्र निर्वाचित करें और निर्वाचित हो जाने के बाद प्रजा से वे मिलने–पूछने तक न जाय ! किसींजरों की आज्ञा ही शिरोधार्य बन जाय। बदले में गद्दी सलामत। और गद्दी के सलामत रहने पर दुनिया सारी सलामत दीख पड़े। भले ही फिर प्रजा के लाखों आदमी भूखे प्यासे तड़पते मरते रहें। लोकशासनप्रेमीओं बुरा न माने; लेकिन जो लोग लोकशासन में आबाद हो जाते हैं, ऐसे लोगों की यह 'लोकसत्ता' है। लुच्चे, गुण्डे, झूठे, हरामखोर, दाणचोर और छिपे रुस्तम ही मालामाल हो गये हैं। फिर लुच्चों का ही लोकशासन कहेंगे उसे। इसी लिये करोड़ों, गरीबों, भोलेभालों, अनपढ़ आदमियों के लिये इस लोकशासन में मरने के सिवा और कोई चारा ही दीख नहीं पडता।

और आखरी बात ! आप लोगों ने शासन चला कर धूम लूट चलायी है। अब शान्ति से गद्दियाँ छोड दें। अच्छे आदमियों को स्थान दें। मृतःप्राय

प्रजा पुनः चैतन्यपूर्ण बन पाये। क्योंकि आखिर तो उनका बीज, गौरव-शालियों का बीज है !

जहाँ शुद्धि नहीं, वहाँ शान्ति नहीं वहाँ तो केवल संघर्ष, उग्रता और अकुलाहट ही दीख पड़ेंगे।

## अरे, कौमविरोधी लोग !

आप लोग कौमवाद के विरोधी होने का दिखावा करते हैं; लेकिन वास्तव में तो आप लोग ही कौमविरोधी हैं। रंगभेद के विरोध, वास्तव में रंग–वर्ण के ही विरोधी होते हैं।

www.yugpradhan.com

ठीक है; लेकिन मैं आप से पूछता हूँ कि, कौम, ज्ञाति, आदि इस देश की प्रजा को सुख–शान्तिपूर्वक जीवन यापन कराने के लिये संतों द्वारा सुगठित ऐसी सामाजिक व्यस्थाएँ थी। फिर भी, आप लोगोंने उन्हें ही सभी झगडों के कारण रूप बतायी और उन्हें विषमता–असमानता की पोषक सिद्ध की। लगातार चलाये गये ऐसे प्रचार के कारण वह सरासर झूठ भी गोबेल्स सत्य बनकर भारत की भोली प्रजा के समक्ष अवतरित हुआ। परिणाम रूप उसी प्रजा के द्वारा घोषित किये पागल कुत्ते के शूट कर देने में हाथ बटाया गया।

खैर, आज तो कौमें और ज्ञातियाँ, सुव्यवस्था की आदर्श योजनाओं के रूप में जीवित नहीं है; लेकिन चुनाव के गीदडों की मिजबानी के लिये जीवित मुर्दों के रूप में, उन्हें व्यवस्थित ढंग से सम्हाली गयी हैं।

उसे भी छोडे दें। मेरा प्रश्न तो यह है कि, कौमों, ज्ञातियों और संप्रदायों के प्रति घृणा व्यक्त करनेवाले आप लोगों ने नयी कौमें, नयी ज्ञातियाँ, नये गुट, नयी मंडलियाँ आदि का सर्जन किया है; उसका क्या जवाब है ?

उपरांत ये नये सर्जन तो भूतकाल की कौमें, ज्ञातियों आदि की अपेक्षा कितनी कातिल और खूनखार हैं।

आप के राजनीतिक पक्ष–कांग्रेस, जनतापार्टी, साम्यवाद आदि नये ढंग की कौमें और ज्ञातियाँ ही हैं।

## अरे, शान्ति के समर्थक लोग !

आप लोग शान्ति की बातें करनेवाले है; लेकिन आप लोगों को मालूम है क्या की शान्ति का मूल कौन है ? संघ, समाज, संस्था, कुटुंब या व्यक्ति में पैदा होनेवाले वैमनस्य क्यों होते हैं ? उसे खोजने का आप लोगों ने कभी प्रयत्न किया नहीं है। अत एव जो भी उपरी निमित्त हाथ लगा, उसे वैमनस्य के उत्पादक रूप में घोषित कर आत्मसंतोष की साँस लेते है। लेकिन उससे वैमनस्य का रोग और भी उग्र और व्यापक बन जाता है।

अब मेरी बात सुनें। वैमनस्य का मूलभूत कारण है संघ, समाज, संस्था, कुटुंब या व्यक्ति के मन में अंतर–में रही अशुद्धि है, ब्रह्मचर्य, नीति, दया, करूणा आदि संबंधित जो अशुद्धि होती है, वह अपना चमत्कार बिना दिखाये नहीं रहती। संभव है वह व्यक्ति आदि अधिक पुण्यशाली हो तो उसकी अशुद्धि दबी पड़ी रहे। शायद वह कभी प्रगट भी होने न पाये; लेकिन छिपायी गयी वह अशुद्धि वैमनस्यों को बिना पैदा किये रह नहीं पाती। जो संघ, संस्था, व्यक्ति या कुटुम्ब में सदा के लिये टंटे–फिसाद चलते रहते हों, वे यदि सही भावना से अंतर्निरीक्षण करेंगे तो उन्हें यही अशुद्धि मूल कारण के रूपमें दीख पडेगी।

पुण्यबल से कार्य का आरंभ ही किया जाय। उसका सफल अंत तो शुद्धि के बल पर ही पाया जा सकता है। जिस पुण्यशाली के पास शुद्धि नहीं, उसे कार्यों में भारी निष्फलता के सिवा और कुछ नहीं मिलता।

सभी आत्मचिंतन करें। वैमनस्यों के कारणभूत अशुद्धि के प्रति उपेक्षा-भाव दिखाकर इधर–उधर के तत्वों को कारण के रूप में प्रतिपादित कर दिये जाते हैं। यह आत्महत्या रूप खतरनाक अभिगम है। शान्ति का संबंध शुद्धि से है। जहाँ शुद्धि नहीं वहाँ शान्ति नहीं।

महाजन संस्था को खत्म कर, खडी की गयी विदेशपरस्त लायन्स, रोटरी, जायन्ट क्लबें यदि संप्रदाय गुटबंदियाँ नहीं तो और क्या है ? चुनाव के नौबत रूप पैदा किये गये मंडल, दल आदि वाडे–दायरे नहीं तो और क्या है ? समुची संस्कृति विनाश करनेवाली ये नयी कोमें, ज्ञातियाँ और गुट-बंदियाँ हैं। इसे हम कभी भूल नहीं सकेंगे।

www.yugpradhan.com

## अरे, नवयुग (!) के आत्यंतिक उत्साही जन !

'नवयुग', 'नवनिर्माण', 'नवसर्जन' आदि शब्द इतने सारे लुभावने हैं कि, उसके योजनाबद्ध प्रचार के कारण, भारत की समस्त प्रजा भुलभुलावे की खाई में गिरी है।

बेशक, अन्तिम तीन सौ वर्षों के विदेशी शासन ने, मूलभूत संस्कृति को पलट दी है। और प्रजा के तमाम स्तरों में विकृतियाँ उपस्थित कर प्रजा की सुखशान्ति को तहस–नहस कर दी है। इस छिन्न–विच्छिन्नता को दूर करनी ही होगी। लेकिन यहीं पर एक भ्रामकता है। ऐसी विकृतियाँ द्वारा किसी महा–विकृति की प्रतिष्ठा करना, उसे 'नवयुग,' 'नवनिर्माण' या 'नवसर्जन' का नाम दिया जा रहा है। नहीं, सचमुच तो इतना जरूरी हैं कि विकृतियों को दूर कर, पुनः मूलभूत संस्कृति की स्थापना कर दें, जिससे पुनः सही सुख–शान्ति के दिन पाये जा सके।

लेकिन उत्साह के आत्यंतिक लोग, सही बात को भूल पाये हैं। उन्हें विषैली शिक्षा द्वारा, आयोजित ढंग से भुलावे में डाले गये हैं। वे बेचारे नाम

मात्र के भारतीय हैं, वर्ना शिक्षाने तो उन्हें पूरे ढंग से काले—गोरे बना दिये हैं; अत एव मूलभूत संस्कृति की पुनःप्रतिष्ठा का विचार—कल्पना तक वे नहीं कर पाते।

अंग्रेजों ने पवित्र ऐसी राजाशाही में, सुरा, सुंदरी, स्वार्थान्धता को प्रवेश देकर, उसे विकृत बनाकर प्रजा के सामने धर दी। प्रजा ऐसी राजाशाही के विरुद्ध आगबबूला हो कर, सारी राजाशाही के समूलोच्छेद कर देने में निमित्त बन पायी।

अफसोस, सरदर्द पैदा होने पर सर को ही काट रख दिया! कैसी दर्दनाक आत्महत्या है।

विकृत राजाशाही का अन्त लाकर, पवित्र राजाशाही की पुनःस्थापना करना जरूरी था।

www.yugpradhan.com

अब देखिए स्थिति को। लोकशासन के बढे-चढे महाराजा यानी कभी शासन चलाने का अनुभव प्राप्त न करनेवाले मंत्रीलोग पदों पर आसीन हैं। जो अनुचित नीतियों के तीक्ष्ण हथियारों से प्रजाजीवन के सुख—शान्ति की जाहिर में कत्लेआम चला रहे हैं!

## अरे, परिवार-नियोजन के समर्थक !

सचमुच आपने कभी यह गौर से सोचा है कि किसे नियंत्रित करना है? शायद जनसंख्या में कमी करने की बात जितनी प्राथमिक—सर्वोच्च मालूम होती हो, उसकी अपेक्षा दूसरी चीज की प्राथमिकता बढ़ीचढ़ी हो!

मेरी दृष्टि में धन और पापों में जल्द से जल्द कमी होनी चाहिए। इस बात को प्रजा से जल्द परिचित करा देनी चाहिए।

भारतीय प्रजा को सारी खाना–खराबियों के मूल में जन संख्या का बढ़ावा निमित्त नहीं है; लेकिन अनीतिमय धनवृद्धि और पापवृद्धि ही कारणभूत है।

जिस परिवार में धन और पापकर्म अधिक हैं, वहाँ जनसंख्या का नियंत्रण किया जाय; तो भी जो छोटी सी संख्या बचोखुची होगी; उसके जीवन में भी खानाखराबी हुए बिना न रहेगी।

जनसंख्या में कमी करने की अपेक्षा, जनसंख्या की खानाखराबी कितनी खतरनाक होगी ?

पवित्र ऐसी अधिक जनसंख्या भी देशको हानि नहीं पहुँचा सकती और दुष्ट ऐसी थोडी भी जनसंख्या राष्ट्र के लिए खतरनाक बन पाती है।

यह कैसा दुर्भाग्य है कि, लाखो वर्षों से आर्यावर्त की प्रजा की नस–नस में व्याप्त यह समीकरण वर्तमान शासनकर्ताओं को स्वप्न में भी दुर्लभ है।

www.yogpradhan.com

लगातार रूप में विदेशियों द्वारा प्रचारित जनसंख्यावृद्धि के नुकसानों का शोरगूल, चुस्त संस्कृतिप्रेमी या धर्मीजनों के दिमागों को भी उलट देता है। परिणाम यह होता है कि, उस संस्कृति या धर्म के तथाकथित समर्थकों द्वारा ही विघातक झूठों को ज्यादा महत्त्व दिया जाता है; जिससे धर्म और संस्कृति की बुरी तरह कत्ल चलायी जाती है।

अब तो कोई महासमर्थ पुरुष अवतरित हो, तो ही उद्धार हैं ! कहाँ तक धीरज धर बैठे रहें ?

## अरे, प्रयोग–प्रेमी जन !

भारतीय प्रजा लाखों वर्षों से सुखशान्ति से अपना जीवनयापन करती थी। उसकी गरीबी भी सादाई के गुणस्वरूप थी। उसकी सादगी भी अल्पतम पापों और अल्पतम जरूरतों से मर्यादित थी; लेकिन अंग्रेजों ने इस पवित्र-सरल प्रजा को हर तरह बरबाद कर दी।

ठीक है ! लेकिन अब तो उस प्रजा को पुनः उसके मूल स्थान पर लानी ही चाहिए। उसके बदले में, इस प्रजा की सुख–शान्ति के लिये तरह–तरह के प्रयोग क्यों आजमाये जाते हैं ? विधविध प्रकार के लोग अपने मनचाहे ढंगों से प्रयोग क्यों कर रहे हैं ? आज पर्यन्त वे प्रयोग निष्फल गये । सारे प्रयोग खतरों से खाली न थे । क्रान्ति मात्र भ्रान्ति बनी रही; फिर भी मूलभूत व्यवस्थाओं की पुनःस्थापना की ओर किसी का ध्यान नहीं जाता ?

अरे प्रयोगवीरों, अब रुक जाऐ !

अरे संशोधकों, संस्कृति का जीवंत देह, आप लोगों के अखतरों के लिए थोडा है ?

अरे क्रान्तिप्रेमी, क्रान्ति करनी ही है तो एक ही काम करें । प्रत्येक क्षेत्र में मूलभूत प्राचीन व्यवस्थाओं की पुनः स्थापना करने की ही क्रान्ति करें । लेकिन कृपा करके अपनी मनगढंत कल्पनाओं के सहारे उन्हें ही केवल साकार बनाने की क्रान्ति का शंखनाद न करें । उससे तो केवल निर्दोष प्रजारूपी अन्नकण पीस कर साफ हो जायेगा ।

अब प्रयोग छोड़े, केवल ऋषिप्रबोधित योग ही करें ।

अब तो नया कुछ नहीं, सभी पुराना ही ठीक होगा । संतों और महा-संतों द्वारा जिसे सूचित किया गया है ।

अब सुधारकता को नहीं, लेकिन रूढिचुस्तता को ही वंदन किये जाय । लाखों वर्षों के कई आक्रमणों के विरुद्ध दृढमूल होकर बनी रही, वही तो रूढ़ि कहलायी । ऐसी मजबूत रूढ़ियों का त्याग कर वर्तमान नकली, स्वार्थप्रेरित, किसी भी समय निष्फल होनेवाली, क्षणभंगुर नवीनताओं को थोपने का आग्रह रखना, यह तो किसी भूतावेश का ही परिणाम होगा ।

www.yogpradhan.com

## अरे, हिन्दुस्तानी लोग !

चुनाव और समानता के मूलाधार पर टिका, लोकशासन और उसके द्वारा शासन चलानेवाला मंत्रीमंडल प्रजा का कल्याण कर पायेगा, यह बिलकुल असंभव है। खैर, समग्र प्रजा की बात अभी नहीं करेंगे। आप घर की ही बात करें :–

चारों ओर युगप्रभाव की आग जली है। उत्तम कहे जानेवाले धार्मिक परिवार भी उसकी लपटों में मृतःप्राय होने लगे हैं। घर–घर कलह–संघर्ष जारी हैं। सांस्कृतिक जीवनप्रणाली का नाश और प्रागतिक जीवनपद्धति का स्वीकार ही इस होली के निमित्त बन पाये हैं।

खैर, अब यदि आप को अपना घर सम्हालना है तो आखिर इतना समझ लें और बाद में आपके घर के प्रत्येक सभ्य को परिचित बना दें।

(१) आत्मा के विशुद्ध स्वरूप का प्रागट्य ही हमारा सही आरोग्य है।

(२) उसे जन्म रोक पाता है। अतः जन्म यही हमारा सर्वोच्च महारोग है।

(३) इस महारोग का एकमात्र औषध है, सही संन्यास (दीक्षा) का स्वीकार करना।

(४) तप, त्याग, गुरुसेवा, परमात्मभक्ति आदि इस औषध के पथ्य हैं।

(५) इस औषध में परिहार्य – कुपथ्य है, भौतिक सुखों के प्रति अभिरुचि।

(६) इस औषध का अनुपान है मोक्षदायिनी धर्मवाणी का श्रवण करना।

कोई पाठशाला, कोई क्लब, कोई मित्र, कोई सहेली, कोई पूज्य जन, कोई शिक्षक इन छः महत्त्व की बातों को समझानेवाले नहीं।

आप ही इन बातों को अच्छी तरह समझ लें, मनन करें और घर में आजमायें।

यही एक उपाय हैं, दुर्गति प्राप्त जीवात्मा को बचाये रखने का। सिवा उसके, आत्मा का अधःपतन निश्चित रूप से है ही।

www.yogpradhan.com

## अरे, कर्जदार धर्मीजन !

आप लोग विविधतापूर्ण धर्मक्रियाएँ करते हैं। मेरे लिये यह बड़ी खुशी की बात है। और भी अधिक धर्मानुष्ठान करे, उसे मेरा हार्दिक समर्थन है।

लेकिन जरा रुकिये। आप धर्मीजन किसी के कर्जदार हैं, इससे आप परिचित हैं ? इस कर्ज का कभी खयाल किया है ? यदि आप कर्ज से ही बेखबर अनजान होगें तो, ऋणमुक्त होने की कल्पना तक न होगी और शायद ऋणभार के साथ ही जीवन-समाप्ति हो जाय।

हमारे जिम्मे सारी जीवसृष्टिका ऋण है। भूलकर भी कुतर्कों के चक्कर में फँसे नहीं। अन्यथा इसी समय वह खयाल, फूफकारते नाग की तरह खड़ा हो जायेगा कि "हमारा ऋण भी तो दूसरों के जिम्मे होगा ही और इस प्रकार अन्योन्य ऋणभार होने के कारण परस्पर ही उसका छेद-विनिमय हो जाता है।"

नहीं, हम लेनदार हो तो भले रहें, लेकिन ऋण है तो कितना है, उस पर सोचें। जन्म धरने के साथ ही माता–पिता का ऋणभार हमारे पर है। जीवन में आगे बढ़ने पर कदम–कदम पर कई हितैषियों का मार्गदर्शन रूपी ऋणभार जमा हुआ है और सद्गुरुओं के प्रवचन सुनकर तो उन कृपालु गुरुजनों का ऋणभार तो अपार ही है।

अरे, सारे तारक तीर्थंकर देवों ने हमें करूणा के पात्र समझ रखे हैं। निष्कारण करूणा की धारा हमारी ओर बिना किसी परिचय बहा दी। हमारी ही हितचिंता की। अनूठा है यह ऋणभार !

सर्वजीवों का भी हमारे पर ऋणभार है। किस प्रकार ? इसका जब गौर करेंगे तो ऋणभार के ढेर के नीचे दब जायेंगे।

खैर, अब उस ऋणभार से मुक्त होने का हमारा कोई फर्ज है या नहीं ? बेपरवाही दिखायेंगे तो हम कृतघ्न–नमकहराम कहलायेंगे।

www.yugpradhan.com

देखिए, शासनभक्त साध्वीजी के ऋण से मुक्त बनने के लिये, पूज्यपाद हरिभद्रसूरिजी द्वारा की गयी जीवनसाधना की ओर नजर डालें।

उनका रचित ललितविस्तरा ग्रन्थ देखें और उसके द्वारा जीवन में स्थिरता पानेवाले सिद्धर्षि मुनि को देखें।

इस ऋणभार से मुक्त होने के लिये "उपमितिभव प्रपंचा कथा" नामक ग्रन्थरचना की।

उसके द्वारा हमारे जीवनपरिवर्तन होंगे। ऋणमुक्ति की कैसी अनूठी परंपरा लगातार तालबद्ध चली आ रही है। उसे स्थगित कर देने का दुष्कर्म क्यों करें !

www.yugpradhan.com

## अरे, एकतावादी लोग !

आप जो 'एकता' शब्द का प्रयोग पद-पद पर करते रहते हैं, उसका अर्थ हमें समझायेंगे ? एकता यानी सभी एक बन जायें ? हर तरह से एक हो जाना ? मतलब क्या दिगंबर, स्थानकवासी आदि फिरकों का विसर्जन कर सभी एक मात्र 'जैन' बने रहें ? अरे, इस प्रकार यदि सही जैनत्व केवल अवशिष्ट रहता हो तो, वही बड़ी सुन्दर बात होगी; लेकिन उसका संभव है क्या ? जो असंभवित हों, ऐसी बातों को प्रोत्साहन देने पर, उससे अनेक संघर्ष पैदा हो जायेंगे, ऐसा आप महसूस नहीं करते ?

एकता की ऐसी बातों से ही भयंकर संघर्ष पैदा होने की पूरी संभावना है।

इस प्रकार वैदिक धर्मों के अनेक उपभेदों की एकता करने पर अनेक मुसीबतें पैदा हो उठेगी।

इसकी अपेक्षा मैं आपको एक उपाय बताऊँ। भले ही सभी अपनी अपनी धर्मपरंपरा के अनुयायी बने रहे। अरे, उनमें ज्यादा स्थिर बनें। केवल इतना ही करना होगा कि दूसरी परंपरा के अनुयायी के साथ संघर्ष न करे। सहकार दें। संक्षेप में सभी अपनी परंपरा में दृढ बने रहें और दूसरों के साथ सहकार करें।

ऐसी एकता–समन्वय की आजकल अत्यन्त आवश्यकता है। हम सब अन्योन्य व्यर्थ संघर्ष करते हैं; उसका फायदा कोई तीसरा पक्ष ही उठा लेता है। यदि हम सब अपने अपने मार्गों में चुस्त बने रहें और अन्यों के साथ समन्वय–संवादिता से काम लें तो कई कामों में हमें पूरी सफलता प्राप्त हो।

आप की एकता ज्याद संघर्ष पैदा करेगी।

हमारी संवादिता सभी के लिये कल्याणकारी सिद्ध होगी।

www.yugpradhan.com

अरे एकता के समर्थक ! अपनी अपनी विशेषताओं को खत्म कर, सभी सामान्य तत्त्वों का अस्तित्व बना कर उसकी नींव पर एकता को स्थिर बनाये रखने की जो बातें आप करते हैं; वे तो आर्यधर्म और आर्यप्रजा के विनाश के लिये स्वयं ही निमंत्रणरूप बन जायेंगी।

## अरे, लोकशासन–कल्याणवादो !

आप यह अच्छी तरह जानते हैं कि, अंग्रेजों द्वारा दिया लोकशासन, राजशाही को खत्म करने के लिये नहीं; बल्कि वास्तव में संतशाही को खत्म करने के लिये ही था। वे उस बात को अच्छी तरह जानते थे कि, इस देश की प्रजा को हमेशा के लिये मौत के घाट उतारनी हो तो, उसकी रग–रग में व्याप्त धर्म संस्कृति को नामशेष कर देनी चाहिए। धर्मसंस्कृति की मूलाधार संतशाही थी।

लोकशासन द्वारा राजाशाही को नष्ट कर देने का दिखावा किया और संतशाही–राजशाही दोनों को तहस–नहस कर दीं।

अब लोकशासन आ पाया है।

जिस लोकशासन में आत्मा, कर्म, पुण्य, पाप परलोक, मोक्ष आदि तत्त्वों का स्थान नहीं, वैसा लोकशासन, कभी भले मनुष्यों का लोकशासन हो नहीं पाता। पुण्य–पाप का विचार ही न करनेवाला मानव अच्छा–भला कैसे हो पायें? अतएव यह लोकशासन बदमासों और गुण्डों का ही है। इसीलिये तो मंत्रीपद पर बैठे कई लोग रिश्वतखोर और दाणचोर तक बने रहे हैं।

ऐसे आदमी शासन चलाकर प्रजा को सुख–शान्ति देंगे या जितना बटोर कर अपना बना लिया उसी कार्रवाई में व्यस्त बने रहेंगे?

मेरी दृष्टि में तो, लोकशासन का प्रयोग भारतीय प्रजा के लिये निष्फल सिद्ध हुआ है। पहले जो रियासतों में लोकशासन था, उसमें संतशाही और राजाशाही दोनों का उचित समन्वय किया गया था। वर्तमान लोकशासन तो, संतशाही को वंदन करने में कौमवाद के भूत के दर्शन करने लगता है।

भले ही राजाशाही को वर्तमान शीघ्र वापस स्थापित न करनी हो, फिर भी, आपको इस लोकशासन को सुलोकशासन में परिवर्तित करना ही होगा। उसके लिये प्रजा में धर्म का वायुमण्डल तैयार करना ही होगा। और वैसा करने के लिये, शिक्षा और प्रचार के साधनों को, न्याय, नीति, त्याग, तप, तितिक्षा, विरति आदि के सिद्धान्तों और दृष्टान्तों से खचाखच भर देने होंगे। उसके साथ ही मत्स्योद्योग, कत्लखानों आदि की कातिल हिंसा; चलचित्र, टी. वी., होटल, निरोध, नसबंदी आदि के जरिये प्रचारित–प्रसारित खतरनाक दुराचारिता को हमेशा के लिये बिदा देनी होगी।

सिवा उसके, लाख प्रयत्न करने पर भी लोकशासन द्वारा प्रजा का कल्याण संभवित नहीं है।

www.yogadhyan.com

## अरे, धर्मीजन !

धर्मक्रियाओं को भारी महत्व देकर, क्रियाकाण्डी जीवन यापन करते धर्मीजनों से मुझे दो बातें बतानी हैं कि—'आप लोग धर्म का अंतिम लक्ष्य क्या है और धर्म का आरंभ कहाँ से करें ? इन दो बातों को ठीक से समझ लें। गन्तव्य स्थान और प्रस्थानबिन्दु इन दोनों को अच्छी तरह समझ न लें तो आदि और अंतरहित धर्म केवल दोलायमान ही बना रहे।

आज भी उस बात का स्थूल खयाल भी कई लोगों को होगा या नहीं कि, धर्म का अंतिम लक्ष्य मोक्ष है। सिवा मोक्ष के, अन्य किसी लक्ष्य को लेकर धर्माचरण करना उचित नहीं।

www.yugpradhan.com

लेकिन उसका आरंभ – प्रस्थान बिन्दु क्या है ? धर्म का आरंभ कहाँ से करें–मानें ? उसका पता इनेगिने धर्मीजनों को ही होगा।

स्वपापनिंदा और अन्यों के सुकृत कार्यों की प्रशंसा ( अनुमोदना ) धर्म के मूल हैं। पापों का त्याग करने पर भी, उनके प्रति यदि घृणा न हो तो, तिरस्कार रहित वह पापपरिहार ज्यादा महत्त्व का नहीं बनता। उसी प्रकार स्वयं सत्कार्य करने पर भी यदि अन्यों के सत्कार्यों का अनुमोदन न कर सके तो ऐसे अहंकारी और ईर्ष्यालु मनुष्यों के अपने सत्कार्यों का मूल्य ज्यादा महत्त्व नहीं धरता।

त्याग की अपेक्षा तिरस्कार का महत्त्व ज्यादा है। सुकृतसेवन की अपेक्षा अनुमोदन का महत्त्व अधिक है।

यही स्वपापनिंदा और परसुकृतों की अनुमोदना धर्म की नींव है।

लेकिन इस आधार का भी एक और मूलाधार है। यदि उसका अस्तित्व न हो तो, यह आधार भी शायद किसी भी समय टूट गिरे।

परमात्मा की शरणागति अनन्य और निष्काम शरणागति ही वही मूलाधार है। ऐसी शरणागतिपूर्वक की उपरोक्त निंदा–अनुमोदना की जोड़ ही, किसी धर्म का प्रस्थान बिन्दु है। सिवा इनके धर्म केवल कोरी कल्पना के विषय ही बन जायेंगे।

## अरे, एशियन राष्ट्रों के धुरंधरों !

आपके तथाकथित प्रगति, विकास और प्रकाश की लगातार जारी कूच में जरा भी बहकने न पायें।

एशिया का कोई भी राष्ट्र चीन, वियतनाम, या हिन्दुस्थान, जब तक रूस, अमेरीका आदि राष्ट्रों के क्रूर और घातक वृत्तिवाले लोगों की मिली-जुली टोली की तोप का मुँह–निशाना आपकी ओर तय नहीं किया तब तक ही आप आपके तथाकथित झूठे भ्रामक विकास, प्रगति और प्रकाश के दर्शन कर पायेंगे। इस टोली ने वियतनाम पर हर प्रकार के घातक शस्त्रों का उपयोग कर, वहाँ की प्रजा का खात्मा बुला दिया है। बेशक, भारत की प्रजा को उस ढंग से शायद खत्म की न जा सके; क्योंकि भारत की भूमि पर निर्मित किये गये चंडीगढों, गांधीनगरों, औद्योगिक नगरों को वे हाथ से जाने देना नहीं चाहते। उसे यह भूमि चाहिए, भारतीय प्रजा की जरूरत नहीं है।

इसीलिये उस प्रजा के विनाश के लिये उसने संस्कृतिनाश की भारी कार्यवाही शुरू कर दी है।

१५० बार सारी दुनिया का विनाश कर दिया जाय, उतने लडाकू शस्त्रों की भरमार उन लोगों ने कर रखी है। अब तो आगे बढ़कर प्राकृतिक वर्षा के बादलों के कणों को बिखरा कर, एशियन देशों में दुष्काल पैदा करने की और एसिड द्वारा कृत्रिम वर्षा के बादलों का सर्जन कर, एशियन देशों पर

उन्हें प्रवाहित कर अतिवृष्टि द्वारा भयंकर विनाश फैला देने की कला भी हस्तगत कर रखी है ।

( अधिक जानकारी के लिये देखें :— 'मुक्तिदूत' अंक नं० ४५ में )

अतिवृष्टि की जिस बरसात में विद्युत्प्रवाह न हो, मेघ गर्जना ही न होती हो, उसे 'कुदरत।' मानने से पहले किसी भ्रम में न रहे ।

अब भोलेपन का त्याग ही करें । अन्यथा एक सौ अरविन्दभाई और पाँच सौ महावीर कल्याण केन्द्र भी, प्रतिवर्ष की कृत्रिम मुसीबतों का मुकाबिला शायद ही कर पाये ।

एशिया, चीन, पाकिस्तान, मुस्लिम राष्ट्र और अन्त में शायद हिन्दुस्थान महाभय के तांडव में फँस जाय तो कोइ आश्चर्य न होगा । अफसोस हो रहा है कि, विज्ञान किस हद तक विकराल, खतरनाक और विध्वंसक बन पाया है ।

www.yugpradhan.com

भारतीय प्रजाकी नयी पीढ़ी में, रोकेट गतिसे व्याप्त विकृति के झंझावात में से उबारने के लिये कटिबद्ध, अंग्रेजी–गुजराती माध्यम द्वारा, १० वीं कक्षा तक व्यावहारिक शिक्षा देने के साथ, आर्यावर्त के धर्म और संस्कृति का पूरा परिचय देनेवाला सैंकडों युवा–कार्यकरों द्वारा संचालित, वर्धमान संस्कृतिधाम का गौरवान्वित भव्यतम सर्जन,

# " तपोवन "

स्थल : नवसारी ( दक्षिण गुजरात )

प्रारंभ : जुलै, १९८३

क्या आप इस सुयोजना में, किसी भी प्रकार का सहयोग देना चाहते हैं ?

www.yogpradhan.com

तो

आज ही उसकी सविस्तर जानकारी और परिचय प्राप्त करने के लिए संपर्क करें–

" वर्धमान संस्कृतिधाम "

'प्रभावतीबहन छगनभाई सरकार संस्कृतिभवन'

६, धनमेन्शन, ए०जी० स्ट्रीट,

ओपेरा हाउस, बम्बई–४००००४

टे० नं० ३६१७२०

अथवा

" वर्धमान संस्कृतिधाम "

चैतन्य निवास

वैद्य मुहल्ले के सामने

सयाजी रोड, नवसारी

टे० नं० ३९५९

इस पुस्तक पढ़ने के बाद आपको
जो विचार और संवेदन
उठे हों उसे लिखनेका
आपको हार्दिक
निमंत्रण
है

एक हाथ से दूसरे हाथ तक ये पुस्तक को पहुँचाते रहिए। यह कहीं पड़ा न रहे उसका ध्यान रखें। कबाट में उसे कैद मत करना.... तो अनेकों के जीवन के रूप और रंग यह पुस्तक पलट देगा और हमें तो सिर्फ निमित्त बनकर विपुल पुण्यबन्धकी लहाण मिलती रहेगी।

पता
**कमल प्रकाशन ट्रस्ट**
जीवतलाल प्रतापशी
संस्कृति भवन
२७७७, निशापोल, झवेरीवाड,
रिलीफ रोड, अहमदाबाद–१.
फोन : ३३५७२३ C/o. ३८० १४३

www.yogiraman.com

કમલ પ્રકાશન ટ્રસ્ટ

मूल्य : रु. ४-००